'जायसवाल जागृति'

संरक्षक

स्व. श्री हरिश्चन्द्र जायसवाल, दिल्ली
श्री जवाहर लाल जायसवाल, पूर्व सांसद
श्री अजय कुमार जायसवाल, नयी दिल्ली
श्रीमति कविता जायसवाल, नोएडा
श्री पी. जायसवाल, नई दिल्ली
श्री रामप्यारे गुप्त, नई दिल्ली
श्री दयाशंकर जायसवाल, नई दिल्ली
श्री लोटन प्रसाद जायसवाल, नई दिल्ली
श्री हरिश्चन्द जायसवाल, बाली नगर, दिल्ली
श्री ओम प्रकाश आर्य, नई दिल्ली
स्व. श्री एस.पी गुप्त, नई दिल्ली
श्री त्रियुगी नारायण गुप्त, नोएडा
श्री जगराम जायसवाल, दिल्ली
स्व. श्री रामेश्वर दयाल कर्णवाल, नजीबाबाद
श्री भोला प्रसाद जायसवाल, नई दिल्ली
श्री पन्नालाल जायसवाल, अहमदाबाद
श्री सुधीर कुमार 'मनहर' जायसवाल, दिल्ली
श्री जयनारायण चौकसे, श्यामला हिल्स, भोपाल
स्व. श्री बी.डी. दखने, उद्योगपति, नागपुर
श्री आनन्द कुमार भमोरे, अमरावती (महाराष्ट्र)
श्री सत्यनारायण जायसवाल (सरपंच), नवाबगंज
श्री छोटेलाल गुप्त जायसवाल, दिल्ली
श्री शंकरलाल जायसवाल, दिल्ली
डा. सत्यप्रकाश जायसवाल, दिल्ली
श्री विजय वालिया, (फरीदाबाद)
स्व. श्री कुंदनलाल जायसवाल, गोरखपुर
श्री ललित जायसवाल, गाजियाबाद
श्री प्रकाश चौधरी, बड़ी सादड़ी, (चित्तोड़गढ़)
श्री राधेश्याम जायसवाल, गाजियाबाद
स्व. श्री गोवर्धनलाल जायसवाल, शामगढ़ (म.प्र.)
श्री रमेश जायसवाल, दिल्ली
श्री मेघराज प्रसाद, दिल्ली
श्री माखन चौधरी, (नोएडा)
श्री सुरेन्द्र कुमार किशनलाल जायसवाल (नांदेड़)
श्री संजीव कुमार चौधरी, दिल्ली
श्री स्वामीनाथ जायसवाल (छत्तीसगढ़)
श्री राजीव कुमार जायसवाल (कटिहार, बिहार)
स्व. श्री बद्रीप्रसाद जायसवाल, (गोरखपुर)
श्री अनिल कुमार जायसवाल (गुड़गांव)
श्री प्रदीप कुमार जायसवाल (द्वारिका, दिल्ली)
श्री मुकेश रंजन जायसवाल (साहिबाबाद)
श्री किशोर जायसवाल (दिल्ली)
डॉ. अरुण कुमार गुप्ता (बंगलौर)
डॉ. श्रीमती आभा गुप्ता एवं श्री नितिन जी एन.आर.आई. (अमेरिका)
डॉ. अशोक चौधरी, संचालक, जनकल्याण एवं अध्यक्ष, इनटक
श्री विश्वमोहन प्रसाद (महाप्रबन्धक, एन.टी.पी.सी. नोएडा)

(शेष पृष्ठ 4 पर)

मूल्य 5 रु० प्रति

'जायसवाल जागृति'

(अखिल भारतीय संस्था के रूप में पंजीकृत सामाजिक संस्था 'जायसवाल जागृति', का सर्वाधिक लोकप्रिय त्रैमासिक मुख-पत्र)

वर्ष:29 बैशाख-श्रावण विक्रमी सम्वत् 2080 अप्रैल-जून 2023 अंक: 2

अनुक्रमणिका

1. प्रधान सम्पादक की लेखनी से "लव जिहाद" समाज के लिए अभिशाप —नर्बदेश्वर प्रसाद जायसवाल 4-6
2. एक संकल्प—श्रद्धेय स्वर्गीर्य पन्नालाल जी के सम्मान में —सम्पादक मण्डल 6
3. जायसवाल जागृति कोर कमेटी की बैठक —बृज मोहन जायसवाल 7
4. जायसवाल जागृति पत्रिका का विमोचन —नर्बदेश्वर प्रसाद जायसवाल 8
5. अखिल भारतीय जायसवाल (सर्व.) महासभा की बैठक —आदित्य वर्धनम 9-10
6. क्षत्रिय महासभा का 114वां स्थापना दिवस बड़े धूमधाम से मनाया —डॉ. पुखराज चौहान 10
7. भारतीय नववर्ष की हार्दिक शुभकामनायें! —सम्पादक मण्डल 11
8. कबीर होने का मतलब —डॉ. अरूण मोहन भारवि 12-13
9. समाज के शिक्षा का स्तर सुधारने एवं एकजुटता पर होगा मंथनः मनोज जयसवाल —सुरेश गांधी 13-14
10. युवाओं को सफल जीवन की ओर प्रेरित करने के लिए सलाहः अपने लक्ष्यों की प्राप्ति में बढ़-चढ़कर —अजय जायसवाल 14-15
11. 'जय राजराजेश्वर सहास्त्रार्जुन भगवान' —विजय कुमार कलवार 15
12. राजराजेश्वर श्री सहस्त्रबाहु कार्तवीर्यार्जुन का परिचय 16-19
13. शबरी को आश्रम सौंपकर महर्षि मतंग जब देवलोक जाने लगे —जय सनातन 19-21
14. घर में ही एक्सरसाइज़ करके पेट कर सकते हैं कम —डॉ आशीष कुमार जायसवाल 21-23
15. 'हमारे आसपास के औषधीय पौधेःअजूबा' (स्वास्थ्य श्रृंखला) —अनिल कुमार जायसवाल 24-25
16. मातृ शक्ति की कलम से वैश्वीकरण व्यापार का नाम है-मर्दर्स डे —पुष्पलता जायसवाल 25-26
17. श्री मधुबगरप्पा जी शिक्षामंत्री कर्नाटक —मीनू गुप्ता जायसवाल 26
18. विकास राय ने किया उपभोक्ता आयोग में पदभार ग्रहण —मीनू गुप्ता जायसवाल 26
19. जायसवाल जागृति के नये कार्यकारी सम्पादक बने श्री अनिल कुमार जायसवाल —नर्बदेश्वर प्रसाद जायसवाल 27
20. मेरी मां की 90वीं वर्षगांठ पर मैंने उनके लिए कुछ पंक्तियां लिखी है।—अन्जान 28
21. **Sh. P.L. Jaiswal (1924-2023): Colossal Personality And A Real Marg Darshak** —नीति भारद्वाज 29-30
22. माननीय पन्ना लाल जी के प्रति —प्रभु नारायण 30
23. हास्य रस को लोकप्रिय बनाने में मोहनलाल गुप्त उर्फ भैयाजी बनारसी 31-35
24. दक्षिण भारत में हिंदी की लोकप्रियता —डॉ. राजलक्ष्मी कृष्णन 35-37
25. ये राष्ट्र प्रेम से ओतप्रोत हमारे फिल्मी गीत —अहद प्रकाश 37-39
26. अपनी हिन्दी —डॉ. बद्रीप्रसांद पंचोली 39-40
27. कुर्यात सदामंगलम (वैवाहिकी) 42-49
28. जायसवाल जागृतिः महत्वपूर्ण सूचनाएं 50

सम्पादक-मंडल

मार्गदर्शन व आशीर्वादः स्वर्गीय श्री पन्नालाल जायसवाल जी
प्रधान सम्पादकः नर्बदेश्वर प्रसाद जायसवाल
कार्यकारी संपादकः मीनू गुप्ता जायसवाल एवं अनिल कुमार जायसवाल
सम्पादक मण्डलः के.के. भगत, वैवाहिकी प्रभारी,
पत्रिका प्रेषण विज्ञापन व समन्वय प्रभारी : बृजमोहन जायसवाल
साहित्य प्रभारी : राधेश्याम बन्धु
समन्वय सहप्रभारी : जुगल किशोर गुप्ता

पंजीकृत कार्यालय

19-C, MIG, DDA FLATS, GULABI BAGH
NEW DELHI-110007 दूरभाष 011-41687467
(M 9818426123)

पत्रिका में प्रकाशित किसी लेख/रचना का उत्तरदायित्व स्वयं लेखक/रचनाकार का है, सम्पादक-मंडल अथवा प्रकाशक का नहीं।

श्री मदन भाई जायसवाल (अहमदाबाद)
श्री संजय जायसवाल (अहमदाबाद)
श्री कमल नारायण - सरलादेवी जायसवाल (इंदौर)
डॉ. ए.के. जायसवाल (एम्स दिल्ली)
श्री दीपक जायसवाल (नागपुर-महाराष्ट्र)
श्री हुकुमचंद गिरधारीलाल जायसवाल (इंदौर)
श्री ब्रजेश कुमार (एडवोकेट, दिल्ली)
श्री अनिल कुमार जायसवाल (वरिष्ठ एडवोकेट, पटना)
श्री राजीव रंजन राजेश (एडवोकेट, दिल्ली)
श्रीमती सरला गुप्ता अ.भा.जा. सर्व. महिला अध्यक्ष
श्री राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता (अध्यक्ष, नेपाल कलवार कल्याण महासंघ)
श्री सुरेश प्रसाद चौधरी (गाजियाबाद)
श्रीमती सुनीता अखिलेश सुवालका (उदयपुर)
श्री नवीन प्रकाश जायसवाल (अलवर)
श्री सुनील कुमार जायसवाल (सांवेर रोड, इन्दौर)
श्री राकेश रमन जायसवाल (फरीदाबाद)
श्री विजय कुमार जायसवाल (इलाहाबाद)
डा. एन. शिवासुबहनण्यन (तमिलनाडु)
श्रीमती रीता जायसवाल (वाराणसी)
न्यायाधीश डॉ. संतोष कुमार जायसवाल (मुंबई)
डॉ. अनिल कुमार जायसवाल (फरीदाबाद)
श्री विजयपाल सिंह अहलूवालिया (सफीदों-हरियाणा)
श्री राजकुमार गुप्त (लखनऊ)
श्री मोहन सिंह अहलूवालिया (ग्वाला गद्दी, खेड़ी, रायपुररानी, पंचकुला)
श्री रमेश कुमार अहलूवालिया (रिवजराबाद, यमुनानगर, हरियाणा)
श्री अमृत गुप्ता पुत्र श्रीमती मंजू गुप्ता (दिल्ली)
श्री सत्य देव गुप्त,(जायसवाल) पटना
श्री के.डी. चौधरी (दिल्ली)
श्री नन्द लाल गुप्ता (दिल्ली)
श्री शंकर चौधरी, दिल्ली
स्व. श्री पन्नालाल जायसवाल, दिल्ली
स्व. श्री राजाराम जायसवाल, दिल्ली
श्री शिवकशोर जायसवाल, दिल्ली
श्री मनोज कुमार शाह, फरीदाबाद
श्री अशोक जायसवाल, कौशांबी
श्री कृष्ण कुमार भगत, वैशाली

अधिष्ठाता

स्व श्री मोतीलाल जायसवाल, नई दिल्ली
श्री विक्रमजीत सिंह, अहलूवालिया, नई दिल्ली
सरदार अजीत सिंह, अहलूवालिया
स्व श्री रमाकांत जायसवाल, मुम्बई
स्व श्री हंसराज जायसवाल, दिल्ली
श्री गुलाब सिंह एवं श्री अरुण कुमार जायसवाल, दिल्ली
श्री शिवनाथ गुप्ता, दिल्ली
श्री दीपनारायण जायसवाल, लखनऊ
स्व. श्री जवाहर लाल जायसवाल, नई दिल्ली
(स्वामी हरिहरानंद) श्री हरिश्चंद्र धनेटवाल

संपादकीय

"लव जिहाद" समाज के लिए अभिशाप

आज के समाज के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण चर्चा का विषय बन गया है। सर्वप्रथम हम यह समझ लें कि "लव जिहाद" का वास्तविक अर्थ क्या है, साधारण बोलचाल की भाषा में "लव" यानि "प्रेम" तथा "जिहाद" अरबी शब्द है जो मुस्लिम देशों में काफी प्रचलन में है। "जिहाद" मूलरूप से युद्ध के मैदान में भरपूर प्रयास/प्रयत्न करने "संघर्ष" करने के लिए उपयोग किया जाता है। यदि इस्लामिक धर्म के प्रसंग में "जिहाद" का उल्लेख किया जाना हो तो इसे गैर मुस्लिम के विरोध में "भरपूर संघर्ष" के उद्देश्य से किया जाता है। यह तो रहा शाब्दिक अर्थ। अब मैं विशेषरूप से वर्तमान सामाजिक परिस्थिति में इस ज्वलन्त विषय पर विवेचना करना चाहता हूं तथा आप सभी सुधी पाठकों एवं सामाजिक चिन्तकों, विचारकों व शुभ चिन्तकों का एक विशेष घृणित घटना पर ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूं।

श्रद्धा वालकर एक सीधी-सादी मध्यम आय वर्ग परिवार की पढ़ी लिखी लड़की मुम्बई की मलाड में स्थित कॉल सेन्टर में नौकरी करने के दौरान वर्ष 2018 में आफताब अमीन पुनावाला से मिलती है तथा उनके बीच आपस में आकर्षण हो जाता है। आफताब जो एक फूड ब्लॉग लिखनेवाला व्यक्ति अपने आप को बहुत बड़ा शेफ के रूप में फेसबूक पर फूड ब्लॉग लिखता है तथा अपने घिनौने उद्देश्य को छिपा कर श्रद्धा को कॉल सेन्टर में अपने जाल में फंसा लेता है। आफताब "डेटिंग एप" के माध्यम से श्रद्धा के करीब आता है तथा कुछ ही महीनों में वर्ष 2019 में लीव इन रिलेशन तक अपने सम्बन्धों को पहुंचा देता है। आफताब एक अच्छे व्यक्ति होने का विश्वास दिलाता है तथा श्रद्धा को उसके माँ-बाप से अलग कराने में सफल हो जाता है। श्रद्धा अपने माँ-बाप को अपने 25 वर्ष के होने तथा जीवन का सभी निर्णय लेने का अधिकार

होना जता कर, घर छोड़कर आफताब के साथ रहने लगती है। श्रद्धा की मां तथा पिता दोनों इस घटना से दुखी थे श्रद्धा की मां सुमन वालकर इस घटना से आहत होकर बीमार हो जाती है तथा वर्ष 2021 में स्वर्गवास हो जाता है। श्रद्धा के पिता श्री विकास मदन वालकर को आफताब बिल्कुल पसंद नहीं था वह कभी नहीं चाहते थे कि श्रद्धा उसके साथ किसी प्रकार का सम्बन्ध रखे। श्रद्धा के पिता लगातार श्रद्धा को समझाने का प्रयास करते है किन्तु असफल होते है। इसी बीच आफताब ने दिल्ली में नौकरी ढुंढ़ ली तथा श्रद्धा को लेकर पहले हिमाचल घुमने गया फिर 8 मई 2022 को दिल्ली के पहाड़गंज इलाके के किसी होटल में 2-3 दिन रहकर छतरपुर, महरौली में दो कमरे का फ्लैट किराए पर लेकर श्रद्धा के साथ रहने लगा।

श्रद्धा लगातार शादी करने का दबाव आफताब पर बनाने लगी तब आफताब से झगड़ा होना स्वाभाविक ही था। आफताब ने 18 मई 2022 की रात में श्रद्धा के शरीर पर चढ़कर क्रुरता के साथ श्रद्धा का गला दबाने लगा, श्रद्धा चिख मार कर रोती रही, चिल्लाती रही किन्तु जल्लाद आफताब ने श्रद्धा का गला दबा कर जघन्य हत्या कर दी। श्रद्धा के क्रूर हत्या के पश्चात् श्रद्धा को आरी से 35 टुकड़े कर उसे एक नया फ्रिज खरीद कर उसके अन्दर रखा तथा उसके चेहरे को लगातार फ्रिज में रखकर देखता रहा। यही नहीं किसी अन्य लड़की को भी डेटिंग एप के माध्यम से सम्पर्क कर उसी फ्लैट में बुलाकर रंग रलियां करने का घिनौना पाप भी किया।

श्रद्धा के फोन बन्द होने पर तथा श्रद्धा के सहकर्मियों से श्रद्धा के पिता विकास द्वारा श्रद्धा के सहकर्मियों से पूछताछ में कुछ शक होने के कारण मुम्बई पुलिस में शिकायत की तथा पुलिस की जांच में 15-16 नवम्बर 2022 को आफताब पर श्रद्धा के हत्या का शक विश्वास में बदल गया। आखिरकार आफताब को पुलिस ने गिरफ्तार कर जब रिमाण्ड पर लिया तो आफताब ने श्रद्धा के शरीर के 35 टुकड़ों को छतरपुर के जंगल में रात के दो बजे काली पोलिथिनों में लाश के टुकड़ों को फेकने हेतु कई रातों जाने के गुनाह को कबुल किया। यही नहीं आफताब ने पुलिस से स्पष्ट शब्दों में श्रद्धा की घिनौनी हत्या करने की बात स्वीकार किया साथ ही यह भी कहा कि इस जघन्य हत्या का कोई उसे तनिक भी अफसोस नहीं है। इस घृणित हत्या का मैंने संक्षेप में उल्लेख करने का प्रयास किया है।

अभी हाल ही में 'केरला स्टोरी' पिक्चर कई मॉल तथा सिनेमाघरों में प्रदर्शित की गयी, कई राज्य सरकारों ने जनहित में इस फिल्म पर लगने वाले टैक्स/कर को माफ कर दिया ताकि अधिक से अधिक लोग देख सके। इस फिल्म को बनाने वाले निर्देशक, प्रोड्युसर तथा अभिनेत्री को जान से मारने की धमकियां दी गयी। जब कि सच यह है कि यह फिल्म वास्तविक घटना से प्रेरित होकर बनाई गयी है। फिल्म देखकर मन व्यथित व दुखी होता है। धर्म का गलत व्याख्या करना तथा हिंसा, व्यभिचार, छलावा व किसी लड़की का उत्पीड़न सामाजिक मर्यादा के विरुद्ध है, सामाजिक चेतना को झकझोरने वाला है। मैंने 'इस्लाम' धर्म के 'कुरान' या 'हबीस' की आयतें नहीं पढ़ी है किन्तु इतना मेरा विश्वास है कि कोई भी धर्म मानवता अथवा महिलाओं के अस्मिता के विरुद्ध नहीं हो सकता। इस फिल्म में तीन लड़कियों को उनके धर्म की रिति-रिवाजों का मजाक उड़ाते हुए इस्लाम को सबसे अच्छा धर्म बताने व इस्लाम मजहब को स्वीकार कराने का कुत्सित प्रयास किया गया है।

'लव जिहाद' तथा 'केरला स्टोरी' की चर्चा करना आज के सामाजिक परिवेश में बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। 'प्रेम' करना तथा किसी के प्रति आकर्षित होना जवान युवाओं-युवतियों के लिए स्वाभाविक है। पहले भी काफी संख्या में प्रेम विवाह अथवा प्रेम के बाद 'विवाह' होते रहे हैं किन्तु इनकी संख्या नगण्य थी। अन्तर जातिय व अन्तर धार्मिक विवाह भी हुए है किन्तु उनके पीछे छल, कपट व पूर्वाग्रह नहीं होता था, वह धर्म से प्रेरित नहीं होता था, प्रेम के पीछे गंदी व घृणित साजिश नहीं होती थी। किसी लड़की को धोखे से हवस का, वासना का शिकार बनाना फिर लड़की का प्रेगनेन्ट होना फिर धर्म परिवर्तन के लिए मजबूर करना, फिर इस्लाम धर्म कबूल कराना और आखिर में तलाक दे देना या वेश्यावृति के लिए सिरिया भेज देना। यह बहुत ही घृणित व महापाप है।

यह सब कितना घिनौना एवं दुखद है, आदर्श मूल्यों के विपरित है, कभी इस पर सुधी पाठकंगण विचार करने का कष्ट करें। जिन परिवारों की लड़कियां इस तरह के लड़कों के जाल में फंस गयी है, उनका जीवन तो बर्बाद व नर्क होता ही है, साथ ही उनके मां-बाप पर दुखों का पहाड़ गिर जाता है, जीते जी मां-बाप लाश बन जाते हैं, समाज में वह कहीं अपनी व्यथा की चर्चा भी नहीं कर सकते। यह स्थिति बहुत ही भयावह है व चिन्तनीय है।

एक बुद्धजीवी व समाज के प्रति नैतिक दायित्व के आलोक में आप सभी सम्मानित पाठको, एवं राजनीति व समाज को नेतृत्व प्रदान कर रहे सभी महानुभावों से मेरी व्यक्तिगत प्रार्थना है कि 'लव जिहाद' की बढ़ती घटनाओं के प्रति संवेदनशील होना वर्तमान समय की मांग है। यह एक अति संवेदनशील विषय है, यदि हम जागरूक होकर इस घृणित 'लव जिहाद' का विरोध नहीं करेंगे तथा 'केरला स्टोरी' को नजरअंदाज करेंगे तो आने वाला कल दर्दनाक व भयावह होगा, इतिहास में हम लोग बुझदिल व कायर के रूप से जाने जायेंगे।

हमें राजनीति से उपर उठकर सोचने व समझने की आवश्यकता है हमें सनातनी होने पर गर्व व अभिमान होना चाहिए। सनातन धर्म विश्व का सबसे पूरातन धर्म है; इस धर्म की जड़ें बहुत ही मजबूत है। हजारों वर्षों की परम्पराएं आज भी विद्यमान है, विदेशी धरती पर भारतीय जीवन पद्धति, हिन्दुत्व व सनातन धर्म के प्रति आस्था दिनों-दिन बढ़ती ही जा रही है। किसी प्रलोभन या लालच में किसी अन्य धर्म के प्रति आकर्षित होने की ना तो आवश्यकता है ना ही उचित है। कृप्या अपनी परम्परा व धार्मिक विचारों से आज के युवको एवं युवतियों को परिचित कराएं।

विशेष आभार

परम श्रद्धेय स्वर्गीय श्री पन्ना लाल जायसवाल जी के विषय में पीछले अक्टुबर-मार्च 2022-2023 में प्रकाशित, विशेषांक में प्राप्त शोक संदेश के सम्बन्ध में सम्पादक मण्डल सभी जायसवाल जागृति संस्था के सम्मानित पदाधिकारियों, सरंक्षक, अधिष्ठाता तथा शुभचिन्तकों, उद्योगपतियों, शिक्षाविदों, कवि, लेखकों, देश के विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के पदाधिकारियों व प्रतिनिधिओं का विशेष आभार व्यक्त करती है। इस अवसर पर मालवीय मिशन संस्था के श्री गुंजन अग्रवाल तथा श्री उदयबीर जी द्वारा श्रद्धेय श्री पन्ना लाल जी के विषय में "अभिनन्दन ग्रंथ" की प्रति तथा अवस्मरणीय महत्त्वपूर्ण (फोटोज) चित्र उपलब्ध कराने के लिए विशेष आभार व्यक्त करता हूं। परम श्रद्धेय श्री पन्ना लाल जी के बड़े सुपुत्र श्री हेमन्त जायसवाल तथा कनिष्ठ पुत्र श्री संजीव जायसवाल एवं श्री दुर्गा प्रसाद, ड्राइवर द्वारा पारिवारिक सूचना व छायाचित्र उपलब्ध कराने के लिए आभार प्रस्तुत करता हूँ। आप सभी के सहयोग के बगैर इस विशेषांक का प्रकाशित करना सम्भव नहीं हो पाता। आप सभी का भविष्य में भी इसी प्रकार सहयोग प्राप्त होता रहेगा, ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है।

नर्बदेश्वर प्रसाद जायसवाल

एक संकल्प– श्रद्धेय स्वर्गीय पन्नालाल जी के सम्मान में

मैनें पीछले अंक अक्टुबर 2022 से मार्च 2023 में स्वर्गीय श्रद्धेय पन्नालाल जायसवाल जी को शताब्दी समारोह आयोजित किए जाने के सम्बन्ध में अनुरोध किया था, पूनः आप से विनम्र निवेदन है कि श्रद्धेय श्री पन्नालाल जी की लगन, तपस्या, कर्तव्यनिष्ठा तथा जायसवाल समाज के उन्नयन के प्रति समर्पण व मालवीय मिशन की स्थापना व कार्यक्रमों के प्रति त्याग व निरन्तर प्रयास के दृष्टिगत मरणोपरान्त भारत सरकार से पद्म पुरस्कार कम से कम 'पद्म श्री' दिए जाने का सामुहिक प्रयास किया जाना सबसे बड़ी उनके प्रति श्रद्धाजली होगी। हम लोग श्रद्धेय पन्नालाल जी के अगले वर्ष को शताब्दी वर्ष के रूप में मनाने तथा उक्त अवसर पर उनके नाम पर डाक टिकट संचार मंत्रालय भारत सरकार से जारी कराने का भी संकल्प लिया जाना श्रेयस्कर होगा।

इस संकल्प को पूर्ण करने के लिए भारत वर्ष के सभी जायसवाल समाज के संगठनों सहयोग प्रदान करने के लिए विनम्र अनुरोध है। जायसवाल जागृति सभी संगठनों से इस पूनीत कार्य में सहयोग के लिए आभारी रहेगी। आइये आज से ही इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए प्रयास प्रारम्भ कर दें। **यदि 'पद्म श्री' का सम्मान स्वर्गीय श्री पन्ना लाल जी को भारत सरकार से प्राप्त हो जाता है तो यह पूरे भारतवर्ष में जायसवाल समाज के लिए गर्व का क्षण होगा तथा इस सम्मान को प्राप्त करने वाले प्रथम व्यक्ति होगे।**

सम्पादक मण्डल

बहुत-बहुत हार्दिक बधाई

भगवान शिव को समर्पित श्रावण मास सोमवार व्रत, नागपंचमी, भाई-बहनों के प्रेम-विश्वास का पर्व रक्षा-बंधन, कृष्ण जन्माष्टमी तथा सभी सनातनी त्यौहार की जायसवाल जागृति में सुधी पाठकों, संरक्षक, अधिष्ठाता, विज्ञापनदाता तथा शुभचिन्तकों को बहुत-बहुत हार्दिक बधाई एवं बहुत-बहुत हार्दिक शुभकामनाएं। भगवान शिव व माँ पार्वती की असीम कृपा सभी पर बनी रहें।

जायसवाल जागृति कोर कमेटी की बैठक

माननीय श्री कृष्ण दास चौधरी, जायसवाल जागृति के नीति निर्धारक एवं प्रबध समिति के सम्मानित सदस्य की अध्यक्षता में दिनांक 13. 5. 2023 को उनके निवास स्थान पण्डारा रोड, नई दिल्ली में बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में मुख्यरूप से जायसवाल जागृति संस्था की पत्रिका के निरंतर प्रकाशन, पत्रिका के प्रकाशन के लिए धन की व्यवस्था, समय से पत्रिका का प्रकाशन व वितरण, नये संरक्षक बनानें, पत्रिका के लिए विज्ञापन दाताओं को प्रोत्साहित किए जाने तथा पत्रिका में स्वास्थ्य, धर्म, सामाजिक चेतना, महिला सशक्तिकरण, खेल, शादी के लिए विज्ञापन इत्यादि को समाहित किए जाने का प्रस्ताव माननीय श्री कृष्णं दास चौधरी जी ने दिया। इस प्रस्ताव पर सभी उपस्थिति पदाधि कारियों डॉ. आशोक चौधरी, अध्यक्ष, श्री बृजमोहन जायसवाल, महासचिव, श्री माखन चौधरी, उपाध्यक्ष, वित्त, व्यवस्था व आडिट, श्रीमति मीनू गुप्ता जायसवाल, कार्यकारी सम्पादक, श्री अनिल कुमार जायसवाल, राष्ट्रीय सचिव, विज्ञापन संयोजक, राष्ट्रीय सचिव, संगठन विस्तार, श्री नरेन्द्र जायसवाल व श्री नर्बदेश्वर प्रसाद जायसवाल प्रधान सम्पादक ने अपनी सहमति व्यक्ति किया।

संस्था द्वारा वर्ष में एक बड़े कार्यक्रम आयोजित किए जाने तथा उक्त कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्तर पर नियोजित किए जाने का प्रस्ताव डॉ. अशोक चौधरी, अध्यक्ष द्वारा दिया गया तथा उक्त कार्यक्रम की रूपरेखा पर भी गहन विचार-विर्मश किया गया। श्री मीनू जायसवाल, कार्यकारी सम्पादक ने भी जयपुर में जायसवाल समाज के आयोजित कार्यक्रम का उल्लेख करते हुए राष्ट्रीय स्तर के कार्यक्रम आयोजित करने के लिए सुझाव दिया। इन सभी सुझावों के आलोक में धन की व्यवस्था, कार्यक्रम स्थल का चयन तथा कार्यक्रम की रूपरेखा शीघ्र प्रस्तुत करने के लिए डॉ. अशोक चौधरी, अध्यक्ष को अधिकृत किया गया।

श्रद्धेय स्वर्गीय श्री पन्ना लाल जायसवाल जी के सम्मान में उनके जन्मदिन 5 नवम्बर को एक भव्य कार्यक्रम आयोजित कर शताब्दी वर्ष मानाये जाने का प्रस्ताव नर्बदेश्वर प्रसाद जायसवाल ने दिया जिसका सभी उपस्थित पदाधि कारियों ने सहमति प्रदान करते हुए श्री बृज मोहन जायसवाल, महासचिव को आगामी व्यवस्था करने हेतु रूपरेखा अगली बैठक में प्रस्तुत करने की स्वीकृति प्रदान की।

शादी योग्य लड़के-लड़कियों के अधिक-से-अधिक बायोडाटा प्रकाशन तथा जायसवाल जागृति संस्था द्वारा आर्थिक रूप से पीछड़े समाज के युवक-युवतियों के शुभ विवाह आयोजन तथा गरीब छात्र-छात्राओं की शिक्षा में आर्थिक सहयोग किए जाने विषय पर भी चर्चा की गयी। इस पूनीत कार्य के लिए आर्थिक रूप से सम्पन्न व्यक्तियों से सम्पर्क कर उन्हें प्रोत्साहित किए जाने पर विचार-विमर्श किया गया।

श्री बृजमोहन जायसवाल महासचिव ने पत्रिका के लिए नये बनाए गये सदस्यों की सूचना से बैठक को अवगत कराया साथ ही विज्ञापनदाताओं के विज्ञापन की अवधि इस अंक तक की ही है अत: आगामी अंकों के लिए विज्ञापनदाता बनाये जाने का सभी पदाधिकारियों से अनुरोध किया।

श्री अनिल कुमार, जायसवाल, राष्ट्रीय सचिव (विज्ञापन संयोजक) के सरकार में प्राप्त अनुभव तथा उनकी विलक्षण प्रतिभा के दृष्टिगत जायसवाल जागृति पत्रिका के एडिटिंग व प्रूफ रिडिंग किए जाने का अनुरोध किया गया, जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया।

बैठक समाप्ति पर आदणीय श्री कृष्ण दास चौधरी जी ने स्वादिष्ट अल्पाहार की उत्तम व्यवस्था की थी, जिसका सभी पदाधिकारियों ने लुफ्त उठाया। अल्पाहार की उत्तम व्यवस्था के लिए श्री कृष्ण दास चौधरी जी का सभी पदाधिकारियों ने आभार व्यक्त करते हुए बैठक का समापन किया।

बृजमोहन जायसवाल,
महासचिव, जायसवाल जागृति

जायसवाल जागृति पत्रिका का विमोचन

अखिल भारतीय जायसवाल सर्ववर्गीय महासभा की इकाई दिल्ली NCR प्रदेश जायसवाल सर्ववर्गीय महासभा की बैठक तथा मगंल मिलन व सम्मान समारोह का आयोजन दिनांक १६ अप्रैल २०२३ को हिन्दी भवन दिल्ली में सम्पन्न हुआ। सर्वप्रथम अतिथियों द्वारा भगवान सहस्त्रार्जुन तथा भगवान बलभद्र के तैल चित्र के सामने दीप प्रज्वलित कर माल्यार्पण किया गया। बैठक की अध्यक्षता संस्था के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री किशोर हेमराज ने किया तथा श्री तार किशोर प्रसाद, पूर्व उप मुख्यमंत्री बिहार सरकार मुख्य अतिथि के रूप उपस्थित जनमानस को सम्बोधित किया। संस्था के कई अन्य पदाधिकारियों ने भी जायसवाल समाज के उत्थान, विकास व राजनैतिक चेतना विषय पर विचार व्यक्त किया। "जायसवाल जागृति" संस्था का प्रतिनिधित्व डाक्टर अशोक चौधरी,अध्यक्ष, श्री अशोक कुमार जायसवाल पूर्व अध्यक्ष, श्री छोटे लाल गुप्ता, उपाध्यक्ष, श्री राधेश्याम बन्धु, साहित्य प्रभारी श्री सुधीर कुमार मनहर, श्री कृष्ण कुमार भगत, श्री आदित्य वर्धनम, श्री अनिल कुमार जायसवाल, श्री शंकर चौधरी, श्री मनोज कुमार शाह, श्री अजय कुमार जायसवाल, श्री हरिशंकर जायसवाल, श्रीमती मीनू गुप्ता जायसवाल सभी पदाधिकारी एवं मैं तथा अन्य पदाधिकारी कार्यक्रम में उपस्थित हुए'। दिल्ली प्रदेश जायसवाल सर्ववर्गीय महासभा द्वारा जायसवाल जागृति के कई पदाधिकारियों को स्मृति चिन्ह भेंट कर व फूलों की माला पहनाकर स्वागत व सम्मानित किया गया।

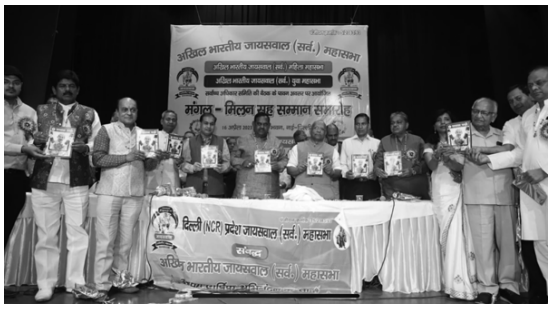

"मुझे भी सभागार में उपस्थित जनमानस को सम्बोधित करने का अवसर श्री अशोक कुमार जायसवाल, पूर्व अध्यक्ष, श्री छोटे लाल गुप्ता उपाध्यक्ष, श्री के.के. भगत तथा श्री आदित्य वर्धनम के प्रयास से मिला जिसमें जायसवाल जागृति संस्था द्वारा दिल्ली में धर्मशाला की भूमि क्रय करने व निर्माण के लिए किए गए अथक प्रयासों, जायसवाल जागृति के संस्थापक सदस्य स्वर्गीय श्रद्धेय श्री पन्ना लाल जायसवाल जी के असामयिक स्वर्गवास का उल्लेख करते हुए उनके त्याग, समर्पण, योगदान तथा जायसवाल समाज के उत्थान एवं मालवीय मिशन की परियोजना के क्रियान्वयन के लिये किये गये उनके नि:स्वार्थ कार्यों के लिए भारत सरकार से "पद्मश्री " पद्म पुरस्कार तथा उनकी जन्म शताब्दी मनाने व शतायु जन्मदिन पर डाक टिकट जारी करने के लिए सभी के सहयोग के लिए अनुरोध किया, इसके लिए सभी ने करतल ध्वनि से समर्थन किया। इसके साथ ही जायसवाल जाति 'को क्रीमी लेयर की प्रतिबद्धता को 'शिथिल करने की माँग भी की।'

'मंच पर सभी सम्मानित पदाधिकारियों से स्वर्गीय श्रद्धेय श्री पन्ना लाल जायसवाल जी के सम्मान में जायसवाल जागृति पत्रिका के प्रकाशित संयुक्तांक का विमोचन करने हेतु मैंने विनम्र अनुरोध श्री अशोक कुमार जायसवाल जी, श्री छोटे लाल गुप्ता, श्री कृष्ण कुमार भगत जी तथा श्री आदित्य वर्धनम जी मंच संचालक से किया जिसे सहर्ष स्वीकार करते हुए इन सभी के प्रयास व सहयोग से मुख्य अतिथि सहित सभी ने हमारी प्रतिष्ठित व समाज की मार्गदर्शक "जायसवाल जागृति पत्रिका" का विमोचन व लोकार्पण किया। पत्रिका के विमोचन के पश्चात् श्रद्धेय स्वर्गीय श्री पन्ना लाल जायसवाल जी तथा श्रद्धेय स्वर्गीय श्री राजा राम जायसवाल जी के प्रति सम्मान व्यक्त करते हुए पुष्पांजली प्रस्तुत किया तथा सभी लोगों ने दो मिनट का मौन रख विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित किया।'

कार्यक्रम का संचालन जायसवाल युवा महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आदित्य वर्धनम ने किया। आयोजकों द्वारा स्वादिष्ट रात्रि भोज की व्यवस्था भी की गयी थी।

'कार्यक्रम की सफलता के लिए श्री अशोक कुमार जायसवाल, श्री छोटे लाल गुप्ता, सुधीर कुमार मनहर, श्री कृष्ण कुमार भगत तथा श्री आदित्य वर्धनम के प्रयास के लिए बहुत-बहुत हार्दिक बधाई।' जायसवाल जागृति के पदाधिकारियों को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित करने व सभागार में उपस्थित विभिन्न क्षेत्रों से आये जायसवाल बंधुओं को सम्बोधित करने के लिए अवसर प्रदान करने के लिए मैं व्यक्तिगत तथा जायसवाल जागृति संस्था की ओर से में बहुत-बहुत हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ साथ ही उपरोक्त विषय में कोई त्रुटि हो गयी हो अथवा किसी का उक्त कार्यक्रम में नाम अंकित करना व कोई तथ्य उल्लेखित किया जाना छुट गया है तो उसके लिए क्षमा याचना व्यक्त करता हूँ।

नर्बदेश्वर प्रसाद जायसवाल,
प्रधान सम्पादक, जायसवाल जागृति

अखिल भारतीय जायसवाल (सर्व.) महासभा की बैठक

नई दिल्ली 16 अप्रैल 2023। "आज लगभग 20 प्रदेशों के सैकड़ों प्रतिनिधियों के बीच अपने को पाकर ऐसा महसूस कर रहा हूं जैसे मेरे सामने लघु भारत खड़ा है ऐसे राष्ट्रीय कार्यक्रम से जायसवाल समाज ने अपना दमखम दिखाते हुए यह सिद्ध कर दिया है कि वह सामाजिक कुरीतियों पर विजय पाते हुए देश की मुख्यधारा के साथ चलने में सक्षम है" यह विचार हैं बिहार के पूर्व उपमुख्यमंत्री श्री तारकिशोर प्रसाद की। जो उन्होंने अखिल भारतीय जायसवाल सर्ववर्गीय महासभा के 39 में साल में प्रवेश के अवसर पर आयोजित महासभा के सर्वोच्च अधिकार समिति की बैठक के अवसर पर मंगल मिलन सह सम्मान समारोह को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित करते हुए व्यक्त किए। कार्यक्रम का आयोजन स्थानीय हिंदी भवन के सभागार में महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री किशोर हेमराज जी की अध्यक्षता में किया गया। जिसका सफल और सरस संचालन जायसवाल युवा महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आदित्य वर्धन ने किया। खचाखच भरे सभागार में देश के कोने - कोने से पधारे हजारों स्त्री पुरुषों ने सहोत्साह हिस्सा लिया। इस अवसर पर समाज के विकास के लिए समर्पित, उत्कृष्ट कार्य करने वाले 151 महान हस्तियों को अंगवस्त्रम, प्रतीक चिन्ह तथा मुक्ताहार से सम्मानित किया गया।

साथ ही जायसवाल जागृति दिल्ली मासिक पत्रिका के स्व. पन्नालाल जायसवाल स्मृति अंक का लोकार्पण भी मुख्य अतिथि एवं सम्मानित अतिथियों द्वारा किया गया और महासभा के 5 राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्षों सर्वश्री डॉक्टर अरुण मोहन भारवि बिहार, श्री अशोक कुमार जायसवाल गाजियाबाद, श्री मदन लाल जायसवाल गुजरात आदि को वरिष्ठ कार्यकारी अध्यक्ष का पद प्रदान करते हुए सम्मानित किया गया।

सर्वप्रथम भगवान सहस्त्रार्जुन तथा भगवान बलभद्र के तैल चित्र के सामने दीप प्रज्वलित कर माल्यार्पण किया गया। तत्पश्चात श्रीमती रश्मि गुप्ता के नेतृत्व में बालिकाओं ने भक्ति रस से सराबोर और सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर सभी दर्शकों का मन मोह लिया। आगत अतिथियों का स्वागत दिल्ली प्रदेश के अध्यक्ष श्री सुधीर कुमार मनहर ने किया।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए बिहार से पधारे नामचीन साहित्यकार डॉ. अरुण मोहन भारवि ने समाज के दर्द का इजहार करते हुए कुरूतियों के निदान के लिए समाज को अति पिछड़ा वर्ग में शामिल कराने के लिए जोरदार संघर्ष की आवश्यकता पर जोर दिया। डॉ पी के चौधरी ने समाज की हिस्सेदारी राजनीति में तय करने के लिए एकजुटता की अपील की। प्रोफेसर ध्रुव जायसवाल (लंदन) ने अपने देश में अपने समाज के बीच पाकर अपनी मिट्टी को नतमस्तक हो नमन किया। गुजरात से पधारे श्री पन्नालाल जायसवाल तथा मदन लाल जायसवाल ने सामाजिक समरसता में जायसवाल समाज की अहम भूमिका की चर्चा की जबकि डॉ हर्ष जायसवाल ने समाज के विकास में आधी आबादी की भूमिका पर प्रकाश डाला। जयपुर से पधारे महासभा के राष्ट्रीय महासचिव श्री पूरण चंद झारीवाल ने आज के इस कार्यक्रम की सफलता से अभिभूत होकर आयोजक मंडल के मुखिया भाई आदित्य, के के भगत, छोटे लाल गुप्ता अशोक जायसवाल की खूब तारीफ की।

इसके पूर्व सर्वोच्च अधिकार समिति को संबोधित करते हुए महासभा के वरिष्ठ संरक्षक बालेश्वर दयाल जायसवाल ने कहा कि महासभा की स्थापना इसी दिल्ली के इतिहासिक धरती पर आज से 39 साल पहले हुई थी तब से आज तक इस महासभा ने अनेक क्षेत्रों में कीर्तिमान के कई सोपान पार किए हैं और अब हालात ऐसा है कि तरक्की की दौड़ में बीच रास्ते थक कर बैठ जाने वाले हमें हमारे ही साथी आज एक बार फिर हमारी प्रगति यात्रा का हिस्सा बनने के लिए लालायित हैं इस अवसर पर दिल्ली एनसीआर जायसवाल स्वर्गीय महासभा महिला महासभा तथा युवा महासभा की प्रदेश कमेटी का गठन तथा शपथ ग्रहण कराया गया। कार्यक्रम को संबोधित करने वालों में दिल्ली उपमहापौर दिव्य जायसवाल, विजय भगत, समाजसेवी ध्रुव जायसवाल, ब॰ राजीव जायसवाल, एसपी सुमन, शशि जायसवाल, श्री

राकेश जायसवाल, श्री अर्जुन चौधरी, श्री विजय जायसवाल, श्री सतीश जायसवाल, श्री युवराज सुहल्का, श्री ध्रुव जायसवाल, श्री आनंद चौकसे, श्री राजेश जायसवाल, श्रीमती तमन्ना सुहलका, नेपाल से पधारे श्रो पूनम गुप्ता आदि ने अपने अनुभव को साझा किया और उक्त अवसर पर महासभा को संबोधित किया।

कार्यक्रम की सफलता के लिए हरिशंकर जायसवाल ने फोटोग्राफी तथा श्री मनोज शाह ने सभी को प्रतीक चिन्ह अपने तरफ से प्रयोग के रूप में उपलब्ध कराया। दिन रात मेहनत करके कार्यक्रम को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले निभाने वालों में सर्वश्री छोटे लाल गुप्ता जी श्री अशोक कुमार जायसवाल जी श्री कृष्ण कुमार जायसवाल जी श्री सुधीर कुमार, विजय कुमार, श्री विजय जायसवाल, श्री अजय जायसवाल, श्री घनश्याम जायसवाल, डॉ. राजेश जायसवाल, श्री प्रदीप जायसवाल, श्री संदीप जायसवाल, श्री शिवम जायसवाल, श्री अमित जायसवाल, श्री आलोक रंजन, श्रीमती रश्मि गुप्ता, श्रीमती हनिलिका शाह, श्रीमती बबीता किशन, श्रीमती श्वेता वर्धनम, श्री अवधेश गुप्ता, श्रीमती माधवी जायसवाल, श्री मुकेश जायसवाल, अजय गुप्ता आदि का सराहनीय और अभूतपूर्व योगदान रहा।

कार्यक्रम में श्री राजा जायसवाल रायपुर, श्री अनुपम चौकसे, श्री राम कृपाल राय, श्री संतोष जायसवाल , श्री राज कुमार जायसवाल, श्री अशोक चौधरी, श्री रंजन कुमार, श्री गोपल जायसवाल , श्री सुखचौन वालिया, श्री रमेश आहुवालिया, श्री राधेश्याम बंधु, श्री संजय जायसवाल, श्री बंसीलाल जायसवाल, श्री हरी प्रकाश जायसवाल, श्री राजू भाई साव, श्री जयंत कनाडे, श्री अजय जायसवाल, श्री अक्षय जायसवाल, ड्रॉ संगम लाल जायसवाल, श्री सुनील जायसवाल,, श्री प्रकाश जायसवाल, श्रीमती मीना जायसवाल, श्री लोकेश जायसवाल आदि की गरिमाई उपस्थिति रही।

कार्यक्रम के सुंदर, भव्य और सफल होने पर महासभा के सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों द्वारा दिल्ली (NCR) जायसवाल सर्व. महासभा के आयोजन समिति के सभी सदस्य एवं पदाधिकारियों को दिल से धन्यवाद और साधुवाद प्रेषित किया और कहा कि इस तरह के सुंदर एवं भव्य कार्यक्रम वर्षों तक लोगों के दिलों में स्मृति के रूप में रहेंगे। भविष्य में भी ऐसे कार्यक्रम होते रहने चाहिए। कार्यक्रम का समापन प्रीतिभोज के साथ हुआ।

आदित्य वर्धनम

क्षत्रिय महासभा का 114वां स्थापना दिवस बड़े धूमधाम से मनाया

जोधपुर। क्षत्रिय महासभा जोधपुर में सभा का 114वां स्थापना दिवस बड़े धूमधाम से मनाया गया जिसमें सभी जिलों से समाज बंधु व पदाधिकारी पधारे। समाज के गणमान्य बंधुओं ने संस्था के पदाधिकारी व संरक्षक मंडल सेवाभावी सदस्यों ने बढ़-चढ़कर व्यवस्था की।

इसमें डॉ. पुखराज चौहान मुख्य संयोजक थे जिनके मार्गदर्शन में संपूर्ण कार्य हुआ सभी मंचासीन पदाधिकारियों का सम्मान किया गया। मंच पर प्रथम बार हमारे समाज के संत श्री 1008 श्री हरिहर दास जी महाराज वृंदावन ने मंच की शोभा बढ़ाते हुए भगवान सहस्त्रार्जुन के बारे में हिंदी में, इंग्लिश में व संस्कृत में समाज को अपने आराध्य देव को आध्यात्मिक वह ऐतिहासिक बातों से अवगत करवाया। उन्होंने यह भी निवेदन किया कि अब हमारे आराध्य देव का कुछ वर्षों से बड़ा प्रचार प्रसार होने लगा है। साथ में उन्होंने यह भी निवेदन किया कि हमारे आराध्य देव को सिर्फ घी का दीपक ही पसंद है। यदि किसी का कार्य रूका हुआ है, वह यदि रोज उनकी छाया प्रति के सामने घी का दीपक प्रज्वलित करता रहेगा तो उसका कार्य सिद्ध होगा। राजस्थान हैहय वंशी कलाल महासभा जयपुर क्षत्रिय सभा जोधपुर क्षत्रिय सभा जोधपुर को तह दिल से हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

साथ ही उन्होंने इस सभा के पदाधिकारियों ने जो मान सम्मान किया, उन्हें मंच पर आसीन करवाया दूसरे पदाधिकारियों को वीवीआईपी गैलरी में बिठाकर उन्हें मान दिया जिसमें सभा के प्रांतीय अध्यक्ष कन्हैया लाल पारेता (कोटा), महामंत्री उत्तमचंद चौधरी (जयपुर), महिला मंडल की अध्यक्ष माया सुवालका (टोंक), शिवचरण हाडा (जयपुर), माननीय न्यायमूर्ति श्रीमती बीना जैन, संस्थापक अध्यक्ष शिवनारायण वर्मा, गिरवर चौधरी, सतनारायण चौधरी, उदयपुर गिरवा अध्यक्ष लोकेश चौधरी, हरीश कलाल बांसवाड़ा संभागीय अध्यक्ष आदि का सिल्वर मेडल, माला व साफा पहनाकर स्वागत किया उसके लिए सभा के अध्यक्ष लेखराज मेवाड़ा, मुख्य संरक्षक नेमीचंद, डॉ. पुखराज चौहान इस संस्था के कर्ता-धर्ता, बाबूलाल मेवाड़ा, रामेश्वर मेवाड़ा, गणपत मेवाड़ा आदि बहुत कुछ समाजसेवी जिन्होंने बढ़-चढ़कर कार्यक्रम को सफल बनाया। इसमें विशेष योगदान महिला अध्यक्ष क्षत्रिय सभा जोधपुर का रहा, और अन्य सभी का राजस्थान हैहय वंशी कलाल महासभा हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद प्रेषित करती है।।

डॉ. पुखराज चौहान,
मुख्य संयोजक, श्रत्रिय महासभा

भारतीय नववर्ष की हार्दिक शुभकामनायें!'

–विक्रम सम्वत् - 2080 वर्ष–

–कलियुग सम्वत् - 5124 वर्ष–

–वेद सम्वत् - 1,96,08,53,119 वर्ष–

–मानव सृष्टि सम्वत् - 1,96,08,53,124 वर्ष–

–कल्प-सम्वत् - 1,97,38,13,124 वर्ष–

'वसन्त ऋतु' की प्रथम तिथि को 'होली' मनायी जाती है, होली के 15 दिनों बाद 'चौत्र मास' के 'शुक्ल पक्ष' की 'प्रथम तिथि' को 'भारतीय नववर्ष' मनाया जाता है, इस 'Christian Year = 2023' में यह तिथि '22-March' को पड़ी। जिस प्रकार जीवन के प्रारम्भ में 'मधुरता, सौन्दर्य' और 'आकर्षण' रहता है, उसी प्रकार नववर्ष के प्रारम्भ में भी पर्यावरण में सौन्दर्य की वृद्धि होती है, वृक्षों पर नए पत्ते आ जाते हैं, वसुन्धरा पर हरियाली छा जाती है, न अधिक गरमी होती है, न अधिक ठण्ड लगती है, न अधिक वर्षा होती है, यह ऋतुओं में सर्वश्रेष्ठ ऋतु 'वसन्त' का काल है।

ज्योतिष के ग्रन्थ 'हिमाद्रि' के एक श्लोक के अनुसार,

'चौत्रे मासि जगद् ब्रह्मा ससर्ज प्रथमे अहनि।'

'शुक्ल पक्षे समग्रन्तु तदा सूर्योदये सति।।'

अर्थात्–चौत्र शुक्ल के प्रथम दिन सूर्योदय के समय परमात्मा ने जगत् की रचना की।;

प्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य भास्कर 'सिद्धान्त-शिरोमणि' में लिखते हैं:

'लङ्कानगर्यामुदयाच्च भानोतस्यैव वारं प्रथमं बभूव। मधो:सितादेर्दिनमासवर्षयुगादिकानां युगपत्वृत्ति:।।'

अर्थात्–लङ्कानगरी में सूर्य के उदय होने पर उसी के वार (रविवार), में चौत्रमास शुक्लपक्ष के आरम्भ में दिन, मास, वर्ष, युग आदि एक साथ आरम्भ हुए;

'चैत्रशुक्लप्रतिपदा (भारतीय नववर्ष) को क्या-क्या घटनायें हुई???'

१) नव वर्ष के दिन ही 1,97,38,13,123 वर्ष पूर्व 'जगत् की उत्पत्ति' (World Creation) हुई। अत: आज से 'कल्प-सम्वत् 1,97,38,13,124वाँ वर्ष'

२) जगत् की उत्पत्ति के 'तीन चतुर्युग' के पश्चात् आज के दिन ही 1,96,08,53,123 वर्ष पूर्व 'तिब्बत के मानसरोवर' में सैकड़ों मनुष्यों (स्त्रियों-पुरुषों) की युवावस्था में अमैथुनी सृष्टि (Human Creation) हुई। अत: आज से 'मानव-सृष्टि सम्वत् 1,96,08,53,124वाँ वर्ष' मनुष्योत्पत्ति में दो प्रकार के मनुष्यों की उत्पत्ति हुई,

१) ऋषि

२) साध्य

जो 'ऋषि' थे वह "'भवप्रत्यय।।।" (योगदर्शन १।१९)' के अनुसार, आरम्भ से ही 'समाधिस्थ' हो गए, जो 'उपाय प्रत्यय' वाले 'साध्य' (साधारण मनुष्य) थे, वे साधारण क्रियाकलाप करते हुए विचरण करने लगे। मनुष्योत्पत्ति के '5 वर्ष' के भीतर चारों ऋषियों को; शब्द, अर्थ, सम्बन्ध; सहित चारों वेदों का ज्ञान उनके अन्त:करण में परमात्मा ने दिया।

5 वर्षों में जब २०,००० से अधिक मन्त्रों की शिक्षा समाधि अवस्था में पूर्ण हुई, तब 'वेदों का आविर्भाव (Illumination of VEDAS)' होना कहा गया।

३) मनुष्य-उत्पत्ति के '5 वर्ष' पश्चात् आज ही के दिन 1,96,08,53,118 वर्ष पूर्व 'वेदों का आविर्भाव' हुआ। अत: आज से 'वेद-सम्वत् 1,96,08,53,119वाँ वर्ष' प्रारंभ हुआ।

४) इसी दिन 'वैवस्वत-मन्वन्तर का प्रारम्भ' (12,05,33,123 वर्ष पूर्व), 'कलियुग का प्रारम्भ' (5,123 वर्ष पूर्व) हुआ था। अत: 'कलियुग सम्वत् 5124वाँ वर्ष' है। यूरोपीय ज्योतिष 'ठंपसमल' की गणना के अनुसार, 5125 वर्ष।

४) 'चक्रवर्त्ती सम्राट श्रीराम का राज्याभिषेक इसी दिन हुआ था।'

५) 'श्रीयुधिष्ठिर का राज्याभिषेक (5159 वर्ष पूर्व) चौत्र शुक्ल प्रतिपदा को ही हुआ था।'

६) सम्राट 'विक्रमादित्य' ने इसी दिन संगठित राष्ट्र को स्थापित किया, और ईसामसीह (श्रमेने बैतपेज) से 57 वर्ष पहले 'विक्रम-सम्वत' का प्रारम्भ हुआ।

७) सिखों के दूसरे 'गुरु अंगददेव' का जन्म इसी दिन ही हुआ था।

८) ऋषि दयानन्द सरस्वती के मार्गदर्शन में, आर्य समाज संस्था का 'त्महपेजतंजपवद 7-मार्च-1875' को, 'शिलान्यास' 7-अप्रैल-1875 (चौत्र शुक्ल प्रतिपदा) को, और 'आर्य समाज परिसर में प्रथम सत्संग' 10-अप्रैल-1875 को हुआ।

९) 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' के संस्थापक श्री 'केशव बलिराम हेडगेवार' जी का जन्म भी इसी दिन हुआ था।

2000 वर्ष पूर्व सम्पूर्ण विश्व में 'चैत्र शुक्ल प्रतिपदा' को ही नववर्ष मनाया जाता था, और 'प्राचीन यूरोपवासी भी मार्च-अप्रैल में ही (Spring Equinoñ) के आसपास ही नववर्ष मनाते थे', किन्तु 'Pope Gregory, Julius Ceaser' आदि ने इस परम्परा को ध्वस्त करके वसन्त ऋतु में मनाये जाने वाले नववर्ष को 'पतझड़ (शिशिर ऋतु)' में मनाना आरम्भ कर दिया, और 1 अप्रैल को नववर्ष मनाने वाले यूरोपीय नागरिकों को APRIL FOOL घोषित किया।

सम्पादक मण्डल

संत कबीरदास जयन्ती 4 जून 2023 पर विशेष :

कबीर होने का मतलब

डॉ. अरूण मोहन भारवि

मनुष्य स्वभावत: सरल राह का सही होता है। जो मार्ग सुगम, सरल और आरामदेह प्रतीत होता है, उसी पर चलना सबको अच्छा लगता है। इसके साथ ही मनुष्य को खुशफहमी और आत्ममुग्धता से जीने की आदत इसी से बढ़ती जाती है। उसे लगता है वह महान राह का महान राही है।

यही कारण है कि मनुष्य में अपनी गलती दुर्बलता और कमियाँ नहीं दिखाई पड़ती है, जबकि उसे दूसरों की त्रुटियाँ सहज ही दृष्टिगत होती हैं। केवल दृष्टिगत ही नहीं होती वरन बढ़-चढ़ कर दृष्टिगत होती हैं। इसी से कहा गया है कि अपनी पुतली का माडा नहीं दिखता किन्तु दूसरे के ललाट का काला तिल भी बड़ा धब्बा नजर आता है। यही है खुशफहमी या आत्ममुग्धता, जिसके चक्कर में व्यक्ति कभी निकल ही नहीं पाता। यह व्यक्ति की बड़ी कमजोरी है, प्रकृति है, आदत है और है उसकी जिन्दगी की त्रासदी। ऐसी त्रासदी के चक्रव्यूह में एक से एक होनहार, मेघावी अभिमन्यु अपना दम तोड़ देते हैं। तोड़ने पर मजबूर होते हैं। कोई बिरला कबीर ही इस चक्रव्यूह को भेद पाता है।

दूसरों में दोष, त्रुटि, कमी या खामी खोजना व्यक्ति का पंसदीदा कार्य है। इस काम में उसे मजा आता है, सुकून मिलता है। दूसरों की कमियाँ बढ़ाचढ़ा कर बताना, गिनाना, दिखाना व्यक्ति को बड़ा ही रूचिकर लगता है। किन्तु जब व्यक्ति आत्ममुग्धता से मुँह मोड़कर आत्मचिंतन आत्म साक्षात्कार या स्वयं में अपने को खोजने की कोशिश करता है, खोजना है या उसे परखने का कार्य शुरू करना है तब एसे 'बुरा देखन मैं चला, मुझसे बुरा न कोय' को सच्चाई से साक्षात्कार होता है, जो व्यक्ति को 'आम' से 'खास' बना देता है। यह आम आदमी से खास आदमी की यात्रा ही 'कबीरत्व' की यात्रा है।

कबीर भोजपुरी के आदि कवि वालमीकि है। ये स्वयं अपने को अनपढ़ कहते थे– 'मसि कागद छुयो नहीं-कलम गहूयो नहीं हाथ'। किन्तु यह भी प्रचण्ड सत्य है कि इस अनपढ़, गॅवार आदमी की कविताई के, ज्ञान के आगे, उलटबासियों के सामने, बड़े-बड़े पढ़ाकू, विद्धान पानी भरते नजर आते हैं– 'कबीर दास की उल्टीबानी-बरसे कम्बल भींजे पानी'।

दूसरों की गलतियों पर अंगुली उठाने को कौन कहे, तलवार निकालने पर भी यहिकंचित संकोच या विलग्न नहीं होता। दूसरों भी बुराई निकालने, खोजने, या बताने या कमी या बुराई से लड़ने में, दूसरों भी त्रुटियों के खिलाफ बगावत करने में लोगों को एकजूट करने में सभी आगे रहते हैं। किन्तु अपनी बुराई से लड़ने को डूब, मद्दा, शक्ति या साहस जब आम आदमी में पैदा होता है तो वह कबीर हो जाता है। अपनी कमी से, अपनी बुराई से लड़ने वाला कबीर– पहले भी अकेला था, आज भी अकेला ही है। कबीर की मान्यता रही है कि अच्छे काम की शुरूआत हमेशा अपने से अपने घर से करनी चाहिए, तभी समाज बदलेगा। इसी से अपनी बुराई से लड़ने की शुरूआत एक सामान्य जुलाहा को कबीर बना देता हैं। 'जे झीनी-झीनी बीनी चदरिया' या 'ज्यों को त्यों धरि दिन्ही चदरिया' एक आम कर्त्तव्यपरायण गृहस्थ जुलाहा को कबीर के रूप में उँचे आसन पर पहुँचा देता है, जो हिन्दी काव्य जगत के इतिहास की एक अप्रतिम घटना बन जाती है। कबीर अपनी बुराई के खिलाफ, अपने लोगों की बुराई के खिलाफ बगावत का विगुल फूँकने वाले क्रांतिकारी कवि के रूप में, काव्य-जगत में अपना नाम दर्ज कराने में सबसे पहले सफल होते हैं :

'कबीर खड़ा बाजार में, लिए लुकाठी हाथ
जो घर फूंके आपना, चलो हमारे साथ।'

जब कबीर ने स्वयं को नहीं छोड़ा तो भला दूसरों को कैसे छोड़ते– 'डूबा वंश कबीर का, जनमा पूत कमाल'। यही कारण है कि कबीर की वक्र दृष्टि से सभी ढेर हो पहचान एक वगावती कवि के रूप में 'पाठकों के बीच है, जो समाज के पाखण्ड, वाइयाडम्बर या ढ़ोंग पर चोट करते हुए व्यक्ति की सहजता, सादगी और उसके मन की निर्मलता पर जोर देता है।

भोजपुरी भाषा और साहित्य के आदि कवि के रूप में जाने पहचाने जाने वाले कबीरदास की लगभग अधिकांश रचनाएँ, गीत, साखी, भोजपुरी की थाती मानी जाती है। कबीर पर सामाजिकता के साथ ही अध्यात्म का रंग भी बड़ा चटक रहा है। एक बानगी देखें–

'पांच तत्व की बनी चुनरिया
यह चुनरी मैके से, आई
ससुरे में मनुवा खो दिया
मरिम मलि धोई दाय न छूटे
ज्ञान का साबुन लाय पिया
कहै कबीर दाग तब छुटि हैं
जब साहब अपनाय लिया।'

मछली पानी में ही रहती है, फिर भी प्यासी रहती है। यही हाल धाबी का भी है। वह भी जल के बीच कपड़ा धोता प्यासा रहता है। इस अध्यात्मिक गीत या भजन की बानगी देखें–

पानी में मीन पियासी
मोहि सुन सुन आवत हाँसी
आतम ज्ञान बिना नर भटके
कोई मथुरा, कोई काशी!
जैसे मृगा नाभि कस्तूरी
बन-बन फिरत उदासी।

यह संसार परिवर्तनशील है। दुनिया हमेशा अपना रंग बदलती रहती है। प्रकृति द्वारा उसके रंग बदलने की कहानी जग जाहिर है। एक बदलाव भरी दुनिया की बानगी देखें–

सब दिन होत न एक समाना
एक दिन राजा हरिश्चन्द्र गृह
कंचन भरे खजाना,
एक दिन भरे डोम घर पानी
मरघट गहे निसाना।
एक दिन राजा रामचन्द्र जी
चढ़े सात विमाना
एक दिन उनका बनोवास भये
दशरथ तज्यो पराना।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि कबीर होने का मतलब अपने को पहचानता है। अपनी बुराई से लड़ना है। वाहयाडल था दिखावा- 'जय माला छापा तिलक' से परहेज करता है। समाज में प्रदूषण या गन्दगी न फैलाते हुए 'सादा जीवन-उच्च विचार' के साथ त्रिनामी जीना है।

आर्य आवास
SBI मुख्य शाखा
बक्सर 802101
मो. 9931525695

समाज के शिक्षा का स्तर सुधारने एवं एकजुटता पर होगा मंथनः मनोज जयसवाल

सुरेश गांधी

वाराणसी (उत्तरशक्ति)। जायसवाल क्लब के राष्ट्रीय कार्यकरिंणी समिति की दो दिवसीय चतुर्थ राष्ट्रीय सम्मेलन इस बार प्रयागराज में किया गया। सम्मेलन में देश के कोने-कोने से आए स्वजातीय पदाधिकारियों ने समाज की समस्याओं, राजनीतिक हिस्सेदारी, शिक्षा व एकजुटता पर चर्चा की। इस दौरान समाज के पदाधिकारियों ने सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि राजनीतिक हिस्सेदारी बढ़ाने के लिए एकजुट होने की जरुरत है।

सम्मेलन में राष्ट्रीय अध्यक्ष मनोज जायसवाल ने दीन दयाल नगर के भाजपा विधायक रमेश जायसवाल के समक्ष छह सूत्री प्रस्ताव रखा, जिसे सभी सदस्यों ने समर्थन किया। प्रस्ताव में मिर्जापुर के विश्वविद्यालय का नाम डॉ काशी प्रसाद जायसवाल के नाम पर हो, भगवान सहस्त्रबाहु के नाम पर मध्य प्रदेश सरकार की तर्ज पर यूपी के वाराणसी में एक भूमि आबंटन कर भव्य मूर्ति भी लगायी जाय। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा भगवान सहस्त्रबाहु जी के नाम पर वेलफेयर बोर्ड की स्थापना करें, अद्वेय काशी प्रसाद जायसवाल जी के नाम पर वाराणसी मिजार्पुर के फर्म कल कक आप पाक पन्ना बॉर्डर पर एक द्वार का निर्माण हो, वाराणसी स्थित गिरजाघर चौराहे का नाम बदल कर भगवान सहत्रबाहु जी के नाम पर हो और वाराणसी स्थित अंधरापुल चौराहे का नाम बदल कर डॉ केपी जायसवाल चौक हो। इसके अलावा सम्मेलन में यूपी ईकाई की नई कमेटी का गठन किया गया, जिसमें सोनभद्र, दुद्धी निवासी रवीन्द्र जायसवाल को जायसवाल क्लब का प्रदेश अध्यक्ष, प्रयागराज निवासी श्रीमती आभा सिंह को जायसवाल क्लब महिला किंग का प्रदेश अध्यक्ष, जायसवाल क्लब युवा विंग का प्रदेश अध्यक्ष रामनगर निवासी सिद्धार्थ

जायसवाल व गुजरात के अनिल जायसवाल को राष्ट्रीय सचिव मनोनीत किया गया। सम्मेलन में बतौर मुख्य अतिथि विधायक रमेश जायसवाल का क्लब के संस्थापक व राष्ट्रीय अध्यक्ष मनोज जायसवाल ने गर्मजोशी से स्वागत करते हुए अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि आर्थिक व सामाजिक रुप से संपंन होने के बावजूद समाज का चाहे वो प्रशासनिक तबका हो या अन्य, उत्पीड़न का शिकार हो रहा है। लेकिन खुशी है कि एक आवाज पर विधायक रमेश जायसवाल उत्पीड़न करने वालों के विरुद्ध सीना तानकर खड़े हो जाते हैं। इसके अलावा वह समाज के विकास के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। मनोज जायसवाल ने कहा, आज देश में हमारी जितनी संख्या है उसके अनुरूप हमें राजनीतिक हिस्सेदारी नहीं मिल रही, इसलिए हमें एकजुट होकर अपनी आवाज बुलंद करनी होगी। इसके लिए जरूरी है कि हम और आप मिलकर समाज को एक नई दिशा दें और युवकों को आगे बढ़ाएं। मनोज जायसवाल ने समाज के लोगों से एकजुटता बनाएं रखने का आह्वान करते हुए कहा कि सामाजिक चेतना, एकता और शिक्षा से ही समाज का सर्वांगीण विकास होगा। मुख्य अतिथि एवं विधायक रमेश जायसवाल ने कहा कि मुझे खुशी है कि मनोज जायसवाल के प्रयास से क्लब देश के विभिन्न राज्यों में समाज हित में कार्य कर रही है। उनके द्वारा लाएं गए प्रस्ताव को अमलीजामा पहनाने की हरसंभव कोशिश करुंगा। विधायक ने युवाओं का आह्वान करते हुए कहा कि शिक्षा के स्राथ साथ सामाजिक कार्यों के लिए भी समय निकालें और मिलजुल कर नए समाज का निर्माण करें। सम्मेलन का राष्ट्रीय उपाध्यक्ष लक्ष्मण जायसवाल ने किया। इस अवसर पर महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी डॉ काशी प्रसाद जायसवाल के सम्मान में प्रबुद्ध जायसवाल कल्याण समिति, लखनऊ द्वारा प्रकाशित स्मारिका का विमोचन किया गया। इसके पूर्व समाज के नन्हें-मुन्ने बच्चों ने रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर स्वजातीय बंधुओं का दिल जीत लिया। सम्मेलन का शुभारंभ समाज के कुलदेवता परम पूज्य राजराजेश्वर भगवान सहतस्त्रबाहु जी महराज के तैलचित्र के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया।

सेवा में :
श्री नर्बदेश्वर प्रसाद जायसवाल
प्रधान संपादक, जायसवाल जागृति
विश्वनाथ भवन, बी-36, सेक्टर-23
नौएडा, गौतमबुद्ध नगर–201301

युवाओं को सफल जीवन की ओर प्रेरित करने के लिए सलाहः अपने लक्ष्यों की प्राप्ति में बढ़-चढ़कर

भूमिकाः अनंत संभावनाओं और अवसरों से भरी दुनिया में सफलता की यात्रा युवाओं के लिए एक साथ उत्साहजनक और चिंता कराने वाली हो सकती है, विशेष रूप से जो अपने जीवन के मार्ग पर कदम रखने के लिए उठ रहे हैं। यह लेख युवाओं को प्रेरित करने और उन्हें मूल्यवान जीवन की प्राप्ति के लिए मूल्यवान ज्ञान और व्यावहारिक सलाह प्रदान करने का उद्देश्य रखता है। महत्वपूर्ण सिद्धांतों, मस्तिष्क सेट करने के बदलाव और व्यक्तिगत विकास के लिए रणनीतियों की खोज के माध्यम से, हम उम्मीद करते हैं कि युवाओं को अपने सपनों को पूरा करने के लिए प्रेरित करके उनकी असली संभावनाओं को खोलने में सहायता मिलेगी।

1. **अपने ध्यान और उद्देश्य को स्वीकार करें:** अपनी जुनून और उद्देश्यों का पता लगाना और स्वीकार करना सफल जीवन के लिए महत्वपूर्ण है। इस खंड में आत्म-चिंतन, रुचियों की खोज, और करियर विकल्पों के साथ व्यक्तिगत मूल्यों को मिलाने का महत्व बताया जाता है। यह पाठकों को प्रेरित करता है कि वे पूरे मन से जो वे प्यार करते हैं, उसे करें, क्योंकि यह उन्हें एक अर्थपूर्ण और सफल जीवन की ओर ले जाएगा।
2. **स्मार्ट लक्ष्य निर्धारित करें:** लक्ष्य निर्धारित करना सफलता के लिए एक मूलभूत कदम है। इस खंड में, स्मार्ट (विशिष्ट, मापनीय, योग्य, संबंधित और समय-बाधित) लक्ष्य निर्धारित करने के बारे में युवाओं को गाइड किया जाता है, जो उनके इच्छाओं के लिए एक स्पष्ट रोडमैप बनाने में मदद करेगा। यह उचित है कि बड़े लक्ष्यों को छोटे, क्रियात्मक कदमों में टूटने का महत्व समझा जाए ताकि मोटिवेशन बनाए रखा जा सके और प्रगति का ट्रैक किया जा सके।
3. **विकासशील मस्तिष्क का विकास करें:** मस्तिष्क की शक्ति को कम न करें। यह खंड एक विकासशील मस्तिष्क की अवधारणा पर विचार करता है, जो मुद्दों को स्वीकार करने, सीखने के अवसर ढूंढने, और प्रतिक्रियाएं देने के महत्व को बताता है। विकासशील मस्तिष्क को विकसित करके, युवा संघर्षों को दूर करने, अनुकूलता को विकसित करने, और अपनी

क्षमता में विश्वास करने की क्षमता विकसित कर सकते हैं।

4. **पथभ्रष्ट के रूप में असफलता को स्वीकार करें:** असफलता को स्वीकार करना किसी भी सफलता की यात्रा का अविचलनीय हिस्सा है। यह खंड युवाओं को असफलता की दृष्टि में पुनः समझने की प्रेरणा देता है, उसे एक मूल्यवान अनुभव के रूप में देखने के बजाय रोकथाम के रूप में। इसमें ऐसे प्रसिद्ध व्यक्तित्वों की कहानियाँ शामिल होती हैं जो असफलताओं का सामना करते हैं लेकिन संघर्ष करके निरंतर बढ़ते हैं, उनके द्वारा सीखे गए सीखों को हाइलाइट करके।
5. **अनुशासन और निरंतरता को प्राकृतिक अंग बनाएं:** सफलता अनुशासन और निरंतरता को मांगती है। यह खंड समय प्रबंधन, प्राथमिकता निर्धारण, और बाधाओं के बीच ध्यान केंद्रित रखने के लिए व्यावहारिक सुझाव प्रदान करता है। यह छोटी दैनिक आदतों की शक्ति को बताता है और पाठकों को सलाह देता है कि वे अपने लंबे समय की आकांक्षाओं के साथ संगत विचारशीलता बनाए रखने के लिए जागरूकता से निर्णय लें।
6. **सहायतापूर्ण नेटवर्क को पोषित करें:** सहायक नेटवर्क का निर्माण व्यक्तिगत और पेशेवर विकास के लिए महत्वपूर्ण है। यह खंड सम्मिलित मानवों, मेंटरों और आदर्श व्यक्तियों के साथ खुद को घेरने, मार्गदर्शन, प्रेरणा और समर्थन प्रदान करने की महत्ता को बताता है। इसके अलावा, यह दर्शाता है कि सहायता करने और सकारात्मक संबंधों को पोषण देने का महत्व है।

निष्कर्ष: सफल जीवन की ओर यात्रा हर व्यक्ति के लिए अद्वितीय होती है, लेकिन यह संघर्ष, संयम और विकासशील मस्तिष्क के साथ सीधे रास्ते पर होती है। यह लेख युवाओं के लिए प्रेरणा और मार्गदर्शन का एक प्रकाशक के रूप में कार्य करेगा, जो उन्हें जीवन में सफलता की ओर अग्रसर करने के लिए आवाज प्रदान करेगा। जीवन में शिखर तक पहुंचने के लिए उन्हें अपने सपनों को पूरा करने के लिए प्रेरित करेंगे और सफलता के लिए आवश्यक गुणों और उद्देश्यों को समझने में मदद करेंगे।

अजय जायसवाल - (युवा सचिव, जायसवाल जागृति)
प्रेरक वक्ता और सामाजिक कार्यकर्ता, द्वारका, नई दिल्ली
Mobile :- 8700652598

'जय राजराजेश्वर सहास्त्रार्जुन भगवान'

'देश की 20 करोड़ से अधिक आबादी वाले हैहयवंशी क्षत्रिय कलवार, कलार, कलाल, जाति को मानसिक आघात पहुँचाने के दृष्टिकोण से उनके आराध्य देव राजराजेश्वर सहास्त्रार्जुन भगवान के विरुद्ध कथा वाचक पंडित धीरेन्द्र शास्त्री निवासी जनपद छतरपुर मध्यप्रदेश के द्वारा अपमान जनक, अभद्र, अशोभनीय तथा अमर्यादित टिप्पणी करने के कारण कष्टकारी मानसिक वेदनादायक अपमान से गुजर रहे पूरे देश के हैहयवंशी क्षत्रिय कलवार कलार कलाल जाति के बन्धुओं ने उक्त कथा वाचक के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज कराने हेतु देश के सैकड़ों स्थानों पर प्रदर्शन कर थानों पर प्रार्थना पत्र दिया, परन्तु प्राथमिकी दर्ज नहीं की गयी! उस पर पुलिस के आलाधिकारिगणो, प्रशासन व शासन को भी कलवार कलार कलाल जाति के बन्धुओं के द्वारा प्रार्थना पत्र प्रेषित कर उक्त कथा वाचक के विरुद्ध कार्यवाही किये जाने की मांग की गयी, फिर भी कोई कार्रवाई न होने के कारण क्षुब्ध होकर हैहयवंशी क्षत्रिय कलवार कलार कलाल जाति के हितों की रक्षा हेतु प्रयासरत मा० श्री एस गुप्ता जी कानपुर नगर उत्तर प्रदेश की सलाह पर मा० श्री किशोर भगत जी, राष्ट्रीय महासचिव। मा० श्री लकी कलवार जी, राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिल भारतीय कलवार टीम भारत, मा० श्री एन० जायसवाल जी, अध्यक्ष अखिल भारतीय प्रबुद्ध जायसवाल महासभा, नोएडा, श्री विजय कुमार कलवार जी निवासी जनपद अम्बेडकर नगर उत्तर प्रदेश, अपने बहुत से उत्तर प्रदेश व बिहार के स्वजातीय बन्धुओं के साथ अपना विरोध प्रदर्शित करते हुए एक दिन का उपवास व सांकेतिक धरने पर 14 मई 2023 दिन रविवार को प्रातःकाल 8 बजे से रात्रि 8 बजे तक स्थान जंतर मंतर नई दिल्ली में बैठे, और न्याय न मिलने पर भविष्य में अमरण अनशन व प्रदर्शन की स्पष्ट रूप से चेतावनी भी दी है!'

उपरोक्त श्री विजय कुमार कलवार उक्त उपवास व सांकेतिक धरने के पूर्व उपवास व सांकेतिक धरना स्थल जंतर मंतर पर ही साथ ले गये। भगवान राजराजेश्वर सहास्त्रार्जुन भगवान की मूर्ति पर माला पहनाकर, अगरबत्ती से आरती व पूजा-पाठ कर प्रार्थना की कि यदि न्याय नहीं मिलता है तो सभी स्वजातीय बन्धु सरनेम की संकीर्णता त्याग कर देश के सभी कलवार कलार कलाल जाति के बन्धु आस्था के साथ हुए कुठाराघात के विरुद्ध एकजुट होकर न्याय मिल पाने तक लड़ाई मिल कर एक साथ लड़ने का संकल्प लिया।

"जय कलवार कलार कलाल"
विजय कुमार कलवार

राजराजेश्वर श्री सहस्त्रबाहु कार्तवीर्यार्जुन का परिचय

हैहयवंशी महाराज हैहय, का जन्म अश्विन शुक्ल की प्रथमा दिन शनिवार को हुआ था। इनकी महारानी एलावती थी। इनकी चौथी पीढ़ी में महाराज महिष्मान हुए जिन्होंने "कुल राजधानी" नहिष्मती नगरी को बसाया (जो वर्तमान में महेश्वर मध्य प्रदेश में है।) महिष्मान एवं महारानी सुभद्रा की पांचवी पीढ़ी में महापराक्रमी कृतवीर्य के पुत्र हैहयवंशी कार्तवीर्य अर्जुन हुये जिनके अवतार के विषय में वायुपुराण के अप्रकाशित "महिष्मती महात्म्य" जो स्वर्गीय पण्डित विष्णु जटा शंकर जी जोशी द्वारा हस्तलिखित व पूज्य स्वामी श्री शिव चैतन्य वर्णी (महेश्वर) से प्राप्त श्लोक क्रमांक 10 से 26 तक का सार इस प्रकार है:-

विष्णु भगवान ने चक्र सुदर्शन को बुलाया, सहस्त्रार सुदर्शन प्रकट हुये, भगवान की पूजा कर कहा कि **"भगवान् मैंने बहुत युद्ध किये किन्तु किसी भी युद्ध में संतोष प्राप्त नहीं हुआ, मैं आप से युद्ध करना चाहता हूँ।"** इस बात को दो-तीन बार कहा। तब विष्णु भगवान ने सुदर्शन चक्र से कहा कि– **"युद्ध में संतुष्ट हम ही करेंगे, हे पुत्र मृत्युलोक में जाओ, यथेष्ट राज्य करो, प्रजा की भलाई करो, अधर्मी, दुष्टों, चोरों आदि का नाश करो, मैं भी तुम्हारा मनोरथ पूर्ण करने आऊँगा, जमदग्नि के यहाँ पुत्र रूप में, सब शांति के लिए आऊँगा"** इतना कर कर विष्णु जी अन्तर्धान हो गये, सुदर्शन चक्र बहुत प्रसन्न हुये।

उधर भगवान शंकर ने उत्तम पुत्र की अभिलाषा में तप कर रहे महाराजा कृतवीर्य को उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर वर दिया कि– "जैसा तुमने चाहा, वैसा ही पुत्र होगा, जो विष्णु के सुदर्शन चक्र का अवतार होगा, महर्षि दत्तात्रेय से वरदान प्राप्त कर चक्रवर्ती सम्राट के रूप में हजारों वर्ष तक राज्य करेगा, अंत में **"पूर्व मंत्रणा"** के अनुसार भगवान विष्णु जमदग्नि के पुत्र होंगे, फिर भयंकर युद्ध में सुदर्शन तुम्हारे पुत्र की संतोषजनक युद्ध की इच्छा पूर्ति होगी।"

1. **राजराजेश्वर**- राजाओं के राजा या वह चक्रवर्ती राजा जिसके राज्य में सूर्य अस्त न होता हो। वह राज पुरुष जो यश, ऐश्वर्य, यज्ञ, श्री, ज्ञान, वैराग्य, धर्म आदि छः गुणों से परिपूर्ण हो।

2. **श्री**- सम्मान सूचक, सुख, समृद्धि दाता।

3. **सहस्त्रबाहु**- हजारों भुजाओं वाले, "सहस्त्रबाहु" नाम को लेकर पुराणों, ग्रन्थों में अनेक विचार हैं। एक मत के अनुसार, इनके पास सहस्त्रों नौकायें (जहाज) होने के कारण सहस्त्रबाहु कहलाये, जबकि दूसरे मत के अनुसार भगवान विष्णु के सहस्त्रों चक्रावतार होने के कारण (क्योंकि "विष्णु के सुदर्शन चक्र" में सहस्त्रों दांते थे) सहस्त्रबाहु कहलाये। एक अन्य मत यह भी है कि उनके राज्य में हजारों स्थायी "सैन्य दल" तैयार रहते थे, इन्हीं सहस्त्र वाहिनी दलों के कारण सहस्त्रबाहु कहलाये।

जबकि **मार्कंडेण्य पुराण व विष्णु पुराण के अनुसार** कार्तवीर्यार्जुन ने भगवान श्री दत्तात्रेय की कठिन तपस्या कर अनेक वरदानों में से, एक वरदान युद्ध के समय इतनी हल्की सहस्त्र भुजाओं को मांगा, जिनका भार शरीर पर न पड़े, इसलिए सहस्त्रबाहु कहलाये।

4. **कार्तवीर्य**- इनके पिता का नाम कृतवीर्य था, इसलिये कार्तवीर्य कहलाये।

5. **अर्जुन**- यह नाम उनके माता-पिता द्वारा जन्म के समय दिया गया था। (अतः इन्हें अर्जुन, सहस्त्रार्जुन, सहस्त्रबाहु, कार्तवीर्यार्जुन, कार्तवीर्य, राजराजेश्वर सहस्त्रबाहु, सहस्त्र भुजाधारी, हैहयराज, दशाग्रीविजयी, कृतवीर्य-नन्दन तथा जैन ग्रंथों में सहस्त्रकिरण, नामों से सम्बोधित किया गया है। **पुराणों में इनके 1000 नाम प्राप्त हैं।**

जन्म एवं जन्म स्थान

हैहय वंश शिरोमणी, महाबली, चक्रावतार, राजराजेश्वर, भगवान कार्तवीर्य सहस्त्रार्जुन का जन्म, कलचुरि वंश की "कुल-राजधानी" माहिष्मती (महेश्वर, जिला खरगोन मध्यप्रदेश में स्थित) में हुआ था **स्मृति पुराण** के अनुसार कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की सप्तमी दिन रविवार, को शुभ मुहुर्त में हुआ था।

माता-पिता

पिता हैहयवंशी महाराजा कृतवीर्य थे, जिनकी 1000 महारानियाँ थीं, जिनमें सूर्यवंशी महाराजा सत्यवादी हरिश्चन्द्र की पुत्रियाँ सरमादेवी (जो अपने शील गुणों व सौन्दर्य के कारण पद्मिनी कहलाती थीं) एवं प्रमदा भी थीं। श्री सहस्त्रबाहु की माताश्री के विषय में मतैक्य (एक मत) नहीं है क्योंकि:-

भविष्य पुराण के अध्याय 106 में योगिराजकृष्ण

महाराजा युधिष्ठिर को "भगवान अनन्त" के व्रत का महत्त्व बताते हुये, सहस्त्रार्जुन के जन्म की कथा सुनाते हैं उस कथा के अनुसार- माहिष्मती नगरी के महान महाराजा कृतवीर्य की पटरानी **शीलधना** ने ब्रम्हवादिनी मैत्रैयी के उपदेश से, "अनन्त भगवान विष्णु" का व्रत किया, जिसके प्रभाव से एक सुन्दर पुत्र प्राप्त हुआ, जिसका नाम महाराजा कृतवीर्य ने अर्जुन रखा। कृतवीर्य के पुत्र होने के कारण वह पुत्र कार्तवीर्यार्जुन कहलाये।

जबकि **स्मृति पुराण** व श्रीराजराजेश्वर कार्तवीर्यार्जुन पुराण के खण्ड दो (पृष्ठ 694) से ज्ञात होता है कि- महाराजा कृतवीर्य की अनेक रानियाँ थीं, जिनमें राजा हरिश्चन्द की पुत्री महारानी पद्मिनी को "राजमहिषी" का पद प्राप्त था, इनसे एक सुन्दर पुत्र उत्पन्न हुआ, (यह बालक श्री विष्णु के 24 अवतारों में एक सुदर्शन चक्र अवतार था) जिसका नाम अर्जुन रखा था, कृतवीर्य के पुत्र होने के कार्तवीर्यार्जुन कहलाये।

इसी तरह **"मत्स्य पुराण"** में त्रेतायुग में जन्में हैहयवंशी महाराजा कृतवीर्य द्वारा योग्य पुत्र प्राप्ति हेतु किया गया कठोर तप व उनकी महारानी, राजा हरिश्चंद की पुत्री प्रमदा द्वारा माता सती अनसुईया के सुझाव अनुसार, तीन वर्ष में आने वाले लौद (अधिक) मास (मलमास) की शुक्लपक्ष व कृष्णपक्ष की एकादशी (जो क्रमशः पद्मिनी व परमा कहलाती हैं) के व्रत किये जाने के परिणामस्वरूप, भगवान विष्णु के वरदान से एक सुन्दर पुत्र प्राप्त हुआ (जिसे गर्भस्थ अवस्था में माता अनसुईया ने धर्म की शिक्षा दी थी।) जिसका नाम अर्जुन रखा। कृतवीर्य के पुत्र होने के कारण कार्तवीर्याजुन कहलाये। कहीं-कहीं श्री सहस्त्रबाहु की माताश्री का नाम राकादेवी तथा कौशिकी भी उपलब्ध है। अनेक ग्रन्थों में कौशिकी को ही श्री सहस्त्रार्जुन की माता माना गया है जो अपने शील व सौन्दर्य के कारण 'पद्मिनी' कहलाती थी।

श्री कार्तवीर्यार्जुन द्वारा राजगद्दी अस्वीकार करना

मार्कंडेण्य पुराण के अनुसार महराजा कृतवीर्य त्रेतायुग के इतिहास के प्रसिद्ध चक्रवर्ती महाराजा हुए। जब वे संसार से विदा हुए, तो उनके सभी मंत्रियों व पुरोहितों ने मिलकर उनके सुयोग्य, महाबली पुत्र राजकुमार कार्तवीर्यार्जुन को राजगद्दी पर बिठाना चाहा, किन्तु अत्यन्त विचारवान एवं बुद्धिवान कार्तवीर्यार्जुन ने राजगद्दी पर बैठने से इंकार करते हुए कहा कि "एक राजा जो प्रजाजन से उनकी आय का एक भाग कर के रूप में लेकर, यदि उनकी पूरी रक्षा न कर सके, तो वह राजा पाप का भागी होता है व नरक जाता है। अतः मैं तपस्या करके अपनी इच्छा के अनुसार "योगी" का पद ग्रहण कर लूँ, तो मैं पृथ्वी के पालन की शक्ति से युक्त, एकमात्र राजा हो सकता हूँ, तब मैं यह राजगद्दी ग्रहण करूँगा।"

भगवान श्री दत्तात्रेय की आराधना व वरदान प्राप्ति

उनके इस दृढ़ निश्चय को जानकर, सभा में उपस्थित परम् बुद्धिमान, वयोवृद्ध, मुनिश्रेष्ठ गर्ग ने कहा– "राजकुमार यदि तुम्हारा ऐसा विचार है तो विष्णु के अंश रूप में इस पृथ्वी पर अवतारित सह्यपर्वत की गुफाओं में निवास करने वाले भगवान श्री दत्तात्रेय की आराधना करो।"

गर्ग मुनि की बात सुनकर राजकुमार कार्तवीर्य अर्जुन ने दत्तात्रेय जी के आश्रम में जाकर उनका भक्तिपूर्वक पूजन किया, वह उनकी सेवा करते व पूरे समय उनके ध्यान में लीन रहते, अंततः श्री कार्तवीर्यार्जुन की कठोर तपस्या व लगन से संतुष्ठ होकर महात्मा दत्तात्रेय ने वरदान मांगने को कहा, तो राजकुमार कार्तवीर्यार्जुन ने वरदान मांगे कि:-

1. ऐसी उत्तम ऐश्वर्य शक्ति प्रदान कीजिए जिससे मैं प्रजा का पालन करूँ व अधर्म का भागी न बनूँ।
2. मैं दूसरों के मन की बात जान सकूँ व युद्ध में मेरा कोई सामना न कर सके।
3. युद्ध करते समय मुझे एक हजार भुजायें प्राप्त हों, किन्तु वे इनती हल्की हों जिससे मेरे शरीर पर भार न पड़े।
4. मेरी मृत्यु मेरी अपेक्षा श्रेष्ठ पुरुष के हाथों से हो।
5. पर्वत आकाश, जल, पृथ्वी और पाताल में मेरी अबाध गति हो।
6. यदि मैं कभी कुमार्ग पर चलूँ तो मुझे संमार्ग दिखाने वाले उपदेशक प्राप्त हो।
7. मुझे श्रेष्ठ अतिथि प्राप्त हो तथा निरंतर दान करने पर भी मेरा धन कभी भी खत्म न हो।
8. मेरे स्मरण मात्र से सम्पूर्ण राज्य में धन का अभाव दूर हो जाए।
9. आप में मेरी अनन्य भक्ति सदैव बनी रहे।
10. मोक्ष के विषय का मुझे ज्ञान हो।

श्री दत्तात्रेय जी ने राजकुमार कार्तवीर्य को इन सब वरदान को देने के साथ ही, **"चक्रवर्ती सम्राट"** होने का आशीर्वाद भी दिया। तत्पश्चात् कार्तवीर्यार्जुन अपने राजमहल पहुँचे, समस्त मंत्रीगणों, पुरोहितों, प्रजा के समस्त वर्गों को

आमंत्रित किया, सबने प्रसन्नतापूर्वक उनका राज्याभिषेक किया, राजसिंहासन पर आसीन होते ही उन्होंने घोषणा करवायी:- **"आज से मुझे छोड़कर जो कोई भी शस्त्र धारण करेगा या दूसरों की हिंसा में प्रवृत्त होगा, वह लुटेरा समझा जाएगा, उसका मेरे हाथों वध होगा।"**

श्री सहस्त्रबाहु द्वारा श्री दत्तात्रेय की सेवा, पूजन व श्री दत्तात्रेय द्वारा दिये गये वरदानों का विस्तृत वर्णन अनेक ग्रन्थों व पुराणों में प्राप्त है, जिसकी कुछ झलक इस प्रकार है:-

श्रीमद् भगवत गीता में भी श्रीकुशदेवजी राजा परीक्षित को बताते हैं कि- हैहयवंश के अधिपति कार्तवीर्यार्जुन ने अनेक प्रकार से भगवान दत्तात्रेय की सेवा कर प्रसन्न कर लिया, वरदान स्वरूप "एक हजार भुजायें तथा कोई भी शत्रु युद्ध में पराजित न सकें, वरदान पा लिया, साथ ही इन्द्रियों का अबाध बल, अतुल सम्पत्ति, तेजस्विता, वीरता, कीर्ति एवं शारीरिक बल भी कार्तवीर्यार्जुन ने प्राप्त कर, वे "योगेश्वर" हो गये थे।"

मत्स्य पुराण में 43वें अध्याय में भी श्री सहस्त्रबाहु द्वारा महर्षि दत्तात्रेय से मांगे गये चार वरदानों का उल्लेख मिलता है-

"पहला सहस्त्रबाहुओं को प्राप्त करने के लिये मांगा, दूसरा साधु-पुरुष को सताने वाले अधर्मियों को दण्ड देने का अधिकार, तीसरा सम्पूर्ण पृथ्वी पर युद्ध द्वारा विजयी होने व चौथा युद्ध भमि में अपने से किसी बलवान व उत्तम व्यक्ति के हाथों अपनी मृत्यु का वर माँगा।"

भविष्य पुराण के अनुसार भी भगवान दत्तात्रेय ने कार्तवीर्यार्जुन को वरदान दिया कि- "अर्जुन तुम चक्रवर्ती सम्राट होंगे, जो व्यक्ति सांयकाल "नमोस्तु कार्तवीर्याय" वाक्य का उच्चारण करेगा, उसे तिलदान का पुण्य प्राप्त होगा, जो तुम्हारा स्मरण करेगा, उसका धन कभी क्षय नहीं होगा।"

विष्णु पुराण के चौथे अंश के 11 वें अध्याय में भी वर्णित है कि- "सहस्त्रबाहु ने अत्रिकुल में उत्पन्न श्रीविष्णु के विग्रह से उत्पन्न भगवान दत्तात्रेय की उपासना कर, सहस्त्र भुजाएं, अधर्माचरण का निवारण, स्वधर्म का सेवन, युद्ध द्वारा सम्पूर्ण भूमण्डल पर विजय, धर्मानुसार प्रजा पालन, शत्रुओं से अपराज्य तथा त्रिलोक प्रसिद्ध, अपने से अधिक बलशाली पुरुष के हाथों मृत्यु के वर प्राप्ति किये। पद्मपुराण एवं ब्राह्मण पुराण में भी दत्तात्रेय भगवान से प्राप्त वरदानों का विवरण उपलब्ध है।"

मार्केण्डेय पुराण में कार्तवीर्य को एक हजार वर्ष और हरिवंश पुराण में बारह हजार वर्ष तक श्री दत्तात्रेय जी को तपस्या करना बतलाया गया है।

श्री कार्तवीर्यार्जुन का विभिन्न ग्रन्थों व पुराणों में गुणगान

विष्णु पुराण के चतुर्थ अंश के 11वें संख्या 16 में वर्णित है कि- **"यज्ञ, दान, तप, विनय एवं विद्या में कार्तवीर्य सहस्त्रार्जुन की समता कोई राजा नहीं कर सकता है।"** वहीं श्लोक 19 में रावण द्वारा दिग्विजय के लिये माहिष्मती पुरी आने व श्री सहस्त्रबाहु अर्जुन द्वारा रावण को बंदी बनाने की घटना का वर्णन इन शब्दों में किया गया है:-

"एक दिन जब सहस्त्रार्जुन नर्मदा में जलक्रीड़ा कर रहे थे, तब उनकी राजधानी माहिष्मतीपुरी पर दिग्विजय के लिये आये हुए रावण को परास्त कर, पशु के समान बांध कर अपने नगर के निर्जन स्थान में रख दिया। अंत में रावण के नाना मुनि पुलस्त्य के अनुरोध पर रावण को छोड़ा"।

रावण पर विजय प्राप्त करने पर "प्रथम दीपावली" उत्सव

"नंदादीप रहस्यम्" श्री अशोक आनंद की पुस्तक में वर्णित है कि:- रावण को बंदी बनाये जाने के बाद श्री कार्तवीर्य अर्जुन ने माहिष्मती के राज्य दरबार में रावण पर विजय के विजयोत्सव मनाने के लिए जब रावण के दसों सिरों पर दीपक रखकर जलवाये तो उस दस सिर वाले अद्भुत प्राणी को देखकर, वहाँ की प्रजा में आनंद की लहर दौड़ हुई, इसलिए इसमें जलाये गये दीपों की एक स्वभाविक रूप में कतार बन गयी, यहीं दीपकों को कतार में रखकर जलाये जाने की परम्परा ही कालांतर में "दीपावली" उत्सव कहलायी, अर्थात् रावण के दस सिरों पर दीपक जलाना एक घटना थी, उस घटना को यादगार बनाने की पुर्नावृत्ति की परम्परा कालांतर में दीपावली उत्सव बन गया।

इस तरह राजराजेश्वर श्री सहस्त्रसबाहु अर्जुन के दरबार में "प्रथम दीपावली" उत्सव मनाया गया।

इस उत्सव के साक्ष्य में "नन्दा दीप," जिनकी संख्या 11 है, वर्तमान में भी इन्दौर के पास महेश्वर (माहिष्मती)

जिला खरगोन (म.प्र.) में "राजराजेश्वर श्री सहस्त्रार्जुन" के समाधि मंदिर में निरन्तर शुद्ध घी से जल रहे हैं। यहां एक प्रश्न विचारणीय है कि रावण के दस शीश पर जलने वाले दस दीप, ग्यारह कैसे हुए? इस विषय में दो मत हैं, एक तो यह कि रावण के सिर पर रखे जाने वाले दस दीपकों के साथ, उसकी दोनो हाथ के पंजों से बनी अंजलि पर ग्यारहवाँ दीपक रख जाता था या दस दीपक रावण के बंदी काल से हो तथा एक दीपक श्री सहस्त्रार्जुन की समाधि स्थल का हो।

लेकिन लोक मान्यताओं के अनुसार प्रथम दीपावली- श्री राम के वन से आयोध्या वापिस आने पर मनाई गई थी, यह भ्रम पौराणिक साहित्य में वाल्मीकि रामायण (सर्ग 31) एवं रावण संहिता (श्लोक 1304 से 1439) में आए इन प्रसंगों से स्पष्ट होता है कि:- वन से लौटने व श्री राम के राजगद्दी पर बैठने के बाद एक दिन इतिहास पुराण पर चर्चा के समय **श्रीराम** अगस्त्य मुनि से पूछते हैं कि- **"जब रावण पृथ्वी पर विजय प्राप्त कर रहा था, तब वहां कोई शूरवीर राजा नहीं था।"** तब मुनिवर श्री राम को माहिष्मती के राजा कार्तवीर्यार्जुन के द्वारा रावण को बंदी बनाने की कथा सुनाते हैं।

वाल्मीकि रामायण के इस प्रसंग से स्पष्ट होता है कि रावण को श्री सहस्त्राबाहु द्वारा बंदी बनाये जाने की घटना, श्री राम के वनवास से अयोध्या वापिस आने के बहुत समय पहले की है। अर्थात सतयुग के अन्तिम समय याने पुराणों के अनुसार लाखों वर्ष पूर्व व इतिहासकारों के अनुसार ईसा से 5 हजार से 6 हजार वर्ष पूर्व यानी वर्तमान से 7 से 8 हजार वर्ष पूर्व की है। जब श्री सहस्त्रबाहु के दरबार में रावण पर विजय को 15 दिनों तक विजयोत्सव रूप में मनाया गया, जो एक लोकोयुक्ति से स्पष्ट होता है, **"दसोंशीश दस दीपक बारी, नृत्य करे रम्भादिक नारी।"** इस प्रकार **श्रीसहस्त्रबाहु** जी के दरबार में 15 दिनों तक प्रथम दीपावली मनाई गई। **यहीं से प्रथम दीपावली का शुभारंभ हुआ था। अतः श्री राम दीपावली मनाये जाने की घटना के जनक नहीं, अपितु प्रकाशक थे। जिन्होंने उस परम्परा को आगे बढ़ाया जिसकी शुरुआत श्री सहस्त्रबाहु महाराज ने की थी**

क्रमशः अगले अंक में–

शबरी को आश्रम सौंपकर महर्षि मतंग जब देवलोक जाने लगे

'शबरी को आश्रम सौंपकर महर्षि मतंग जब देवलोक जाने लगे, तब शबरी भी साथ जाने की जिद करने लगी।'

शबरी की उम्र 'दस वर्ष' थी। वो महर्षि मतंग का हाथ पकड़ रोने लगी। महर्षि शबरी को रोते देख व्याकुल हो उठे। शबरी को समझाया 'पुत्री इस आश्रम में भगवान आएंगे, तुम यहीं प्रतीक्षा करो। अबोध शबरी इतना अवश्य जानती थी कि गुरु का वाक्य सत्य होकर रहेगा, उसने फिर पूछा- 'कब आएंगे..? महर्षि मतंग त्रिकालदर्शी थे। वे भूत भविष्य सब जानते थे, वे ब्रह्मर्षि थे। 'महर्षि शबरी के आगे घुटनों के बल बैठ गए और शबरी को नमन किया।'

'आसपास उपस्थित सभी ऋषिगण असमंजस में डूब गए।' ये उलट कैसे हुआ। 'गुरु यहां शिष्य को नमन करे, ये कैसे हुआ???'

महर्षि के तेज के आगे कोई बोल न सका। महर्षि मतंग बोले-

'पुत्री अभी उनका जन्म नहीं हुआ।'

'अभी दशरथ जी का लग्न भी नहीं हुआ।'

'उनका कौशल्या से विवाह होगा।' फिर भगवान की लम्बी प्रतीक्षा होगी।

'फिर दशरथ जी का विवाह सुमित्रा से होगा।' फिर प्रतीक्षा..

'फिर उनका विवाह कैकयी से होगा।' फिर प्रतीक्षा..

फिर वो 'जन्म' लेंगे, फिर उनका 'विवाह माता जानकी से होगा।' फिर उन्हें 14 वर्ष वनवास होगा और फिर वनवास के आखिरी वर्ष माता जानकी का हरण होगा। 'तब उनकी खोज में वे यहां आएंगे।' तुम उन्हें कहना 'आप सुग्रीव से मित्रता कीजिये। उसे आततायी बाली के संताप से मुक्त कीजिये, आपका अभीष्ट सिद्ध होगा और आप रावण पर अवश्य विजय प्राप्त करेंगे।'

शबरी एक क्षण किंकर्तव्यविमूढ़ हो गई। 'अबोध शबरी' इतनी लंबी प्रतीक्षा के समय को माप भी नहीं पाई।

'वह फिर अधीर होकर' पूछने लगी- 'इतनी लम्बी प्रतीक्षा कैसे पूरी होगी गुरुदेव?'

महर्षि मतंग बोले- 'वे ईश्वर है, अवश्य ही आएंगे।' यह भावी निश्चित है। 'लेकिन यदि उनकी इच्छा हुई तो

काल दर्शन के इस विज्ञान को परे रखकर वे कभी भी आ सकते हैं। लेकिन आएंगे अवश्य ही!'

जन्म मरण से परे उन्हें जब जरूरत हुई तो प्रह्लाद के लिए खम्बे से भी निकल आये थे। 'इसलिए प्रतीक्षा करना।' वे कभी भी आ सकते है। 'तीनों काल तुम्हारे गुरु के रूप में मुझे याद रखेंगे। शायद यही मेरे तप का फल है।'

शबरी गुरु के आदेश को मान वहीं आश्रम में रुक गई। 'उसे हर दिन प्रभु श्रीराम की प्रतीक्षा रहती थी।' वह जानती थी कि समय का चक्र उनकी उंगली पर नाचता है, वे कभी भी आ सकतें है।

'हर रोज रास्ते में फूल बिछाती है और हर क्षण प्रतीक्षा करती।'

'कभी भी आ सकतें हैं।'

हर तरफ फूल बिछाकर हर क्षण प्रतीक्षा। 'शबरी बूढ़ी हो गई।' लेकिन प्रतीक्षा 'उसी अबोध चित्त से करती रही।'

और एक दिन उसके बिछाए फूलों पर प्रभु श्रीराम के चरण पड़े। 'शबरी का कंठ अवरुद्ध हो गया। आंखों से अश्रुओं की धारा फूट पड़ी।'

'गुरु का कथन सत्य हुआ।' भगवान उसके घर आ गए। 'शबरी की प्रतीक्षा का फल ये रहा कि जिन राम को कभी तीनों माताओं ने जूठा नहीं खिलाया, उन्हीं राम ने शबरी का जूठा बेर खाया।'

'ऐसे पतित पावन मर्यादा, पुरुषोत्तम, दीन हितकारी श्री राम जी की जय हो। जय हो। जय हो। एकटक देर तक उस सुपुरुष को निहारते रहने के बाद वृद्धा भीलनी के मुंह से स्वर/बोल फूटे-'

'कहो राम ! शबरी की कुटिया को ढूंढ़ने में अधिक कष्ट तो नहीं हुआ?' राम मुस्कुराए- 'यहां तो आना ही था मां, कष्ट का क्या मोल/मूल्य?'

'जानते हो राम! तुम्हारी प्रतीक्षा तब से कर रही हूँ, जब तुम जन्मे भी नहीं थे, यह भी नहीं जानती थी कि तुम कौन हो ? कैसे दिखते हो ? क्यों आओगे मेरे पास ? बस इतना ज्ञात था कि कोई पुरुषोत्तम आएगा, जो मेरी प्रतीक्षा का अंत करेगा।' राम ने कहा- 'तभी तो मेरे जन्म के पूर्व ही तय हो चुका था कि राम को शबरी के आश्रम में जाना है।" एक बात बताऊँ प्रभु ! भक्ति में दो प्रकार की शरणागति होती है। पहली 'वानरी भाव' और दूसरी 'मार्जारी भाव'।'

'"बन्दर का बच्चा अपनी पूरी शक्ति लगाकर अपनी माँ का पेट पकड़े रहता है, ताकि गिरे न... उसे सबसे अधिक भरोसा माँ पर ही होता है और वह उसे पूरी शक्ति से पकड़े रहता है। यही भक्ति का भी एक भाव है, जिसमें भक्त अपने ईश्वर को पूरी शक्ति से पकड़े रहता है। दिन रात उसकी आराधना करता है...!" (वानरी भाव)'

पर मैंने यह भाव नहीं अपनाया। '"मैं तो उस बिल्ली के बच्चे की भाँति थी, जो अपनी माँ को पकड़ता ही नहीं, बल्कि निश्चिन्त बैठा रहता है कि माँ है न, वह स्वयं ही मेरी रक्षा करेगी, और माँ सचमुच उसे अपने मुँह में टांग कर घूमती है। मैं भी निश्चिन्त थी कि तुम आओगे ही, तुम्हें क्या पकड़ना...। (मार्जारी भाव)'

राम मुस्कुराकर रह गए!! भीलनी ने पुनः कहा- 'सोच रही हूँ, बुराई में भी तनिक अच्छाई छिपी होती है न... "कहाँ सुदूर उत्तर के तुम, कहाँ घोर दक्षिण में मैं? तुम प्रतिष्ठित रघुकुल के भविष्य, मैं वन की भीलनी। यदि रावण का अंत नहीं करना होता तो तुम कहाँ से आते..?"'

राम गम्भीर हुए और कहा-

'भ्रम में न पड़ो मां! "राम क्या रावण का वध करने आया है..?"'

'रावण का वध तो लक्ष्मण अपने पैर से बाण चलाकर भी कर सकता है।'

'राम हजारों कोस चलकर इस गहन वन में आया है, तो केवल तुमसे मिलने आया है मां, ताकि "सहस्त्रों वर्षों के बाद भी, जब कोई भारत के अस्तित्व पर प्रश्न खड़ा करे तो इतिहास चिल्ला कर उत्तर दे, कि इस राष्ट्र को क्षत्रिय राम और उसकी भीलनी माँ ने मिलकर गढ़ा था।"'

'जब कोई भारत की परम्पराओं पर उँगली उठाये तो काल उसका गला पकड़कर कहे कि नहीं! यह एकमात्र ऐसी सभ्यता है जहाँ, एक राजपुत्र वन में प्रतीक्षा करती एक वनवासिनी से भेंट करने के लिए चौदह वर्ष का वनवास स्वीकार करता है।'

'राम वन में बस इसलिए आया है, ताकि "जब युगों का इतिहास लिखा जाए, तो उसमें अंकित हो कि शासन/प्रशासन और सत्ता जब पैदल चलकर वन में रहने वाले समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचे, तभी वह रामराज्य है।"'(अंत्योदय)

'राम वन में इसलिए आया है, ताकि भविष्य स्मरण रखे कि प्रतीक्षाएँ अवश्य पूरी होती हैं। राम रावण को मारने भर के लिए नहीं आया है माँ!'

माता शबरी एकटक राम को निहारती रहीं। राम ने फिर कहा-

'राम की वन यात्रा रावण युद्ध के लिए नहीं है माता! "राम की यात्रा प्रारंभ हुई है, भविष्य के आदर्श की स्थापना के लिए।"'

'राम राजमहल से निकला है, ताकि "विश्व को संदेश दे सके कि एक माँ की अवांछनीय इच्छओं को भी पूरा करना ही राम होना है।"'

'राम निकला है, ताकि "भारत विश्व को सीख दे सके कि किसी सीता के अपमान का दण्ड असभ्य रावण के पूरे साम्राज्य के विध्वंस से पूरा होता है।"'

'राम आया है, ताकि "भारत विश्व को बता सके कि अन्याय और आतंक का अंत करना ही धर्म है।" राम आया है, ताकि "भारत विश्व को सदैव के लिए सीख दे सके कि विदेश में बैठे शत्रु की समाप्ति के लिए आवश्यक है कि पहले देश में बैठी उसकी समर्थक सूर्पणखाओं की नाक काटी जाए और खर-दूषणों का घमंड तोड़ा जाए।"' और

'राम आया है, ताकि "युगों को बता सके कि रावणों से युद्ध केवल राम की शक्ति से नहीं बल्कि वन में बैठी शबरी के आशीर्वाद से जीते जाते हैं।"'

शबरी की आँखों में जल भर आया था। उसने बात बदलकर कहा- 'बेर खाओगे राम..?" राम मुस्कुराए, 'बिना खाये जाऊंगा भी नहीं मां!'

शबरी अपनी कुटिया से झपोली में बेर लेकर आई और राम के समक्ष रख दिये। राम लक्ष्मण के समक्ष बैठ बेर खाने लगे तो माता शबरी ने पूछा- बेर मीठे हैं न प्रभु..?"

'यहाँ आकर मीठे और खट्टे का भेद भूल गया हूँ मां! बस इतना समझ रहा हूँ कि यही अमृत है।" शबरी मुस्कुराई, फिर बोली- सचमुच तुम मर्यादा पुरुषोत्तम हो, राम!'

'मर्यादा-पुरुषोत्तम भगवान श्री राम को बारंबार सादर वन्दन'

'जय सनातन'

घर में ही एक्सरसाइज़ करके पेट कर सकते हैं कम

किसी को भी बाहर निकला पेट पसंद नहीं आता है। ये ना सिर्फ पर्सनैलिटी पर असर डालता है बल्कि आपकी सेहत को भी नुकसान पहुंचा सकता है। लेकिन आप घर पर ही एक्सरसाइज़ से बढ़ते पेट को कंट्रोल कर सकती हैं:

पेट निकलता जा रहा है लेकिन बिजी शेड्यूल के चलते जिम जाने का वक्त नहीं मिलता? तो घबराने की बात नहीं है। हम आपको यहां कुछ ऐसी एक्सरसाइज के बारे में बता रहे हैं जिन्हें घर में किया जा सकता है। खास बात यह है कि ये घरेलू व्यायाम इतने पावरफुल हैं कि चर्बी का सफाया कर देंगे।

लेग रेज एक्सरसाइज

लेग रेज पेट की एक एक्सरसाइज है जिसके लिए किसी बार पर लटकना होगा या सपाट जमीन पर लेटना होगा। अब पेट की मसल्स टाइट करें और दोनों पैरों को मिला लें। अब पैरों को एकसाथ घुटने मोड़े बिना ऊपर उठाएं। जितना हो सके, ऊपर लाएं और फिर धीरे-धीरे नीचे ले जाएं। ऐसे लगातार 1 मिनट करने की कोशिश करें।

प्लैंक एक्सरसाइज

पेट टाइट करने के लिए प्लैंक एक्सरसाइज बढ़िया है। सबसे पहले जमीन पर पेट के बल लेट जाएं। अब दोनों हथेलियों और पंजो पर शारीरिक भार ले आएं। अपनी गर्दन, कमर और कूल्हों को एक सीधी रेखा में करें। फिर कोहनियों को कंधों के ठीक नीचे जमीन पर रखें और सामने देखें। 1 मिनट तक ऐसे ही रहें और पेट की मसल्स टाइट रखें।

हाई नी एक्सरसाइज

पेट की यह एक्सरसाइज जांघों और कूल्हों का फैट भी हटाती है। सबसे पहले सीधे खड़े हो जाएं। अब हाथों को कोहनी तक कमर के बराबर रखें और दोनों हथेलियों को जमीन की तरफ करके खड़े हो जाएं। सांस अंदर लें और दायां घुटना दाईं हथेली तक उठाएं। फिर इसे नीचे ले जाते हुए बायां घुटना बाईं हथेली तक उठाएं। इस तरह लगातार 1 मिनट तक एक ही जगह रनिंग करें।

जंपिंग जैक एक्सरसाइज

जंपिंग जैक पूरे शरीर की चर्बी खत्म करती है। इसे करने के लिए सीधे खड़े हो जाएं और दोनों हाथों को पैरों के

साइड में रखें। अब कूदें और पैरों को चौड़ाकर खड़े हो जाएं। इस दौरान आपको दोनों हाथ सीधे सर के ऊपर ले जाने हैं और ताली बजानी है। इसके बाद कूदें और स्टार्टिंग पोजिशन में आ जाएं। ऐसे लगातार 1 मिनट करें।

ऐसे करें व्यायाम

इन एक्सरसाइज को करने के लिए आपको 10 मिनट से भी कम समय निकालना होगा। मगर इनमें से कोई भी एक्सरसाइज करने से पहले एक बार अपने डॉक्टर से जरूर कंसल्ट करें। पेट की इन एक्सरसाइज को शुरूआत में 1-1 मिनट करें। हर एक्सरसाइज के बीच में 30 सेकेंड का आराम लें और फिर अगला व्यायाम करें।

हाई ब्लड प्रेशर की परेशानी की शिकार हैं काफी महिलाएं नींद और एक्सरसाइज में छुपा है हाइपरटेंशन का इलाज

हाई ब्लड प्रेशर को हाइपरटेंशन भी कहते हैं। आंकड़ों के अनुसार आजकल हाइपटेंशन की शिकार महिलाओं की संख्या तेजी से बढ़ रही है। लाइफस्टाइल की कुछ गलत आदतें और बर्थ कंट्रोल पिल्स हाई ब्लड प्रेशर के रिस्क को बढ़ा देती हैं। हाइपरटेंशन से हार्ट अटैक का खतरा रहता है और किडनी पर भी बुरा असर पड़ता है। आज वर्ल्ड हाइपरटेंशन के मौके पर हनमें डॉक्टरों से इस बारे में बात की:

विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रिपोर्ट के मुताबिक, पुरुषों के मुकाबले कार्डियोवस्कुलर डिजीज से प्रभावित होने वाली महिलाओं की संख्या लगातार बढ़ रही है जिनमें से बहुत बड़ी तादाद 40 वर्ष से कम उम्र की महिलाओं की है। वहीं ग्लोबल वर्डन ऑफ डिजीज के आंकड़ों के अनुसार, 2017 में हाइपरटेंशन की वजर से दिल से जुड़ी समस्याओं से पीड़ित महिलाओं की संसख्या तकरीबन 18 लाख थी जो 2022 में 19.4 लाख हो गई। अध्ययनों के अनुसार, इस समय 28 में से तकरीबन 18 महिलाएं हाइपरटेंशन यानी ब्लड प्रेशर की बीमारी से जूझ रही हैं। इसमें 4.6 महिलाएं हाई बीपी की शिकार हैं और बाकी लो बीपी की।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, तनावग्रस्त जीवनशैली, धूम्रपान, मोटापा, डायबिटीज, नींद की कमी, मानसिक अवसाद, भोजन में अधिक नमक का प्रयोग, लीवर की दिक्कत एवं थायराइड की समस्या हाइपरटेंशन के लाख कारण होते हैं।

महिलाएं क्यों ज्यादा शिकार?

मेडिकल विशेषज्ञों का कहना है कि हाइपरटेंशन दो प्रकार का होता है, पहला प्राइमरी हाइपरटेंशन और दूसरा सेकेंडरी हाइपरटेंशन। प्राइमरी हाइपरटेंशन आमतौर पर लोगों में बढ़ती उम्र के साथ देखने को मिलता है, जो दवाइयों से कंट्रोल हो जाता है। वहीं सेकेंडरी हाइपरटेंशन वह स्थिति है जो किसी बीमारी या उसके इलाज के तहत लेने वाली गोलियों के कारण होती है। सेकेंडरी हाइपरटेंशन कम उम्र में भी हो सकता है। गायनीकॉलजिस्ट डॉक्टर सपना अरोड़ा कहती हैं कि गर्भावस्था के दौरान महिलाओं में कई तरह के शारीरिक बदलाव होते हैं जिसके कारण शरीर में खून की मात्रा बढ़ जाती है। ऐसे में हाई ब्लड प्रेशर होने का खतरा बढ़ जाता है। इसकी वजह मेनोपॉज, पीसीओएस, गेस्टेशनल डायबिटीज और समय से पहले डिलीवरी हैं मगर इन सबसे ज्यादा मायने रखता है महिला का लाइफस्टाइल। मेट्रो हॉस्पिटल में कार्डियॉलजिस्ट नितिन अरोड़ा कहते हैं कि महिलाओं में ज्यादा स्ट्रेस हार्ट अटैक होने की खास वजह बनता है। चूंकि महिलाएं मल्टीपल टास्क करती है, तो उनके टेंशन भी ज्यादा होते हैं।

शरीर पर कैसे डालता है असर

हाइपरटेंशन की समस्या आखिर कैसे हमारे शरीर पर असर डालती है? इसके जवाब में क्यू.आर.जी सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल में किडनी विभाग के डायरेक्टर डॉ. श्री राम काबरा बताते हैं, सुस्त जीवनशैली और खराब खानपान के कारण हाई ब्लड प्रेशर हो सकता है। हाई ब्लड प्रेशर में कई बार लक्षण नहीं नजर आते। यह किडनी और दिल पर बुरा असर डालता है। किडनी शरीर में एक फिल्टर का काम करती हैं और खून में मौजूद गंदगी को बाहर निकाल देती हैं। लेकिन हाई ब्लड प्रेशर के कारण किडनी फेल हो जाती है।

ये हैं हाइपरटेंशन के लक्षण

- सिर में अत्यधिक दर्द रहना
- लगातार थकावट का अनुभव करना
- सीने में दर्द रहना
- सांस लेने में कठिनाई
- देखने में दिक्कत
- पेशान में खून आना

– गर्दन एवं बाहों में दर्द का लगातार बने रहना।

जरूरी है रखना कुछ बातों का ध्यान

हाइपरटेंशन की समस्या में किन बातों का ध्यान रखना चाहिए? इसके जवाब में कार्डियोलॉजिस्ट नितिन अरोड़ा कहते है कि हाइपरटेंशन की समस्या से निजात पाने के लिए डॉक्टर के द्वारा दिए गए निर्देशों का पालन करें। जिन दवाइयों को डॉक्टर ने लेने को कहा है, उन्हें समय पर लें और समय-समय पर ब्लड प्रेशर जांचते रहें। इसके अलावा अपने कामों को समय पर पूरा करने की कोशिश करें ताकि आपको मानसिक तनाव से ना गुजरना पड़े। रोज एक्सरसाइज करें। बैलेंस डाइट लें। नमक की मात्रा कम से कम लें। अपने आहार में पर्याप्त सब्जियां, फल, मांस और दूध को शामिल करना भी एक अच्छा उपाय है। श्रीराम काबरा कहते हैं कि रोजाना कम-से-कम आधा घंटा ब्रिस्क वॉक, जॉगिंग, साइकलिंग, स्विमिंग करें। वॉक 1 मिनट में 40-50 कदम, ब्रिस्क वॉक 1 मिनट में 75-80 कदम और जॉगिंग 150-160 कदम चलना फायदेमंद होतो है। शराब का सेवन और धूम्रपान ना करें। तले भुने एवं फास्ट फूड से परहेज करें। मौसमी फल व सब्जियों का सेवन करें।

होम्योपैथी या हिंदपैथी

"होम्योपैथी" शब्द का प्रयोग पहली जर्मनी के डॉ. हैनिमैन के द्वारा किया गया जिन्हे होम्योपैथी का जनक भी कहा जाता है। परन्तु होम्योपैथी जिन सिद्धांतों पर कार्य करती है वे सिद्धांत प्राचीन भारत में चिकित्सा सिद्धांत के रूप में हजारों वर्ष पूर्व से उपस्थित रहे एवं इस बात का प्रमाण भी मैंने अपनी पुस्तक "प्राचीन भारतीय ग्रंथों में होम्योपैथी चिकित्सा सिद्धांत के दर्शन (Vedic Basis of Homeopathy Principles)" में विस्तृत रूप से दिया है एवं तथ्यों के आधार पर प्रमाणित भी किया है। चूँकि इस चिकित्सा का कोई औपचारिक नाम प्राचीन भारतीय पुस्तकों में मुझे नहीं मिल पाया अत: मैंने पाठकों की सुविधा के लिए इसे "हिंदपैथी" कहना बेहतर समझा।

इस पैथी के चिकित्सा सिद्धांत, डॉ. हैनिमैन एवं हिप्पोक्रेट्स (जिन्हे आधुनिक चिकित्सा सिद्धांत का जनक कहा जाता है) के जन्म के हजारों वर्ष पूर्व से संस्कृत में लिखित भारतीय ग्रंथों में वर्णित मिलते हैं जिन्हे भारतीय परम्पराओं में स्वीकार्यता भी प्राप्त थी। परन्तु कालान्तर में इस चिकित्सा पद्धति को फलने - फूलने का अवसर नहीं मिला।

आज इस अमृत काल में हमारे लिए यह एक स्वर्णिम अवसर है कि हम फिर से होम्योपैथी के समग्र विकास में भारतीय योगदान को रेखांकित करते हुए गौरवान्वित हों एवं इस बात को समझने का प्रयत्न करें कि होम्योपैथी कोई विदेशी उपज नहीं बल्कि भारत की परंपरागत हिन्दपैथी है जो कालांतर में किन्ही कारणों से लुप्तप्राय हो गयी।

एलोपैथी के बाद जन- मानस में हिंदपैथी सबसे लोकप्रिय है एवं हर गाँव - शहर - गली - मोहल्ले में इस पैथी के चिकित्सक एवं इनकी औषधियां उपलब्ध हैं। भारत में इस पैथी का सबसे बड़ा बाजार है। परन्तु आजादी के बाद इस पैथी को जितना सम्मान एवं विकास मिलना चाहिए था वह दुर्भाग्य से नहीं मिल पाया। अब तक एक भी सरकारी कम्पनी इस पैथी के औषधि - बाजार में नहीं उतरी है जबकि इसका सबसे बड़ा बाजार भारत में हैं एवं भारत विश्व में इसका सबसे बड़ा निर्यातक बन सकता है। भारतीय सरकारी क्षेत्र की किसी कंपनी के न होने के कारन इसका लाभ चंद जर्मन विदेशी कम्पनियाँ उठा रही हैं। आज भी इस पैथी के युवा चिकित्सक अवसरों की कमी से जूझ रहे हैं एवं उपेक्षित महसूस करते हैं।

आवश्यकता है कि हम होम्योपैथी के इतिहास पर फिर से नजर डालकर इसमें अवसर की अपार संभावनाओं को तलाशें एवं MAKE IN INDIA के तहत इस दिशा में यदि भारत सरकार की तरफ से पहल करते हुए एक हिंदपैथी फार्मास्यूटिकल कंपनी की स्थापना की जाती है तो न सिर्फ भारत इस पैथी के बाजार में विश्व का सबसे बड़ा निर्यातक बन सकता है बल्कि सैकड़ों की तादाद में अपने युवको के लिए रोजगार का सृजन भी कर सकता है द्य इससे इस पैथी के सर्वोत्तम औषधि के उत्पादन में भारत आत्मनिर्भर बनेगा वहीं यह कदम भारत में इस पैथी के सर्वांगीण विकास में मील का पत्थर साबित होगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

डॉ आशीष कुमार जायसवाल
BHMS (Cal.), M.D. (Hom),
Ph.D. (Hom), MBA (HCA)
Email: bestforcure@gmail.com
Contact: +91 9953321029

'हमारे आसपास के औषधीय पौधेःअजूबा' (स्वास्थ्य श्रृंखला)

अनिल कुमार जायसवाल
कार्यकारी सम्पादक

'इस जादुई पौधे का नाम है अजूबा (Wonderful)या पत्थरचट्टा !'

आयुर्वेद के मुताबिक, पत्थरचट्टा या अजूबा के पौधे को पणपुट्टी , पाषाणभेद और भष्मपथरी के नाम से भी जाना जाता है। इसके अलावा इसे एयर प्लांट, कैथेड्रल बेल्स, लाइफ प्लांट और मैजिक लीफ के नाम से जाना जाता है। वहीं मेडिकल सांइस में इसे ब्रायोफिलम पिन्नाटम कहा जाता है।यह सदाबहार पौधा है जो पूरे भारत में पाया जाता है। खोखले डंठल वाला यह लाल या हरे रंग का पौधा लम्बाई में 3-4 फीट का होता है। इसके पत्ते थोड़े मोटे और थोड़ी-थोड़ी दूरी पर होते हैं। यह पथरी के इलाज के साथ-साथ पेट से विषाक्त पदार्थों को बाहर निकालने में मदद करता है।

आयुर्वेद (Ayurveda) के अनुसार, पत्थरचट्टा में तमाम तरह के औषधीय गुण पाए जाते हैं और इसका प्रयोग कई तरह की बीमारियों की दवा बनाने में किया जाता है। इस पौधे की पत्तियां स्वाद में खट्टी और नमकीन होती हैं।

आमतौर पर आपने किसी भी पौधे को उगाने के लिए या तो उसके बीज बोए होंगे या फिर कटिंग से उसे लगाया होगा, लेकिन यह पौधा ऐसा भी है, जिसे लगाने के लिए आपको इन दोनों में से किसी भी चीज की जरूरत नहीं होती. यही इसका अद्भुत गुण है।

आप इसकी एक पत्ती से ही हजारों पौधे उगा सकते हैं. दिलचस्प बात तो ये है कि इसके लिए कोई खास मेंटेनेंस भी नहीं चाहिए लेकिन ये है बहुत ही चमत्कारी चीज!!

इसको पत्तों से आराम से उगाया जा सकता है बीज की जरूरत नही. आप न भी चाहें तो अगर इसकी एक भी पत्ती आपके बगीचे तक पहुंच गई तो पौधे निकल ही आएंगे.

जैसा इस पौधे का नाम अजूबा है, वैसे के अनोखे इसके गुण भी हैं। ये पौधा अद्भुत है जो उगता भले ही बड़ी आसानी से हो लेकिन यह कई मुश्किल मर्जों की अचूक दवा है।

'पत्तों के किनारे से निकल आते हैं पौधेः'

पत्थरचट्टा या ज्ञंसंदबीवम च्पददंजं वत ठतलवचीलस. सनउ च्संदज के किनारे से निकले छोटे-छोटे नए पौधे साफ तौर पर देखे जा सकते हैं. इन पौधों को पत्तियों से निकालकर अलग किया जा सकता है। वैसे पत्तों के किनारे मौजूद छोटे-छोटे स्प्राउट्स से दोबारा पौधे उग आते हैं जिन्हें इसी तरह इकट्ठा करके इसका इस्तेमाल दवाइयां बनाने में किया जाता है।

'यह अनेक रोगों को जड़ से खतम कर सकता है।'

(Source: Ayurvedic Vaidyashala)

पत्थरचट्टा या अजूबा का पत्ता या पौधा स्वास्थ्य के लिए बेहद फायदेमंद माना जाता है। आयुर्वेद में भी अजूबा या पत्थरचट्टा के विशेष औषधीय गुणों के बारे में बताया गया है।

पथरी की समस्या है तो पत्थरचट्टा आपकी सेहत के लिए रामबाण औषधि है। अगर किसी व्यक्ति को किडनी से संबधित कोई भी समस्या है, तो उसके लिए अजूबा का पौधा या इसके पत्ते (।रवबइं ां चंजजं) बेहद फायदेमंद होते हैं।

अजूबा का पत्ता आपकी किडनी में पथरी की समस्या को जड़ से मिटाने में सक्षम है। यह पेट से विषाक्त पदार्थों को बाहर निकालने के लिए भी प्रयोग में लाया जाता है।

यह मूत्र विकारों में भी फायदेमंद है। मूत्र विकारों (urinary disorders) को दूर करने के लिए आयुर्वेद में सदियों से पत्थरचट्टा का इस्तेमाल हो रहा है। अगर आप इसका काढ़ा पीते हैं तो पेशाब में जलन, रुक-रुक पेशाब

आने जैसी परेशानियां दूर हो सकती हैं। इसके अलावा पत्थरचट्टा बवासीर की समस्या को दूर करने के लिए भी उपयोगी माना जाता है।

पत्थरचट्टा या अजूबा का पत्ता (Ajooba ka patta) तोड़कर गरम पानी के साथ रोज सुबह खाली पेट रोज सेवन करने से किसी भी व्यक्ति को पथरी की समस्या से छुटकारा मिल सकता है।

पित्ताशय में पथरी की समस्या वाले व्यक्तियों को अजवाइन और अजूबा के पत्तों को पीसकर पेस्ट बनाकर इसमें एक चम्मच गोखरू मिलाकर सुबह खाली पेट सेवन करें तो लाभ मिलता है।

अगर किसी व्यक्ति को पेट में ऐंठन या फिर दर्द की शिकायत रहती है तो उसे अजूबा के पत्ते का रस सोंठ के चूरन में मिलाकर खाने से आराम मिलता है।

इसके लिए आपको पत्थरचट्टा के पत्तों का गुनगुने पानी के साथ सेवन करना है। ऐसा रोज करने से आपको पथरी की समस्या से राहत मिलेगी। अच्छे परिणाम के लिए इसके 2 पत्तों का खाली पेट सेवन करें। अगर आप पत्थरचिट्टा के रस में सौंठ का चूर्ण मिलाकर सेवन करते हैं तो पेट दर्द से भी राहत पा सकते हैं।

इसके अलावा अजूबा के अन्य चमत्कारिक लाभ भी हैं: यह

चोट या घाव भरने में लाभकारी,

खूनी दस्त से दिलाता है निजात

फोड़े, फुंसी से मिलती है निजात

ब्लडप्रेशर की समस्या में लाभकारी

ल्यूकेमिया में लाभकारी योनि से संबधिंत रोगों में लाभकरी ,यह वेजाइनल इंफेक्शन को ठीक करता है।सिरदर्द की समस्या में बहुत लाभकारी है और आंखों के लिए भी लाभकारी है।

'लेकिन अजूबा का पत्ता प्रयोग करते समय परहेज भी है जरूरी'

अगर आप ऊपर दी गई किसी भी समस्या से ग्रसित हैं तो आप इन उपायों को अपना सकते हैं, लेकिन इन उपायों के साथ आपको कुछ परहेज भी ध्यान से करने हैं।

इन उपायों के दौरान आपको चावल का सेवन नहीं करना चाहिए। वहीं इन उपायों को करने से पहले एक बार अपने डॉक्टर से सलाह जरूर ले लेनी चाहिए।

दूध पिलाने वाली मां को भी पत्थरचट्टा की पत्ती नहीं पीनी चाहिए।

मातृ शक्ति की कलम से

वैश्वीकरण व्यापार का नाम है-मर्दर्स डे

माँ की कब और कहां अभिलाषा होती है कि उनके मातृत्व स्नेह को, उनके कार्यों को, अनावश्यक पैसे खर्च करके,उन्हें महंगे उपहार देकर, किसी आलीशान होटल में ले जाकर महंगा भोजन करवा कर खुश किया जाए, वो भी उनके ही बच्चों के द्वारा। मां की इच्छा सदैव होती है कि उनके बच्चे उनकी दी गयी सीख, संस्कारों है. का मान रखें, अपने साथ-साथ अपने परिवार के लोगों के साथ सौहार्द व स्नेहपूर्ण वातावरण बनाने में सदैव प्रयासरत रहें। हमारी पीढ़ी तक तो कभी किसी ने ऐसे थे शब्द- मदर्स डे नही मनाया। ना ही अपनी माँ का दिल दुखाया उन्हें - हैप्पी मदर्स डे कहकर। हमनें तो अपनी माँ को खुश करने के लिए उनके ही हाथों से बनाये गये, भोजन, कपड़े, स्वेटर, स्कार्फ पहनकर ही उनके प्रति अपना अथाह प्यार दिखलाया। माँ का कभी-कभी अपने बच्चों से बात ना करने पर, बार-बार उनको तंग करना, ताकि वो हमें डांट ही दें, जिससे हमें लगे, माँ ने मुझसे बात की। उन्हें खुश करने के लिए उनके पसन्द के भोजन, उनसे ही बनवाना और जानबूझ कर एक रोटी ज्यादा खाकर उनके प्रति अपना स्नेह-समर्पण दिखलाना। सच कहती हूँ ऐसी चाहत और मांग किसी मदर्स डे के आने की प्रतीक्षा नहीं करती थी, बल्कि तब ज्यादा बलवती होती थी, जब माँ किसी बात को लेकर परेशान होतीं थी, माँ उदास होती थीं, माँ किसी घरेलू कारणों से अपने आपको असहाय पाती थीं- हमारी पीढ़ी तो माँ के हाथ से बनी भात-चोखा,बचा हुआ दिन का भात, उसे माँ क्या से क्या बना देती थी, जिसे खाने को पहले माँ बैठती थी, देखते ही देखते हम सभी भाई-बहन उस खाने पर ऐसे टूट पड़ते थे मानो किसी ने कोई अमृत दे दिया है, जो अभी नहीं खाया तो कभी नहीं मिलेगा। उनने द्वारा बनाई रोटी-सब्जी खाकर ही हम तृप्त हो जाते थे, अभी कुछ दिन पहले तक। माँ बनाती थी तब कुछ विशेष व्यंजन अपने हाथों से, जब उनके बच्चों के लिए कोई विशेष प्रयोजन होता था फिर वो चाहे जन्मदिवस हो, परीक्षा का परिणाम हो, सगाई, शादी से लेकर कोई भी मौका हो। तब अपने बच्चों को विशेष बतलाने के लिए ये माँ करती थी। आज सिर्फ और सिर्फ हमारी पीढ़ियों के

अंदर पश्चिमी संस्कृति की नकल करने की होड़ मची हुई है,जहां देखिये उस दिन रेस्तरां से लेकर फूल,चॉकलेट,केक जैसी चीजों का व्यापार बढ़ाया है। आज ये पैसे खर्चते हैं और अपने आप को औरों से अलग,बड़ा दिखलाने का प्रयास करते हैं। (जिससे समाज में एक वर्ग के भीतर आपसी वैमनस्यता का भाव बढ़ता है।)

अंत मे इतना ही कहना चाहूंगी कि अपनी भारतीय संस्कृति, अपनी परंपराओं को कभी मत भुलाइये, अपने माँ-पापा की उन छोटी-छोटी अनकही बातों को समझने का प्रयास कीजिये, जिस दिन वो वृद्धावस्था में पहुंच जाएं उनकी अंतिम श्वास अपने बच्चों को देखकर निकले- तब समझ लीजियेगा- हर दिन हम सबके लिए मातृदिवस, पितृदिवस हो जाएगा।

पुष्पलता जायसवाल (पावनी),
ज्योतिषिचार्या

श्री मधुबगरप्पा जी शिक्षामंत्री कर्नाटक

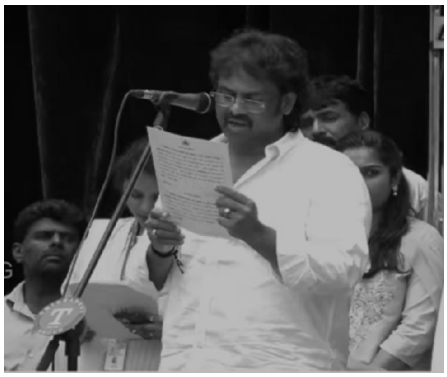

'कर्नाटक सरकार के नए मंत्री (शिक्षा मंत्री) के रूप में शपथ लेने वाले सोराबा विधानसभा क्षेत्र के विधायक श्री मधुबंगरप्पा को हमारे कलार समाज की ओर से हार्दिक बधाई

Soraba Constituency's MLA Shri. Madhu Bangarappa got Cabinet Minister Post under Siddaramayya Govt (Karnataka State)

मीनू गुप्ता जायसवाल,
कार्यकारी सम्पादक

विकास राय ने किया उपभोक्ता आयोग में पदभार ग्रहण

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

ग्वालियर। न्यायालय उपभोक्ता विवाद प्रतितोषण आयोग ग्वालियर के नव पदस्थ अध्यक्ष विकास राय ने अपना पदभार ग्रहण किया।

मध्य प्रदेश शासन खाद्य नागरिक आपूर्ति मंत्रालय भोपाल एवं चयन समिति म.प्र. उच्च न्यायालय, जबलपुर के निर्णय अनुसार न्यायालय जिला उपभोक्ता विवाद प्रतितोषण आयोग ग्वालियर में अध्यक्ष (जिला न्यायाधीश समकक्ष) पद पर उनकी पदस्थापना के आदेश जारी किए गए। उल्लेखनीय है कि विकास राय भोपाल के वरिष्ठ अधि वक्ता है। उन्हें उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम का विषय विशेषज्ञ माना जाता है। नवीन उपभोक्ता अधिनियम 2019 अंतर्गत पहली बार उच्च चयन समिति ने अधिवक्ताओ में से विकास राय की योग्यता, ज्ञान और अनुभव के आधार पर नियुक्त किया गया है। निश्चित ही उच्च न्यायालय के इस निर्णय से उपभोक्ता हित संरक्षण को बल मिलेगा। जनमानस को विश्वास है कि श्री राय अपनी स्पष्ट एवं सकारात्मक कार्यशैली से उपभोक्ता न्याय के क्षेत्र में उच्च कीर्तिमान स्थापित करेंगे।

मीनू गुप्ता जायसवाल,
कार्यकारी सम्पादक
जायसवाल जागृति

जायसवाल जागृति के नये कार्यकारी सम्पादक बने श्री अनिल कुमार जायसवाल

जायसवाल जागृति पत्रिका में स्वास्थ्य सम्बन्धी स्तम्भ में स्वास्थवर्धक तथा निरोगी काया के लिए चिकित्सा क्षेत्र में हुए अनुसंधानों को दृष्टिगत रखते हुए सभी उम्र के पाठकों हेतु वनस्पति व आयुविज्ञान सम्बंधित उपयोगी सूचनाएं संकलित कर प्रकाशित किये जाने का दायित्व श्री अनिल कुमार जायसवाल जी को दिनांक 13.5.23 की बैठक में माननीय श्री कृष्ण दास चौधरी जी, संस्था के मार्गदर्शक द्वारा दिया गया। श्री अनिल कुमार जायसवाल जी भारत सरकार के कई मंत्रलायों व विभागों में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है साथ ही जायसवाल जागृति संस्था के लिए इनका समर्पण सराहनीय रहा है। भारत सरकार के स्वास्थ विभाग/मंत्रालय से सेवानिवृत्ति के पश्चात् भी कई महत्त्वपूर्ण विषयों पर अब भी अपना अमूल्य सहयोग प्रदान कर रहे है।

श्री अनिल कुमार जी के दृढ़ संकल्प तथा संस्था के प्रति निरन्तर सहयोग की भावना से प्रभावित होकर इनको राष्ट्रीय सचिव (विज्ञापन संयोजक) की जिम्मेदारी दी गयी है इसके साथ ही इन्हें जायसवाल जागृति पत्रिका में कार्यकारी सम्पादक की भी जिम्मेदारी दी गयी जिसका सभी उपस्थिति पदाधिकारियों ने स्वागत किया। सम्पादक मण्डल इनको नयी जिम्मेदारी के लिए शुभकामना देता है तथा यह विश्वास है कि इनके योगदान से जायसवाल जागृति पत्रिका में और अधिक महत्त्वपूर्ण उपयोगी सामग्री पाठको के लिए उपलब्ध हो सकेगी।

नर्बदेश्वर प्रसाद जायसवाल

भूल-सुधार

जायसवाल जागृति पत्रिका के अक्टूबर-मार्च 2022-23 विशेषांक में प्रकाशित "श्रीमति काव्या जायसवाल डॉक्टर उपाधि से सम्मानित" समाचार में इनके पुस्तक का नाम "Waking Up In The Eye Of Strom" के स्थान पर "Walking Up In The Eye Of Strom" टंकित हो गया था। इस त्रुटि के लिए सम्पादक मण्डल क्षमा प्रार्थी है।

घरेलू नुस्खे

1. बेसन की बिना नमक की रोटी शुद्ध घी में चुपड़ कर खाने से अथवा साढ़े तीन माशे सुखा धनिया में दस ग्राम शक्कर मिलाकर खाने से पित्तज जोड़ों का दर्द ठीक होता है।
2. सिरका और मीठा (तिल का) तेल मिलाकर जोड़ों पर मालिश करने से जोड़ों के दर्द में लाभ मिलता है।
3. सुबह-शाम गाय का ताज़ा घी दो-चार बूंदें रुई से नाक में टपकाने से आधा शीश की पीड़ा जड़ से मिट जाती है। साथ ही नाक से खून गिरना भी रुक जाता है। तथा ताज़ा नींबू का रस निकालकर नाक में डालने से नकसीरी बन्द हो जाती है।
4. नारियल के पानी की दो-तीन बूंदें नाक में टपकाने से आधा शीश का दर्द ठीक हो जाता है।
5. प्याज़ का रस और शहद बराबर मात्रा में मिलाकर लगाने से बाल झड़ना बंद हो जाते हैं।
6. बरगद की नरम कोंपलें और मसूर बराबर मात्रा में लेकर गाय के दूध में पीसकर लगाने से चेहरे के काले दाग मिटजाते हैं।
7. बादाम गिरी, साफ की हुई बड़ी सौंफ तथा कूजे वाली मिश्री तीनों को बराबर मात्रा में लेकर कूटपीस कर बारीक चूर्ण बनाकर शीशे के बर्तन में रख लें। रात को सोने से पहले एक चाय का चम्मच दूध के साथ चालीस दिन तक लेने से दिमागी कमज़ोरी दूर होगी और चश्मा उतर जायेगा।
8. दूध में घी मिलाकर पीने या सूँघने से नकसीर बंद हो जाती है।
9. यदि गले तक छाले हो गये हों तो शहतूत खाइये या उसका रस पीजिये।
10. हरा धनिया चबाने से जीभ के छाले मिटते हैं। तथा धनिये को पानी में पीसकर लेप करने से तिल एवं मस्से दूर हो जाते हैं।
11. थोड़ा नमक, 4 काली मिर्च और 4 लौंग पीसकर आधी कटोरी पानी में उबालकर पीने से पेट के अफारे से आराम मिलता है।
12. रात में तांबे के बर्तन में रखा हुआ पानी सवेरे पीने से उच्च रक्तचाप कम होता है तथा इसके नियन्त्रण में मदद मिलती है।
13. निम्न रक्तचाप में रात को भीगी हुई किशमिश प्रातः खाने से लाभ मिलता है। पूरा लाभ लेने के लिए एक महीना खायें।

-डॉ. प्रमोद कुमार गुप्ता; मैरठ

मेरी मां की 90वीं वर्षगांठ पर मैंने उनके लिए कुछ पंक्तियां लिखी है।

जो पीछे मुड़ के देखा तो,
कुछ यादें बुला रही थीं,
जन्म से अब तक के सफर की,
सारी बातें बता रही थीं।।

पैदा हुई आंख खुली तो एक प्यारी सी गोद का हुआ एहसास।

पापा जी तो चाहते लड़का ही थे,
मेरे जन्म पर पैर तले जमीन खिसकने का किस्सा हंस-हंसकर सुनाते थे।।

घर में सबसे छोटी होने का फायदा मुझे मिला था,
प्यार मुझे पापा जी और मम्मी से सबसे ज्यादा मिला था।।

जब मैं रात का खाना न खाकर छत पर जाकर सो जाती थी,
तो मेरी मां आकर मुझे अपने हाथों से खाना खिलाती थी।

यही नहीं हर साल क्लास में फर्स्ट आने पर, मेरी मां मुझे गुड़िया दिलाती थी
और गुड़िया के खेल का सामान जुटाने में भी दिलचस्पी दिखाती थी।।

मेरी मां है बड़ी सादगी से भरी और भोली भाली,
उन्होंने हम सब पर किया बहुत विश्वास,
संस्कार और शिक्षा दी हमें बहुत खास,
और हम सब ने भी कभी नहीं तोड़ा उनका विश्वास।।

उनके विचार जरा भी नहीं थे रूढ़िवादी, पापा जी को समझा कर हमेशा करती रहती थी हमारी तरफदारी।।

मेरी मां को पढ़ने लिखने का था बहुत शौक,
अपनी जीवनी लिखी और कविताएं लिखी अनेक,
अखबार तो रोज पढ़ती ही थी ग्रंथ भी पढ़ डाले हर एक।।

मेरी मां ने अपनी सारी जिम्मेदारियां बहुत अच्छे से निभाई,
छोटे-छोटे बच्चे होने के बावजूद घर की एक एक ईट खुद खड़े होकर लगवाई।।

बच्चों के भविष्य के लिए हमेशा थोड़ा-थोड़ा धन संग्रह किया,
इसलिए पापा जी ने भी मम्मी पर बहुत विश्वास किया।।

सिलाई बुनाई में तो मेरी मां ने कमाल ही कर दिया ,
दूर की रिश्तेदारी के बच्चों को भी बुनकर स्वेटर पहना दिया।।

पुरानी चीजों का कैसे हो सदुपयोग ,
यह कीड़ा हम सबके दिमाग में भी डाल दिया।
इस तरह हमेशा कुछ नया सीखा और किया ।।

मुझे याद है कि कभी इच्छा नहीं कि मेरी मां ने नए कपड़ों की या फिर घूमने फिरने की,
उन्हें तो बस प्यारा था अपना छोटा सा संसार बच्चों का प्यार दुलार।।

मां कहती थी घर के बड़े बेटे को नहीं ब्याऊंगी अपनी बेटियां,
क्योंकि निभानी पड़ती है उन्हें अनेकों जिम्मेदारियां,
पर मिले तीनों को घर के बड़े बेटे ही।।

मेरी मां ने पग पग पर हमें दी सीख,
मेरी बेटी तुम निभाना ससुराल की हर रीत,
सबकी करना सेवा देना सम्मान और प्रीत।

मां की उम्मीदों पर हम खरे उतरे या नहीं यह तो मां ही जाने।।

भाभी के आने से घर जगमग हो गया,
मां पापा जी का तो मानो उत्साह ही दुगना हो गया।।

तब से आज तक मां के साथ भैया भाभी का भी मिला है प्यार दुलार।

यही तो है हमारा प्यारा परिवार,
यही तो है हमारा प्यारा परिवार,
यही तो है हमारा प्यारा परिवार।

– अन्जान

Sh P.L. Jaiswal (1924-2023): Colossal Personality And A Real Marg Darshak

by Niti Bhardwaj (9811829787, 8800493052)

Sh. Panna Lal Jaiswal, an evergreen, ever energetic man who carried on with his moming walk till date at the age of 98, was a Journalist by profession in Hindi news paper "Aaj' and then "Samachar" and later on joined Indian Council of Agricultural Research and retired as Chief Editor. : He was the most Senior person of the DUJ as well as of our colony, which can be seen by the amount of love and respect he had earned. Sh. Jaiswal has tirelessly worked for the colony, RWA and Gulmohar Centre for more than 15-20 years.

Sh. PL Jaiswal was the Founder Member, Managing Trustee and presently Vice Chairperson of Mahamana Malaviya Mission. This Trust carries out charitable work related to upliftment of the poor and the downtrodden. His indomitable spirit, indefatigable endeavors and unflinching devotion for people's welfare was so high that, till the Memorial was built he had dedicated a room in his house as Mission Office. He tried every nook and corner to raise funds for this memorial and promote Pandit Madan Mohan Malaviyaji's ideals, It was a herculean task, but his endless efforts, hard work, perseveranee, special quality of contacting people and persuading various authorities, exceptional quality of organization and collecting varied people to get the colossal job, made this dream come true. To ensure a grand finale, Sh. Jaiswal visited the house of Late Dr. APS Abdul Kalam 3 times till he agreed 'o inaugurate the memorial, which was carfied out 0 25 December 2008.

Sh. Jalswal was a powerful thinker and Speaker, listening to him when he use to Share his experience of the pre-Indepen-dence era where he fought alongside our fuary 2023 freedom fighters is often mesmerizing. He was imprisoned with Late Sh, Atal Bihari Vajpayee. He use to speak his prs great command on social issues, interlinki it with Mahamana's thoughts and their Televance in today's modern world. He often Motivates the younger generation to come forward and serve the society in their small ways. Sh. Jaiswal was also an initial founder member of RSS. Sh. Jaiswal had established

Jaiswal Jagriti, a magazine for Jaiwal community contributing to social work and matrimonial services all over India.

They say that the greatest quality of any leader is what legacy he leaves behind in terms of his life mission, Not many, including great people, leave such legacies behind, His humbleness, soft nature and always smiling face are his key attributes. He has proved to all of us that you can be active and contribute to society even at the age of 98 years and more. He has set an example that perpetual optimism is a force multiplier. He had passed through turbulent times, especially when his wife, Late Smt Snehlata passed away. Many seniors in the colony are witness to the fact how lovingly he nursed his wife. This is another aspect of his great personality. He has been a very loving and responsible father. This is the reason all his sons, Hemant, Sharad and Sanjeev love him allot.

Sh. Jaiswal's life and public service has been both unique and remarkable, His worth as a person, transcends the value he ereated. He plays his heart out and speaks his mind in all forums, a quality that makes stand apart, His passion, energy and enthusiasm are so, contagious that he brings into his fold all those persons he meets and this is my personal experience too. Today, at the age of 98, Sh. PL Jaiswasl stand TALL as a MARGDARSHAK in its true sense and mission achieved by him have become a path for us to follow.

– नीति भारद्वाज

मोबाइल न. 9811829787

मा0 पन्ना लाल जी के प्रति

मा. पन्ना लाल जी और स्व. बालेश्वर अग्रवाल ने भाऊराव की प्रेरणा से महामना मालवीय मिशन की स्थापना सन् 1978 में नई दिल्ली की एक लघु बैठक में की। इस बैठक में अन्य अनेक ख्यातिमान काशी, हिन्दू वि. वि. पूर्व छात्र तथा स्व. अशोक सिंघल, स्व. डा. आत्माराम, डा. महेश शर्मा, शान्ति स्वरूप चड्ढा, आदि भी उपस्थित थे। मुझे भी इस बैठक में रहने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ था।

लगभग 43 वर्षों तक मा. पन्ना लाल जी मिशन के संगठन के उत्तरोत्तर विकास के लिए अनवरत लगे रहे हैं। 97 वर्षों के होने के बाद भी वे मिशन के विकास के लिए हम लोगों को आशीर्वाद देते रहे। पहले कई वर्षों तक तो सी-3 गुलमोहर पार्क में मिशन के पंजीकृत कार्यालय का काम होता रहता था। उनके मार्गदर्शन में ही देश भर के अनेक स्थानों यथा वाराणसी, लखनऊ, भुवनेश्वर, कलकत्ता, जम्मू, हैदराबाद, नागपुर, बैंगलूरु, राँची, मुम्बई, आदि प्रमुख स्थानों पर मिशन का अधिवेशन सम्पन्न हुआ।

उन्हीं के मार्गदर्शन में अन्तर्राष्ट्रीय पुरा छात्र सम्मेलन, नई दिल्ली में सम्पन्न हुआ जिसमें पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ था। उन्हीं के निर्देशन में लखनऊ में विशाल लगभग 48,000 वर्ग फीट के भूखण्ड विवेक खण्ड, गोमती नगर में इंटरमीडियट कॉलेज की स्थापना हुई। उ.प्र. के अनपारा, ओबरा, ऊँचाहार, मेरठ, आदि स्थानों पर मिशन की शाखाओं ने अपने सेवा कार्यक्रम द्वारा नये कीर्तिमान स्थापित किए।

इसके साथ ही मा. पन्ना लाल जी की प्रेरणा से हमारे जैसे अनेक कार्यकर्त्ता श्री हरिशंकर सिंह, गोविन्द अग्रवाल, विष्णु कुमार, जय प्रकाश लाल, श्री निवास शास्त्री, डी.सी. गुप्ता, आदि कार्यकर्ता अपने-अपने ढंग से मिशन का कार्य कर रहे हैं।

भारत रत्न पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी बाजपेयी के प्रधान मंत्रित्व काल में 52-53 दीन दयाल उपाध्याय मार्ग, पर एक भूखण्ड महामना मालवीय मिशन के नाम पर सन् 2001 में आवंटित किया गया जिस पर आज मिशन का केन्द्रीय कार्यालय महामना मालवीय स्मृति भवन बनकर देशभर की शाखाओं में समन्वय और विस्तार कर रहा है। इस भवन के निर्माण में मा. पन्ना लाल जी के महत्वपूर्ण योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता। परमात्मा से यह प्रार्थना है कि वे मा. पन्नालाल जी की दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें।

– प्रभु नारायण

राष्ट्रीय अध्यक्ष

महामना मालवीय मिशन

हास्य रस को लोकप्रिय बनाने में मोहनलाल गुप्त उर्फ भैयाजी बनारसी का योगदान

हिन्दी साहित्य के विकास में हास्य रस को लोकप्रिय बनाने में भैयाजी का महत्त्वपूर्ण योगदान है। हिन्दी साहित्य को भैयाजी के योगदान के विषय में डॉ. धीरेन्द्र वर्मा द्वारा सम्पादित 'हिन्दी साहित्य कोश' भाग-2, के पृष्ठ 429 में उल्लिखित है कि-'भारतेन्दु द्वारा प्रवर्तित हास्य-व्यंग्य की धारा में वस्तु विन्यास, भाव-भाषा शैली, शब्द चयन आदि सभी दृष्टियों से आधुनिकता का समावेश करने वाले लेखकों में आप का (भैयाजी का) विशिष्ट स्थान है। राजनीतिक, सामाजिक, चेतना से उद्वेलित होकर आप की हास्य कृतियाँ भी प्रायः व्यंग्य प्रधान हो जाती हैं। आप की हास्य कृतियों में भी कहीं नैतिक मर्यादाओं का उल्लंघन नहीं दृष्टिगोचर होता है। आप द्वारा गद्य और पद्य काव्य रचना की दोनों ही विधाओं का समान रूप से सफल प्रयोग किया गया है।'

समाज में परिव्याप्त चतुर्दिक भ्रष्टाचार को अवलोकित कर भैयाजी का कवि हृदय आकुल हो उठता है वह अनायास ही कह उठता है-'छल-प्रपंच से भरी हमारी जिन्दगी, साहित्य, राजनीति की धोखा-धड़ी, बेइमानी, बहुरुपिया नेता, आचारहीन समाज सेवक, साहित्यकार, पत्रकार, अध्यापक एवं सामान्य व्यक्ति। संस्था आन्दोलन का उद्देश्य शुद्ध स्वार्थ, जनता की सेवा का अर्थ स्वयं की सेवा, परिवार-पालन, स्मारक का अर्थ अपना स्मारक, जयन्ती अभिनन्दन का अर्थ आत्म-विज्ञापन और सहायता-कोश का अर्थ स्वगृह निर्माण कोश। इस प्रकार स्वार्थसिद्धि की प्रतियोगिता में दौड़ते हुए आदमी नहीं घोड़े। आदमी का चमड़ा पेड़ की छाल की तरह कड़ा हो गया है। समाज अनुभूति शून्य, हृदयहीन, स्वार्थी व्यक्तियों का समूह हो गया है। ऐसे समाज का पोस्टमार्टम जरूरी हो गया है।'

भैयाजी ने अपने हृदय की उस आकुलता के अनुसार ही 'अरबी न फारसी' में उपर्युक्त समात को अपने व्यंग्य-बाण से छलनी करने में कोई कमी नहीं की है। व्यंग्य-बाण से विद्ध करने के पश्चात् हास्य का मरहम लगाकर पीड़ा को कम करने का भी प्रयास किया है, क्योंकि कवि का उद्देश्य किसी को पीड़ा पहुँचाना नहीं, प्रत्युतृ उसके अन्दर निहित स्वार्थभाव को दूर कर परमार्थ भाव को परिपल्लवित करना है।

'अरबी न फारसी' काव्य संग्रह में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पाये जाने वाले आडम्बरों एवं छल-छद्म पूर्ण आचरणों पर कवि ने तीव्रतर प्रहार किया है। प्रस्तुत संग्रह चार भागों में विभक्त है। 1. रुबाइयाँ, 2. गजल, 3. बेतुके, 4. गीत। चार-चार पंक्तियों की रुबाइयों में समाज में परिव्याप्त भ्रष्टाचार, छल-प्रपंच, बाह्याडम्बर आदि विभिन्न विषयों पर व्यंग्य बाण बरसाये गये हैं। गजलों का विषय प्रायः प्रेम है। इसमें लम्बी कवितायें हैं। 'बेतुके' में छन्द मुक्त कविताओं का संग्रह है। गीतों में प्रणय याचना से लेकर हिन्दी भाषा के साथ किये जा रहे सौतेले व्यवहार तक को विषय-वस्तु के रूप में चयनित किया गया है। गीत प्रायः व्यक्ति-व्यंजक न होकर वस्तु-व्यंजक हैं। लेकिन गीतों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि भाषा सरस, लयात्मक और गीतों के सर्वथा उपयुक्त है।

वर्ण्य विषय की दृष्टि से प्रस्तुत काव्य संग्रह को निम्न वर्गों में बाँटा जा सकता है। 1. पत्नियों से सम्बन्धित व्यंग्य, 2. कवियों तथा नयी कविता से सम्बन्धित व्यंग्य, 3. भ्रष्टाचार से सम्बन्धित व्यंग्य, 4. सामाजिक और धार्मिक कुरीतियों से सम्बन्धित व्यंग्य, 5. आधुनिक युवतियों तथा रोमांस से सम्बन्धित व्यंग्य, 6. प्रकीर्ण व्यंग्य।

सदियों से दबी हुई नारी आधुनिक युग में स्त्री शिक्षा प्रचार-प्रसार के फलस्वरूप अबला से सबला बनने की ओर अग्रसर है। सदियों से पति को परमेश्वर मानकर उसके प्रत्येक सही-गलत आचरण को सहन करने के लिए तैयार करने वाली नारी अब उसके किसी गलत आचरण को सहन करने के लिये तैयार नहीं है। इसके साथ ही साथ उसमें स्वच्छन्दता का भी आविर्भाव तीव्रगति से हो रहा है। इसके दुष्परिणामस्वरूप पति किंकर्तव्यविमूढ़ हो गया है। एक ओर बढ़ती हुई मँहगाई, दूसरी ओर उच्चस्तरीय जीवन जीने की आकांक्षा से उत्प्रेरित पत्नी का बढ़ता हुआ व्यय

पूर्ण करने में पति स्वयं को असमर्थ पर रहा है फलतः विवाह-विच्छेद तथा पत्नी के स्वच्छन्द आचरण से पुरुष समाज हीनभावना से ग्रस्त होता जा रहा है। वह पत्नी के समक्ष हाथ जोड़कर सदियों से पुरुष द्वारा नारी समाज के प्रति किये गये दुर्व्यवहारों के लिए क्षमा याचना करता हुआ दृष्टिगोचर होता है। व्यंग्यकारों ने पुरुष की इस दुर्दशा और विवशता पर व्यंग्यबाणों का तीव्र प्रहार किया। हमारे भैयाजी भी क्यों पीछे रहते। भैयाजी के कथनानुसार–'आधुनिक पुरुष बुद्धिमान् बनकर नहीं प्रत्युत् बेबकूफ बनकर ही पत्नी का प्यार पा सकता है।'

अक्ल की बात जब मर्द करता है,
अक्ल औरत उधार देती है।
मर्द जब बेवकूफ बनता है,
औरत तब उसे प्यार देती है।।

पत्नी प्रत्येक बात को क्रोध पति पर उतारती है। एक दिन प्रातःकाल ही पत्नी की चाभी खो गयी। पति सोया हुआ था। स्पष्ट है कि चाभी खोने में पति का कोई दोष नहीं है, परन्तु पत्नी क्रोधित होकर पति को ही डाँट रही है। पति महोदय की नींद पलायित हो जाती है–

नींद खुली लगा झनझनायी है थाली,
सबुह-सुबह बिगड़ी है शायद घरवाली।
खुदा खैर करे रक्षा करे काली,
पता चला कि श्रीमती की खोई है ताली।।

सुबह ही क्यों शाम को भी पति महोदय की खैर नहीं। पत्नी सेकेण्ड शो का सिनेमा देखने चली गयी। सिनेमा देखकर घर आयी पत्नी भूखे बच्चे को रोता हुआ देखकर अंगार हो जाती है और पति को खरी-खोटी सुनाने लगती है। इस पर भैयाजी कहते हैं–

सेकेण्ड शो जाना था पर मुझसे तो जाया न गया,
लौट कर आयी तो मैं होश में पाया न गया।
गुस्से को आना था आया वह बुलाया न गया,
रो रही बेबी को जरा दूध पिलाय न गया।।

इधर पत्नियाँ क्या करती हैं। पति दिन भर अर्थोपार्जन हेतु परिश्रम करता है और पत्नियाँ अपना समय गप-शप में व्यतीत करती हैं और वेतन हाथ में आने पर उसका हिसाब लेना नहीं भूलतीं। क्या मजाल है कि पति महोदय पत्नी महारानी के आदेश के बिना बीस पैसे का चाय भी अपनी इच्छा से पी लें। आज की पत्नियों पत्नी न होकरक गिरहकट हो गयीं हैं। इसे देखकर भैयाजी कहते हैं–

हर घर में अदालत होती है, हर बीवी जिरह कर लेती है,

हर मियाँ मुवक्किल होता है हर बीबी एडवोकेट होती है।

हर घर को जेल समझ लें तो हर बीबी जेलर होती है,
जेबों की तलाशी लेती है हर बीबी गिरहकट होती है।।

पति भी कम चतुर नहीं है। वह घर पर रात में देर से आता है और पत्नी द्वारा देर से आने का कारण पूछने पर कोई न कोई बहाना प्रतिदिन बना देता है। एक दिन पत्नी के इसी प्रकार देर से आने का कारण पूछने पर उसने कह दिया कि 'मैं मर गया था'। पत्नी पति के इस अप्रिय वाक्य को सुनकर मौन हो जाती है। इस पर भैयाजी कहते हैं–

आज फिर वही प्रश्न, कहाँ गये थे, कैसे देर हुई?
बोला, 'आज मैं मर गया था। हार्ट फेल कर गया था।
सच कहता हूँ बड़ी मुश्किल से लौटा हूँ,
श्रीमती जी मौन रहीं बात कुछ ऐसी थी।।

भैयाजी का मत है कि किसी को भी कवयित्री पत्नी न प्राप्त हो, क्योंकि आलोचक, समीक्षक, सम्पादक, प्रकाशक, कविता से अधिक कवयित्री पत्नी पर प्रेम-सुधा की वर्षा करते हैं। वे हठ करके उसका फोटो लेते हैं। अगर चाय का निमन्त्रण देते हैं तो यह कहना नहीं भूलने कि 'भाभी जी को भी साथ लाइयेगा।' इस पर कवि खीझकर कहता है–

प्रातः इन्टरव्यू देती है, दिन में कालेज में वह, मैं दफ्तर में,

सन्धया को साहित्यिक संगम, निशि में कविता, सूना बिस्तर।

है भूल मैंने भयंकर की जो कवयित्री से शादी की,

क्वारों को आज सुनाता हूँ निज करुण-कथा बरबादी की।।

आज सामाजिक बन्धन शिथिल हो रहे हैं। जब तक स्त्रियाँ आर्थिक रूप से दुर्बल थीं, तब तक वे पति के किसी भी अत्याचार को सहन कर लेती थीं, परन्तु आज वे आर्थिक और कानूनी रूप से सबल हो रही हैं। वे जहाँ

स्वेच्छा से पति के कन्धे से कन्धा मिलाकर उसका सहयोग करने के लिए तत्पर हैं, वहीं यदि वह किसी प्रकार का अत्याचार करता है तो उसका मुँहतोड़ जवाब देने के लिए भी तत्पर हैं। अब पति-पत्नी गृहस्थी रूपी रथ के ऐसे दो पहिए हैं जिनका रथ के सुव्यवस्थित संचालन में समान सहभागिता है। किसी एक के अव्यवस्थित होने पर गृहस्थी रूपी रथ का संचालन सम्भव नहीं हो सकता। आज एक ओर तो पुरुष वर्ग जो सदियों से स्वयं को परमेश्वर और स्त्री को दासी माने हुए है, वह इस सत्य को स्वीकार नहीं कर पा रहा है और दूसरी ओर आर्थिक, सामाजिक तथा राजनैतिक और विधिक रूप से स्वातन्त्र्य का स्वाद आस्वादित करने के पश्चात् नारी वर्ग किसी भी प्रकार से पुरुष से स्वयं को कम नहीं मान रहा है। दुष्परिणामस्वरूप आज समाज में निःसंकोच रूप से विवाह-विच्छेद हो रहा है। पहले पुरुष बहु विवाह करता था, आज की स्त्रियाँ भी इस बहु-विवाह प्रथा में अपना भरपूर सहयोग प्रदान कर रही हैं। वे एक पति से विवाह-विच्छेद करके किसी दूसरे पुरुष से विवाह करने में किसी भी प्रकार का संकोच नहीं कर रही हैं। यहाँ तक कि कुछ स्त्रियों ने तो पाँच-पाँच विवाह किये हुए हैं। कुछ स्त्रियाँ ऐसी भी हैं कि जो स्थायी रूप से निमन्त्रण पत्र छपवाकर रख ली हैं जिसमें कि दिन, तारीख और नये पति का नाम लिखना मात्र शेष होता है। विवाह-विच्छेद की व्यवस्था पर भैयाजी ने मर्मस्पर्शी व्यंग्य किया है–

पाँचवीं शादी थी श्रीमती कबाड़ी की,
शादी एक स्वाद है, फैशन है, बस की सवारी है।

बस की सवारी से कवि का विशेष तात्पर्य यह है कि रेल अथवा वायुयान से यात्रा आरम्भ करने पर यह निश्चित है कि यदि कोई दैवी दुर्योग ने हुआ तो आप अपने गन्तव्य स्थान पर पहुँच जायेंगे। रेल और वायुयान से यात्रा करते हुए आप को यथेच्छ रूप से कहीं भी उतरने-चढ़ने की स्वतन्त्रता नहीं होती जब कि बस से यात्रा प्रारम्भ करने आप यथेच्छ रूप से कहीं भी किसी स्थान पर बस रुकवाकर उतर सकते हैं और पुनः दूसरी बस से यात्रा करने के लिए स्वतन्त्र होते हैं। ठीक यही स्थिति आज दाम्पत्य जीवन में घटित हो रहा है। आज यथेच्छ रूप से विवाह-विच्छेद करके पति-पत्नी एक दूसरे से अलग हो जा रहे हैं। वर्तमान में पति-पत्नी के इसी प्रकार के सम्बन्धों के प्रति भैयाजी का एक व्यंग्य द्रष्टव्य है–

धर्मपत्नी जो थीं वाइफ बन गयी,
छुरी काँटा और नाइफ बन गयी।
चरणदासी के चरण अब दाबता,
जिन्दगी भैयाजी लाइफ बन गयी।

पत्नी की डाँट-फटकार से शायर अकबर इलाहाबादी भी खिन्नता का अनुभवकरते हैं। वे यह कहे बिना नहीं रह पाते कि–

शेख को मिस ने जो डाँटा तो पुकारा वो गरीब।
देखिये तोप को लाठी ने दबा रक्खा है।।

भैयाजी नये कवि और नयी कविता के प्रति भी व्यंग्य किये बिना नहीं रह सके हैं। आज विभिन्न वादों एवं वर्गों में बँटे हुए नये कवियों की काव्य-रचना को वह कवि ही समझ सकता है, जिसने कविता लिखी है। आज की कविता में वह स्वरस कहाँ जो सूर, तुलसी, मीरा के काव्यों में उपलब्ध होता है। आज की कविता कविता न होकर तुकबन्दी मात्र रह गयी है। इस प्रकार की काव्य रचना को उसी वर्ग के आलोचक और समीक्षक समझते और उसकी प्रशंसा करते हैं, जिस वर्ग का वह कवि है। दूसरा सामान्य सहृदय न तो उसे समझता है और न तो उससे काव्य-श्रवण तथा काव्य पाठ का आनन्द ही प्राप्त कर पाता है। इस सम्बन्ध में भैयाजी कहते हैं–

इस कविता को कवि समझें या अल्ला ताला।
या कि समीक्षक लगता जो रिश्ते में साला।।

भैयाजी का मत है कि कवि तो कवि, समीक्षक की लिखी समीक्षा को भी उसके अतिरिक्त कोई अन्य सामान्य सहृदय पाठक नहीं समझ सकता। उक्त विषय में किसी समीक्षक का ही कथन है–

बात जो कह दूँ कोई क्या समझे,
एक खुद, दूसरा खुदा समझे।
बात लिख दूँ समझ के बाहर की,
डाक्टर या कोई गधा समझे।।

निराला की क्रान्तिकारी रचना 'कुकुरमुत्ता' के विषय में भैयाजी की व्यंग्योक्ति द्रष्टव्य है–

प्रगटे जहाँ कुकुरमुत्ता से वाद।
भैयाजी वह नगर इलाहाबाद।।

नये कवियों की नयी कविता के प्रति भैयाजी की खीझ कहीं-कहीं पर अत्यन्त कटु रूप में प्रकट हुई है। नयी कविता के प्रति भैयाजी का एक व्यंग्य द्रष्टव्य है–

ये जिन्दगी के मेले

तुफाने बदतमीज, कविता नयी-नयी है।
लगता है कोई धुनिया, धुनता नयी रुई है।
लगता दुलत्तियों से, हैं गूँजते तबेले।
ये जिन्दगी के मेले.....
यह बेतुकी सी कविता, है बेतुकी के बावत।
यह बेसमझ की कविता, क्या समझ की जरूरत।
कुछ बेतुकों तुकों से हैं, मिल गये अकेले।
ये जिन्दगी के मेले.....

भैयाजी का जैसा आक्रोश नयी कविता के प्रति दृष्टिगोचर होता है, उसी प्रकार का आक्रोश नवयुवतियों के प्रति भी दृष्टिगोचर होता है। आज के नवयुवकों और नवयुवतियों की वेश-भूषा को देखकर कहते हैं–

फिल्मी धुन और बिखरे-बिखरे बाल हैं,
देश के मजनू बहुत बेहाल है।
ख्वाब में नरगिस, सुरैया झाँकतीं,
भारत के भावी जवाहर लाल हैं।।

युवकों के साथ-साथ आज की युवतियाँ भी कुछ कम नहीं हैं। सम्यक् रूप से मेम बन गयी हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि भारतभूमि पर फिल्मी हीरो, हिरोइन ही जन्म ले रहे हैं। भैयाजी उन्हें देखकर कहते हैं–

लड़की हर नरगिस, युवक हर राज है।
तर्ज फिल्मी, रंग, ढंग, अन्दाज है,
कोई जाकर भैया नेहरू से कहो।
देश में अब नरगिसों का राज है।।

भारत अब मजनुओं का देश बन गया है। अब वे घर में नहीं विद्यालयों को भी अपने नाच-गाने का रंगमंच बनाने में तत्पर हैं। यह देखकर भैयाजी कहते हैं–

बन गया कालेज सिनेमा हाल है,
बन गया घर नाचघर क्लब बाल है,
रेडियो गाता सिलोन राष्ट्रगीत,
मजनुओं के राष्ट्र का यह हाल है।

आधुनिक युग में प्रेम करना भी एक फैशन बन गया है। अर्थ प्रधान युग में प्रेम भी अर्थ पर ही निर्भर है। बनावटी प्रेम तो आज हर ओर देखा जा सकता है। प्रत्येक युवक का हृदय प्रेम की अभिव्यक्ति के लिए आतुर है। उन्हें देखकर भैयाजी कहते हैं–

मुहब्बत मकड़े ने ताना जाल है,
हर युवक का दिल बना फुटबाल है
लैला खिड़की पर मजनू सड़क पर,
हर गली-कूचा सिनेमा हाल है।।

हमारे देश में वृद्धावस्था में विवाह करने की कुरीति बहुत दिनों से चली आ रही है। यहाँ तक कि अब वृद्ध लोग भी विवाह हेतु विज्ञापन देने लगे हैं। उनके इस आचरण पर भैयाजी की व्यंग्योक्ति द्रष्टव्य है–

झुकी कमर, धँसी आँख, जैसे हुआ टी.वी.,
मौत घूरती है जान रिश्ता करीबी,
पचपन के पार छपा शादी का विज्ञापन,
बाबा की उमर और ढूँढ़ रहे बीबी।

आधुनिक राजनीति और राजनीतिज्ञों में परिव्याप्त छल-छद्म और आडम्बरों के प्रति भैयाजी के हृदय में अत्यन्त आक्रोश है। भारत स्वतन्त्र हो गया है। देश का अपना संविधान बना और देश का नाम भारत रखा गया, परन्तु आज भी लिफाफे, पोस्टकार्डों, अन्तर्देशियों, अर्थात् पत्र-व्यवहार के सरकारी संसाधनों पर 'इण्डिया' ही छप रहा है। सामान्य जनता द्वारा किये गये आन्दोलनों का परिणाम यह हुआ कि इण्डिया के साथ-साथ अब भारत भी छपने लगा है। ऐसा प्रतीत होता है कि देश के दो नाम हैं एक इण्डिया और दूसरा भारत, अर्थात् शिक्षित अंग्रेजी पढ़े-लिखे लोगों का इण्डिया और अशिक्षित सामान्य जनता का भारत। इस पर भैयाजी की एक व्यंग्योक्ति द्रष्टव्य है–

है विदेशी माल देशी मण्डिया,
बिक रही भारत में इंग्लिश झण्डिया,
भैया जय इंग्लिश कहो, जय कामनवेल्थ,
इण्डिया, जय इण्डिया, जय इण्डिया।।

आजकल मन्त्रियों का बोल-बाला है। मन्त्री की ही नहीं उसके सम्बधियों की भी दशों अंगुलियाँ घी में हैं। मन्त्री होते ही उसका और उसके सम्बन्धियों के समस्त दु:ख-दर्द, कष्ट संकोच, हीन-भावना का अन्त हो जाता है। बेढ़ब जी को खेद है कि उनका विवाह किसी सप्लाई अफसर के यहाँ हुआ होता तो उन्हें किसी भी वस्तु की कमी नहीं होती। द्रष्टव्य है–

न गल्ले की, न कपड़े की, न राशन की कमी होती।
किसी सप्लाई अफसर के यहाँ शादी हुई होती।।

बेढ़ब जी से आगे निकलते हुए भैयाजी कहते हैं–

शहर में मुझसे बड़ा अब कौन है भैयाजी,
मेरे बेटे का श्वसुर आजकल मिनिस्टर है।

आजकल के अफसर महत्त्वपूर्ण हैं। उनसे मिलना आसान नहीं है। उनके सम्बन्ध में भैयाजी का कथन कितना तथ्यात्मक है–

बड़े साहब से मिलना है, बड़ी मुश्किल से मिलते हैं,
अभी 'बेड-टी' पर साहब, गुलस में कपड़े बदलते हैं,
गुसल के बाद ही फिर लंच, तब आराम करते हैं,
हुई जो शाम बाहर अर्दली साहब निकलते हैं,
वे बोले सण्डे को साहब, बस मेमसाहब से मिलते हैं।

प्रेम और रोमांस पर भैयाजी की लेखनी खूब चली है। उन्होंने कहीं तो प्रेम-पत्रों पर नया प्रयोग किया है, और कहीं पर बनावटी लैला मजनुओं पर व्यंग्य-बाण का प्रहार किया है। ऐसी ही एक व्यंग्योक्ति द्रष्टव्य है–

मियाँ मजनू के खातिर लैला नंगे पाँव ही दौड़ी।
उसे जो अपनी सैंडिल का पता होता तो क्या होता।।

'होता तो क्या होता' पढ़कर उर्दू के प्रसिद्ध शायर पण्डित बृजनारायन की ये पंक्तियों हठात स्मरण हो आती हैं–

हजारों जान देते हैं बुतों की बेवफाई पर।
अगर उनमें से काई बा-वफा होता तो क्या होता।।

प्रेम चाहे कितना ही पवित्र हो, या महाकवि कालिदास के शब्दों में जन्म-जन्मान्तर का ही क्यों न हो, परन्तु आज यह माना जाता है कि प्रेम भी अर्थ पर ही निर्भर है। प्रेम आध्यात्मिक न होकर नितान्त रूप से भौतिक है, जैसा कि भैयाजी कहते हैं–

कहा जो प्रेम का हकदार एक मैं भी हूँ,
बैंक बैलेंस, अच्छी पे है, बंगला, मोटर है।
तो बोले आप की दरख्वास्त देर से पहुँची,
छुट्टियों में ही यहाँ भर गया रजिस्टर है।।

तो क्या यह सत्य है कि आज का प्रेम बैंक बैलंस, अच्छे वेतन और बंगले तथा मोटर का मुखापेक्षी हो गया है.....?

–आभार श्रद्धेय स्वर्गीय श्री पन्ना लाल जायसवाल

दक्षिण भारत में हिंदी की लोकप्रियता

डॉ. राजलक्ष्मी कृष्णन

हिंदी अपना स्वाभिमान है,
इसमें संस्कृति का बखान है
हिंदी ने ही आजादी दिलाई
किया इसी ने राष्ट्रगान है।

हिंदी बहता नीर है, पतितपावनी गंगा है। अनेक बोलियाँ इस गंगा को सदानीर बनाए रखती हैं। हिंदी केवल एक भाषा ही नहीं, बल्कि संपूर्ण देश की सांस्कृतिक चेतना है। राष्ट्र की एकता की गरंटी और सद्भावना की रीढ़ है।

भारत की अधिकांश जनता हिंदी बोल और समझ सकती है। देश भर से प्रकाशित होने वाले समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में हिंदी के पाठकों की संख्या बढ़ती जा रही है। आज विश्व के 150 से भी अधिक विश्वविद्यालयों में हिंदी शिक्षण की व्यवस्था है। स्वतंत्रता की लड़ाई में हिंदी को जन आंदोलन के रूप में लिया जाने लगा। हिंदी में असीम संपर्क शक्ति है और वह ज्ञान की भाषा है। संसार भर में अनेक भाषायें बोली जाती हैं, इनमें से तीन भाषायें प्रमुख हैं। चीनी, अंग्रेजी और हिंदी। ये तीनों इसी क्रम से प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान पर आती है। विश्वपटल पर इन तीनों प्राप्त है जापान, चीन, दक्षिण कोरिया, हांगकांग, अमेरिका, आस्ट्रेलिया, फ्रांस, इटली, मॉरीशस आदि अनेक देशों में हिंदी भाषा बोली और समझी जाती है।

विश्व में हिंदी का महत्त्वपूर्ण स्थान है। संसार में लगभग 200 विश्वविद्यालय में हिंदी का पठन-पाठन हो रहा है। यदि हम अपने पड़ोसी देशों की बातें करें तो श्रीलंका, पाकिस्तान, नेपाल, भूटान, म्यांमार आदि अनेक देशों में लोग हिंदी बोलते और समझते हैं। मॉरीशस में लोगों को हिंदी बोलते और समझते हैं।

मॉरीशस में लोगों को हिंदी के प्रति अत्यधिक प्रेम है। यहाँ से अनेक पत्र-पत्रिकाएँ निकलती हैं। इकबाल ने कहा है कि "सारे जहाँ से अच्छा, हिन्दोस्तान हमारा- सदियों

रहा है दुश्मन, दौरे जहाँ हमारा। कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी। किसी भी देश भी उन्नति में उस देश की भाषा का बहुत बड़ा योगदान है। दक्षिण भारत में लोग हिंदी प्रिय विषय के रूप में पढ़ रहे हैं। यद्यपि कुछ राजनैतिक कारणों से यहाँ हिंदी उतनी लोकप्रिय नहीं है, जितनी अन्य जगहों पर। तमिलनाडु में ऐच्छिक विषय के रूप में हिंदी का अध्ययन होता है। केन्द्रीय विद्यालयों में अध्ययन करने वाले तमिल भाषी हिंदी भाषियों के साथ होड़ लगाकर अध्ययन होता हैं। घर के बाहर और अंदर हिंदी का वातावरण न होने पर भी वे हिंदी का अध्ययन करते हैं। हिंदी छात्रों की मातृभाषा न होने के कारण इन्हें कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, फिर भी प्रति वर्ष दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा से लाखों छात्र प्राथमिक, माध्यमा, राष्ट्रभाषा, विशारद, प्रवीण और प्रचारक बनकर निकलते हैं, यहीं नहीं उच्च शिक्षा और शोध संस्थान से अनेक छात्र-छात्राएँ एम.ए., एमफिल, पी.एच.डी., और डी. लिट. भी कर रहे हैं। उन्हें हिंदी से प्यार है। दक्षिण भारत में अनेक व्यक्ति हिंदी समझ और बोल सकते हैं टैक्सी-ड्राइवर, आटोरिक्शा वाले, दूकानदार सभी बोलचाल की हिंदी भाषा समझ लेते हैं। यहाँ विरोध नहीं है, आसानी से लोग हिंदी समझ समझ लेते हैं। छात्रों को नौकरी में हिंदी काम आए, यही हिंदी अध्ययन का प्रमुख विषय है। जो छात्र हायर सैकेण्डरी में उत्तीर्ण होने के बाद इंजीनियरिंग या मेडिकल आदि विभिन्न विषयों को पढ़ने जाते हैं, वहाँ हिंदी का अध्ययन बिल्कुल नहीं हैं। इच्छुक छात्र अपनी मर्जी से हिंदी संस्थानों में जाकर हिंदी सीखते हैं और हिंदी का ज्ञान बढ़ाते हैं, जिससे उन्हें दक्षिण भारत के बाहर जाकर नौकरी मिल सके। उन्हें आसानी से उत्तर भारत में नौकरी मिल सके और वहाँ उन्हें हिंदी भाषा में बातचीत करने में कोई असुविधा न हो। मेरे विचार से यहाँ लोगों को हिंदी भाषा सीखने में कोई असुविधा नहीं है। अधिक से अधिक भाषायें सीखने से हमारा ज्ञान बढ़ता है। हिंदी राजभाषा और राष्ट्रभाषा है, अतः प्रत्येक भारतीय को हिंदी भाषा सीखना आवश्यक है।

स्वैच्छिक संस्थाओं में विशेषकर दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, कर्नाटक में महिला प्रचार सभा, आन्ध्र में आंध्र प्रचार सभा आदि कई संस्थाएँ हिंदी प्रचार-प्रसार से जुड़ी हुई है। ये संस्थाएँ हिंदी सिखा तो रही है, परन्तु वैज्ञानिक पद्धति को नहीं अपना रही हैं। वातावरण हिंदी का बनायें, जिससे छात्र-छात्रायें आसानी से आपस में एक दूसरे से हिंदी में वार्तालाप कर सकें। वैसे देखा जाये तो, दक्षिण भारत के लोग अन्य प्रान्तों की अपेक्षा अधिक स्पष्ट और शुद्ध हिंदी में बातें करते हैं। इससे पता चलता है कि दक्षिण भारत में हिंदी अधिक लोकप्रिय होती जा रही है। यहाँ के लोग हिंदी से प्यार करते हैं और स्वेच्छा से हिंदी सीखते हैं। देखा जाए तो उत्तर भारत की अपेक्षा दक्षिण भारत में हिंदी सेमिनार, वेबिनार, कार्यशालाएँ, दीक्षन्त समारोह, काव्य प्रतियोगिता, काव्य-गोष्ठी इत्यादि-इत्यादि अत्यधिक कार्यक्रम आयोजित होते रहते हैं। इससे हमें यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि दक्षिण भारत में दिनों-दिन हिंदी की लोकप्रियता बढ़ती ही जा रही है। हिंदी को सर्वमान्य जनभाषा के रूप में प्रचारित करने के क्षेत्र में निश्चित रूप से दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा का महत्त्वपूर्ण योगदान है। इस संस्था ने हजारों हिंदी प्रचारकों का एक पलटन तैयार किया है, लाखों की संख्या में छात्रों को हिंदी भाषा से परिचित कराया है। भारतीय आत्मा का स्पन्दन हमारे भारतीय साहित्य में निहित है। भारत को एक अखण्ड सांस्कृतिक राष्ट्र के रूप में हमें परिणत करना होगा, इसमें हिंदी की अहम भूमिका निस्संदिग्ध है। हिंदी आंदोलन का चरम लक्ष्य भी वही है। दक्षिण भारत इस विषय में विशेष रूप से समृद्ध प्रदेश है। दक्षिण भारत में हिंदी के प्रचार-प्रसार में आज अनेकों प्रचारकों का महत्त्वपूर्ण योगदान है। संगोष्ठियों और सेमिनारों में प्रचारकों को अपनी प्रतिभायें प्रकट करने का अवसर मिलता है। वार्षिक पदवीदान समारोहों में हजारों की संख्या में स्नातक-स्नातिकाएँ उपाधि पाने के लिए उपस्थित रहते हैं, जो यह प्रमाणित करता है कि द.भा. हिन्दी प्रचार सभा ने हिंदी के विकास के लिए कितना काम किया है।

भारत के एकमात्र गवर्नर जनरल, मद्रास राज्य के मुख्य मंत्री, पश्चिम बंगाल के प्रथम राज्यपाल, भारत के गृहमंत्री,

लेखक एवं भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान "भारत रत्न" से सम्मानित राजगोपालाचारी द्वारा दक्षिण में हिंदी की प्रतिष्ठा के लिए किये गए ऐतिहासिक कार्य सदा स्मरण किये जायेंगे। गाँधी जी के साथ मिलकर उन्होंने हिंदी का प्रचार-प्रसार किया।

गाँधी जी के बेटे देवदास गाँधी राजगोपालाचारी जी के घर में रहकर दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा में प्रचारक का काम किया। राजाजी ने कहा कि भारत का भविष्य हिंदी ही है, इसलिए सभी विद्यालयों में हिंदी पढ़ाना अनिवार्य किया जाए। आज द.भा. हिंदी प्रचार सभा से लाखों छात्र हिंदी सीखकर निकल रहे हैं। कई भाषाओं का अनुवाद हिंदी में होने लगा है। इस संबंध में हिंदी साहित्यकार डॉ. बालशौरि रेड्डी, डॉ.ए.शौरिराजन, डॉ.एन. सुन्दरम और डॉ. शेषन के कार्य उल्लेखनीय हैं। इससे दक्षिण भारत में हिंदी की लोकप्रियता का हमें स्पष्ट पता चलता है। मैं, डॉ. राजलक्ष्मी कृष्णन तमिल भाषी हूँ, फिर भी गत 52 वर्षों से हिंदी के प्रचार-प्रसार में लगी हुई हूँ और अब तक दस पुस्तकें प्रकाशित कर चुकी हूँ। सन् 2018 में हिंदी का प्रचार-प्रसार करने के लिए उत्तर प्रदेश के माननीय मुख्य मंत्री योगी आदित्यनाथ जी के द्वारा "सौहार्द" सम्मान से मुझे सम्मानित किया गया।

निष्कर्ष :-

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि तमिलनाडु, केरल, आँध्रप्रदेश, कर्नाटक सभी क्षेत्रों में हिंदी का विकास तीव्रगति से हो रहा है। दक्षिण में हिंदीतर भाषी विभिन्न भाषा-भाषियों के बीच भी एक आप संपर्क भाषा के रूप में हिंदी की भूमिका अविस्मरणीय है। हिंदी के प्रचार-प्रसार को देखकर हम कह सकते हैं कि निश्चय ही हिंदी भाषा का भविष्य उज्ज्वल है और अमृत महोत्सव के अवसर पर मैं यह दावे के साथ कह सकती हूँ कि शीघ्र ही हिंदी राजभाषा राष्ट्रभाषा के गौरव को प्राप्त करेगी।

धन्यवाद। जयहिंदी, जयभारत।

11, गाँधी स्ट्रीट, विरुगम्बाकम, चेन्नै-600 092.
मो- 9840041576

ये राष्ट्र प्रेम से ओतप्रोत हमारे फिल्मी गीत

अहद प्रकाश

यह देश हमारा है। इस देश का क्या कहना। देशप्रेम और राष्ट्र राष्ट्र को लेकर हमारी फिल्मों में बहुत से गीत लिखे गये हैं लिखे जा रहे हैं और ऐसी फिल्में भी खूब बन रही हैं जिसमें नौजवानों को देश प्रेम और राष्ट्रीय एकात्मकता का पाठ दिया गया है इस विषय पर हमारी दृष्टि पुराने जमाने के फिल्मी गीतों की तरफ अनायास ही चली जाती है जब हमारा देश आजाद भी नहीं हुआ था। आज़ादी का संग्राम चल रहा था लोग फांसी पर चढ़ाये जा रहे थे जेलों में बंद किये जा रहे थे। आज़ादी की लड़ाई में हमारे नौजवानों नें बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया और भारत माता को आजाद कराने में जान और माल कुर्बान किये बड़े बड़े कष्ट झेले और आज हमें गर्व है कि हम स्वतंत्र देश के नागरिक हैं।

1952 में फिल्मिस्तान-लिमि-टेड मुम्बई की फिल्म्म आनंद मठ में वन्देमारम का गीत था। जिसने भारत के जन-जन में राष्ट्रीय की अलख जगाई थी। इसके पूर्व में राष्टप्रेम से ओतप्रोत गीत मिलते हैं लेकिन बंकिमचन्द्र चटर्जी द्वार लिखित गीत वंदे मातरम जिसे लता मंगेशकर और हेमंत कुमारजीं ने गाया था। इसके पूर्व इसी गीत को 1947 की फिल्म अमर आशा में शांती कुमार की मौसकी में कौरस के रूप में गाया था। इस आलेख की शुरुआत हम वंदे मातरम से ही कर रहे हैं।

1950 में ही एक और फिल्म हिन्दुस्तान हमारा रिलीज़ हुई थी जिसमें बसंत देसाई के संगीत में अल्लापा! इकबाल का गीत सारे जहाँ से अच्छा हिन्दुस्ताँ हमागा का बहुत ही खूबसूरत उपयोग किया गया था। इस गीत को गुलरशाज कौर और साथियों ने गाया था। इस गीत को कई और फिल्मों में भी इस्तेमाल किया गया जिसमें विभिन्न गायकों और संगीतकारों ने अपनी धुनों से इसे सजाया जिनमें एन

दत्ता की भाई बहन (आशा भोसले की आवाज़) अभी भी कानों में गूँज रही है । बहुत ही मीठी और सुशीली आवाज में आशा जी ने इसे गाया उसके बाद हमारा घर यह गुलिस्ताँ हमारा फिल्मों में भी इकबाल के इस तरानें को इस्तेमाल किया गया इस तरह वन्देमातरम और सारे जहाँ से अच्छा हिन्दुस्ताँ हमाग दोनों गीत हमारी अवाज़ के जरिये खूब खूब पसंद किये गये। इससे पहले एक फिल्म आई थी गुलामी 1945 में बनी थी जिसका संगीत एस के पाल ने दिया था। रेनुका देवी और मसूद परवेज़ ने उस फिल्म में यह देश प्रेम से लबरेज़ तराना गाया था और लोगों द्वारा खूब पसंद किया गया था। बोल इस प्रकार थे ऐ.ऐ, वतन तुझपे मेरी जाँ निसार..... तू ही मेरा प्यार तू ही मेरा प्यार ख्वाजा अहमद अब्बास, अली सरदार ज़ाफरी जैसे उर्दू अदब के सितारे भी हमारी फिल्मों से जुड़े और उन्होंने देश प्रेम को विषय बनाकर खूब अच्छी-अच्छी फिल्में हमें दी जिनमें धरती के लाल परदेसी हिन्दुस्ताँ हमार जैसी फिल्में आज भी मील का पत्थर है । उसी परदेसी फिल्म का एक-गीत जिसे सरदार जाफ़री साहब ने लिखा था मुझे याद आ रहा है - यह हिन्दुस्तान है प्यारे हमारी जान है। प्यारे से इस गीत को मन्नाडे और साथियों ने गाया था। संगीत दिया था अनिल बिस्वास जी ने। अब मैं यहाँ उन गीतकारों का नाम पेश करूँगा जिन्हें राष्ट्र प्रेम के कारण ही याद किया जाता है। उन्होंने देश और समाज के लिए जिस तरह काम किया है उसे किसी भी तरह भुलाया नहीं जा संकता है ऐसे जियाले हमारी फिल्मों में राष्ट्र प्रेम की अलख जगाने के लिए भी-हमेशा याद किए जाएगें उनमें मैं बहुत ही आदर और प्रेम के साथ प्रदीप जी को याद करता हूँ वह गीतकार के साथ साथ बहुत अच्छे गांयक भी थे बड़नगर, मध्यप्रदेश से ताल्ल्लुक रखते थे।

1940 में बंधन फिल्म आई थी जिसका यह गीत पूरे देश में खूब मकबूल हुआ था चल चल रे नौजवान कहना मेरा श्मान इस फिल्म में अशोक कुमार और लीला चिटनीस मुख्य पात्र थे। संगीत सरस्वती देवी का था बतौर गीतकार और गायक बंधन प्रदीप जी की पहली फिल्म थी।

फिर 1943 में दूसरी फिल्म आई किस्मत में उसमें उनका लिखा यह गीत भी काफी पसंद किया गया बोल इस प्रकार थे आज हिमालय की चोटी से फिर हमने ललकारा है दूर हटो ऐ दुनिया वालों हिन्दुस्तान हमारा है। इस गाने को अमीर बाई करनाटकी और साथियों ने भी आवाज़ से संवार था। फिल्म का संगीत अनिल बिस्वास का था 1954 में फिल्म जागृति बनी। इस फिल्म में भी देशप्रेम से जुड़े कुछ गीत प्रदीप जी ने तहरीर किए जिनमें- दे दी हमें आज़ादी बिना खड़क बिना, ढाल साबरमती के संत तूने कर दिया कमाल संत वूने कर दिया कमाल। इस गीत को आशा भोसले ने अपना स्वर दिया यह गीत गांधीजी के जीवन चरित्र को भोसले ने सर भारतीय लोगों तक पहुँचाता है। इस कारण फिल्म में एक गीत और खूब पसंद किया गया जो बच्चों में काफी लोकप्रिय हुआ और स्कूलों में काफी पसंद किया गया। इस गीत को प्रदीप जी ने ही लिखा और गाया भी। आओ बच्चों तुम्हें दिखाएँ झांकी हिन्दुस्तान की इस मिट्टी से तिलक करो यह धरती है बलिदान की। इस फिल्म के तमाम गीत राष्ट्र प्रेम के उदघोषक गीत बन पड़े थे मोहम्मद रफी का गाया यह गीत भी अपने ज़माने का मकबूल गीत बनकर उभरा शायद आपको भी याद आये। हम लाएँ हैं तूफ़ान से कश्ती निकाल के इस देश को रखना मेरे बच्चों संभाल के 1958 में फिल्म तलाक का यह गीत कहनी है इक बात हमें इस देश के पहरेदारों से ..... मन्नाडे ने जिस तरह से इसे गाया पूरे सैनिकों जवानों किसानों और नौजवानों में एक अजीब किस्म की सनसनी इस गीत ने भरदी। यह गीत भी खूब पसंद किया गया। अभी अभी अरविंद केजरीवाल जी ने मुख्यमंत्री बनने के समय एक गीत गाया था इस गीत को भी प्रदीप जी ने लिखा था 1959 में फिल्म पैगाम का यह गीत राष्ट्रीय बंधुता और एकता का परिचायक गीत था इसके बोल इस प्रकार थे इंसान का इंसान से हो भाई चारा, यही पैगाम हमारा प्रदीप जी ने फिल्मों के जरिये जो काम किया है वह हमेंशा के लिए अमर हो गया है उन्होंने अपनी

लेखनी के जरिये राष्ट्रप्रेम की जो अलख जगाई है उसकी आज भी वैसी ही जरूरत है।

बलराम श्री कृष्ण नामक फिल्म का यह गीत महेन्द्र कपूर ने गाया था संगीतकार सी रामचन्द्र थे। इस देश की आज भी तूफ़ान में नैया है। भारत में फिर से आजाओ बलराम कन्हैया। इनके गीतों में एक तरह का आव्हान मिलता है जो हमें देश प्रेम और आपसी भाई चारगी बंधुता और समरसता का संदेश देता है। इसकी आज सबसे ज्यादा जरूरत है।

संदेश की जब बात चलती है तो हम गीतकार प्रदीप जी को एक बड़े फनकार के रूप में देखते हैं जिन्होंने फिल्म कला को राष्ट्रप्रेंम मानवीयता और शिक्षा से जोड़ते हुए पूरे राष्ट्र को श्रेष्ठ चरित्र और जान की रोझनी प्रदान की।

उनका ये गीत मुझे बंरबस याद आ जाते ही जगत की रोशनी के लिए करोड़ो की रोशनी के लिए सूरज रें जलते रहना और यह गीत अंधेरे में जो बैठे हैं नज़र उनपर भी कुछ डालो, अरे ओ रोशनीवालों। हमारी फिल्मों में ऐसे असंख्य गीत हैं जिन्होंने लोगों में राष्ट्रप्रेम के चिराग जलाये हैं। देश प्रेम और राष्ट्रीय वैचारिकता को लेकर फिल्मों में जो गीत मिलते हैं वह हमारी धरोहर हैं उन्हें संभालकर और सहेज कर रखना-हमारी आने वाली पीढ़ी को कुछ अनमोल देने की तरह है इन गीतों की चमक कम नहीं होने वाली थी। निसंदेह काल जयी चनाएं जो हमारे देश के विविध आयामी- स्वरूप-को पेश करती हैं मैं यहाँ और भी कई गीत दर्ज कर सकता हूँ। लेकिन मैंने कोशिश की है कि उन्हीं गीतों को आपके सामने रखूँ जो आसानी से उपलब्ध हैं और स्कूलों कार्यक्रमों पर्वो के अवसर पर बजाये जा सकें, इनको सुनना और सुनाना भी राष्ट्र की गरिमा को एक दूसरे तक पहुँचाने का बड़ा काम है मैं उन गीतकारों को साधुवाद देता हूँ।

अहद-प्रकाश
16, राजीव नगर, कोहेफिजा,
भोपाल-462001(म.प्र.)
मो-0932947531

अपनी हिन्दी

डॉ. बद्रीप्रसांद पंचोली

हिन्दी 134 करोड़ लोगों द्वारा बोली और समझी जानेवाली संसार की प्रथम भाषा है। चीन की मण्डारिन भाषा को बोलने वालों की संख्या 110 करोड है। चेक गणराज्य के प्रो. ओदोलेन स्मेकल के अनुसार यह संसार की सबसे सरल भाषा है जिसके व्याकरण को पोस्टकार्ड पर लिखा जा सकता है। इसकी करना और होना- दो क्रियाओं द्वारा जीवन के सभी व्यापारों को व्यक्त किया जा सकता है। संसार के लगभंग-300 विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ने और शोध करने की सुविधा है।

हिन्दी हिन्द की भाषा है। देश के पृथक् पृथक् जनपदों में हिन्दी वहाँ की स्थानीय बोली की शैली में हिन्दी बोली जाती है। यह सारे भारत को जोड़ने वाली भाषा हैं। आजादी की लड़ाई में हिन्दी को हथियार बनाया गया था। इसकी भोजपुरी उपभाषा के 7 करोड़ लोग देश के बाहर दूसरे देशों में रहते हैं। वह भी अन्तरराष्ट्रीय भाषा बन गई है।

देश की पंजाबी, गुजराती, मराठी, तमिल और बंगला भाषाएँ भी अन्तरराष्ट्रीय भाषाएं हैं। हिन्दी की सरलता और लोकप्रियता को देखकर आक्सफोर्ड क्षेत्र में ब्रिटेन ने डेढ़ दर्जन हिन्दी विद्यालय खोले हैं स्मरणीय बात यह है की ब्रिटेन में 23 गाँव संस्कृत भाषी भी निकलें हैं। एंगलोसेक्सन लोगों के बसने के पहले वहाँ भारतीयों की ही बस्तियाँ थीं।

हिन्दी संस्कृत की जेठी बेटी है। संस्कृत में शब्द निर्माण की अद्‌भुत क्षमता है। वह सुविधा हिन्दी को भी अनायास ही मिल गई है। हिन्दी में तत्सम और तदूभव के अतिरिक्त देशज शब्दावली भी विद्यमान है। विद्वानों का मानना है कि हिन्दी में स्वराघात बलाघात नहीं है। इस कारण वह प्रान्तीय भाषाओं की किसी भी शैली में बोली जा सकती है।

संस्कृत में व्युत्पत्ती और निरक्ति के आधार पर शब्द की यात्रा चलती है। उसकी शब्दावली अपने शब्दों के अर्थ स्वयं प्रकट कर देती है। हिन्दी के शब्द भी अपना अर्थ स्वयं घोषित कर देते हैं। संस्कृत का प्रभाव होने के कारण ऐसा होता है। पर, संस्कृत में देशज शब्दों का सहारा अपवाद रूप से ही लिया जाता है। हिन्दी में देशज शब्द है और हिन्दी की अर्थवत्ता में वृद्धि करते हैं हिन्दी की मौलिकता को उद्‌घोषित भी करते हैं।

अंगरेज चले गये पर अंगरेजी की गुलामी से मुक्ति नहीं मिली। इस कारण हिन्दी की अर्थ सम्पदा और संस्कारवत्ता नष्ट हुई। इस ओर हिन्दी भाषियों ने भी सावधानी नहीं बरती। महात्मा गाँधी ने तो कहा था कि हिन्दी और आज़ादी में से

एक को चुनना पड़े तो मैं हिन्दी को चुनूगाँ। हिन्दी की अवहेलना करने के कारण हमारी आज़ादी अधूरी रह गई। अवहेलना के कारण ही शुद्ध हिन्दी का स्वरूप ही खाने लगा।

अच्छे अच्छे हिन्दी के विद्वान भी हिन्दी के शुद्ध रूप का प्रयोग नहीं कर पा रहे हैं। भाषा जीवन-साधना का अंग होती है। मानवता का आभूषण होती है। उसकी इस गरिमा को सुरक्षित रखने का काम विद्वानों का ही है। जब तक अगरेजी की गुलामी से मुक्त नहीं होंगे तब तक वह हिन्दी की छाती पर बैठी रहेगी। हिन्दी को केवल अनुवाद की भाषा नहीं समझना चाहिए।

बी-6, दातानगर, रेम्बलरोड,. अजमेर - 305 001
फोन न. 0145-2425664. मो. नं. 9928049399

शोक समाचार

श्रीमती अलका जायसवाल पत्नी श्री प्रकाश वीर जायसवाल, निवासी: फ्लैट संख्या 164, हीवो अपार्टमेंट, सैक्टर 16ए फरीदाबाद हरियाणा का देहान्त दिनांक 24-12-2022 को हो गया है। अलका जायसवाल जी का जन्म दिनांक 09-10-1969 को प्रयागराज के मुठ्ठी गंज में श्री लल्लू लाल जायसवाल के यहां हुआ था। उनकी माता जी नाम श्रीमती कमला देवी है। बचपन से श्रीमती अलका जायसवाल काफी प्रतिभावान थी तथा बी एड, एम ए संस्कृत प्रथम वर्ष में योग्यता हासिल की थी। स्वर्गीय श्रीमती अलका जायसवाल जी का विवाह श्री प्रकाश वीर जायसवाल के साथ दिनांक 25-04-1993 को कीट गंज, प्रयागराज में जायसवाल परिवार में हुआ था। परिवार में पति श्री प्रकाश वीर जायसवाल के साथ पुत्र श्री परम जायसवाल और पुत्री उपाधि जायसवाल है। स्वर्गीय श्रीमती अलका जायसवाल जी को दिनांक 27-12-2022 को आर्य समाज मंदिर केंद्रीय सैक्टर-15, फरीदाबाद में उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों द्वारा भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। तथा उनके द्वारा छोड़े गए जायसवाल परिवार को इस दुख: की घड़ी में सांत्वना प्रदान की गई कि परमपिता परमेश्वर दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करे तथा जायसवाल परिवार को सुख शांति प्रदान करे।

माखन चौधरी, उपाध्यक्ष, (वित्त व आडिट)

श्री किशन लाल जी नहीं रहें

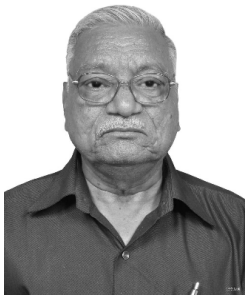

श्री किशन लाल जी जायसवाल मूलरूप से अम्बेडकर नगर, उत्तर प्रदेश से वर्ष 1960 में दिल्ली व्यवसाय के सम्बन्ध में आये थे। इनकी पत्नी का नाम श्रीमति कमला जायसवाल था। श्री किशन लाल जी पांच भाई- श्री राधेश्याम जायसवाल, स्वर्गीय श्री घनश्याम जायसवाल, श्री कृपा शंकर जायसवाल तथा श्री उमाशंकर जायसवाल हैं। श्री किशन लाल जी के तीन पुत्र श्री राज कुमार जायसवाल, श्री विजय कुमार जायसवाल तथा श्री कुलदीप कुमार जायसवाल है। इनकी दो पुत्रियां श्रीमति सुशीला जायसवाल तथा श्रीमति इन्दु गुप्ता है। सभी तीन पुत्रों तथा दोनों पुत्रियों की शादी हो गयी है। श्री किशन लाल जी अपने मृदुल व्यवहार तथा दयालुता के लिए प्रसिद्ध थे। इनका दिल्ली में ही गिफ्ट आर्ट्टम का व्यवसाय था। श्री किशन लाल जी का स्वर्गवास दिनांक 5 अप्रैल 2023 को हृदयगति रूक जाने के कारण हो गया। दिनांक 17 अप्रैल 2023 को ब्रह्मभोज व शांतिपाठ का आयोजन सुभद्रा कालोनी पार्क, दिल्ली 35 में किया गया। शांति पाठ में जायसवाल समाज तथा कालोनी के काफी संख्या में लोग एकत्रित होकर श्रद्धांजली अर्पित किए। जायसवाल समाज दिल्ली के अध्यक्ष श्री राज कुमार जायसवाल तथा श्री सन्तराम जायसवाल, तथा श्री सन्तराम जायसवाल, कलचुरी जायसवाल संघ, दिल्ली के सलाहकार श्री राधेश्याम जायसवाल, महासचिव श्री जुगल किशोर गुप्ता तथा अध्यक्ष श्री नर्बदेश्वर प्रसाद जायसवाल सहित काफी संख्या में लोगों ने अपनी भाविनी श्रद्धांजली अर्पित किया।

जुगोल किशोर गुप्ता
सदस्य राष्ट्रीय कार्यकारिणी,
जायसवाल जागृति

जायसवाल जागृति

आजीवन सदस्यता आवेदन पत्र

1. पूरा नाम .....

2. शैक्षिक योग्यता .....

3. आवासीय पता .....

.....

.....

पिन कोड :.....

फोन : .....

4. व्यवसाय / कार्यालय .....

.....

.....

पिन कोड :..... फोन/मो. : .....

5. विशेष सामाजिक कार्य

प्रस्तावक :

आवेदक के हस्ताक्षर

अनुमोदक (महासचिव)-M. 9868241044

आजीवन सदस्यता शुल्क : रू : 1500/-

भुगतान विधि : चेक, ड्राफ्ट, ऑनलाइन

जायसवाल जागृति खाता विवरण :-

Axis Bank खाता संख्या 015010100247337, IFSC UTIB 0000015

ONLINE भुगतान के तुरंत बाद

कुर्यात् सदा मंगलम्

नए पोस्टल नियमों के अनुसार पते पर पिनकोड लिखना अनिवार्य हैं। उचित होगा यदि आप या तो दो मोबाइल नं. दें अथवा एक मोबाइल और एक लैंडलाइन टेलीफोन नम्बर भी अवश्य दें।

वैवाहिकी

नोटः सदस्यों/पाठकों की सुविधा हेतु 'वैवाहिकी' को अंग्रेजी अल्फाबेट्स के क्रम में अर्थात अभिभावकों के नामों के अनुसार (वर्णक्रमानुसार) संकलित/वर्गीकृत किया गया है। मांगलिक एवं सामान्य वर्ग को अलग-अलग शीर्षक के अंतर्गत दर्शाया गया है।

'वैवाहिकी' शुल्क

प्रत्येक अभिभावक / विज्ञापनदाता से अंतिम पृष्ठ पर ग्राहक / सदस्यता के लिए दर्शाए गए 1500/ रु. के शुल्क में वैवाहिक विज्ञापन के प्रकाशन का शुल्क शामिल है। पत्रिका की एक प्रति उन्हें भेजी जाएगी। सुधी एवं सम्मानित विज्ञापनदाताओं से यह भी निवेदन है कि वे पत्रिका में विज्ञापन के माध्यम विवाह तय होने पर मंगल-निधि के रूप में अपनी सामर्थ्य के अनुसार यथेष्ट सहयोग राशि भेजने की कृपा अवश्य करें, क्योंकि इस स्तर की पत्रिका के प्रकाशन पर संस्था को आर्थिक व्यय का भार भी वहन करना पड़ता है।

विवाह सम्बन्ध तय हो जाने पर प्रधान/कार्यकारी संपादक मोबाइल को सम्बन्धित क्रम संख्या की सूचना देते हुए टेलीफोन अथवा कोरियर द्वारा पत्र भेजकर तुरंत सूचित करें। सदस्यता शुल्क अथवा विज्ञापन की राशि नीचे दिए गए पते पर भेजें। हमारे **AXIS Bank** के **A/C No.** 0150101-00247337 **IFSC-UTIB-0000015** में सीधे जमा कराके हमें तदनुसार सूचित करें। स्मरण रहे, **Net-Banking** द्वारा जमा की गई राशि की रसीद या उसकी प्रतिलिपि सलंग्न करना नितान्त अनिवार्य है।

'विशेष सूचना'

''वैवाहिकी स्तम्भ'' के अंतर्गत 'मांगलिक वर्ग' एवं 'सामान्य वर्ग' के अतिरिक्त एक तीसरा वर्ग *''तलाकशुदा (Divorcee) विधुर, विधवा आदि अन्य वर्ग''* भी आरम्भ किया गया है। हालांकि हमारी दृढ़ मान्यता है कि परिवारों में यह स्थिति किसी भी स्थिति में आनी ही नहीं चाहिए। हर स्थिति में विवाह की पवित्र संस्था का प्रत्येक पक्ष को सम्मान देते हुए उसे बनाये रखना चाहिए। किंतु देखा गया है कि कहीं मिथ्या दंभ व **Ego** के कारण तो कहीं अन्य अपरिहार्य कारणों से अलगाव प्रत्येक पक्ष के लिए अवश्यम्भावी हो जाता है। अतः जीवन के बिखरे सूत्रों को नए सिरे से पिरोना भी अनिवार्य हो जाता है। इसलिए इस विशेष वर्ग की आवश्यकता की पूर्ति के लिए यह स्तम्भ आरंभ किया गया है। यदि कोई सज्जन अपना या लड़के-लड़की का नाम गोपनीय रखना चाहते हैं तो इसकी भी व्यवस्था की जा सकती है। ऐसे बंधुगण या तो हमसे या फिर संबंधित क्रमांक विशेष के टेलीफोन नम्बर से सम्पर्क कर सकते हैं। ''सर्वे भवन्तु सुखिनः''। अस्तु।

आजकल समाज का एक बड़ा वर्ग प्रोफेशनल कारणों से विदेशों में स्थायी या अस्थायी रूप से बस गया है। इनकी ओर से भी अपने संतानों के वैवाहिक सम्बन्ध के लिए हमारे पास पूछताछ हो रही है। अतः इस वर्ग विशेष की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए अनिवासी भारतीय **(NRI)** वर्ग स्तंम्भ आरंभ किया गया है।

विशेष सूचनाः जिन वैवाहिक विज्ञापनदाताओं का विज्ञापन पिछले तीन वर्षों से लगातार प्रकाशित किया जा रहा था, उनके वैवाहिक विज्ञापन अब प्रकाशित नहीं किए जा रहे हैं। अतः ऐसे जो भी विज्ञापन-दाता पुनः आगे भी अपने वैवाहिक विज्ञापन प्रकाशित कराने के इच्छुक हैं, वे कृपया हमारे कोषाध्यक्ष श्री पंकज जायसवाल अथवा श्री माखन चौधरी, उपाध्यक्ष, (वित्त) मो0-99112113033 से तुरंत सम्पर्क करके **M-9818426123, 011-41687467** *एवं 1500/-रु. का शुल्क प्रषित करके विज्ञापन पुनः प्रकाशित करवाने का कष्ट करें।*

राशि रेखांकित चेक, रेखांकित बैंक ड्राफ्ट अथवा मनीआर्डर द्वारा ''जायसवाल जागृति'' के नाम से देय होना चाहिए। शुल्क भेजते समय अपना पूरा नाम पता, पिन कोड आदि स्पष्ट लिखें ताकि पत्रिका आपको नियमित रूप से मिलती रहे। विशेषः- जिन सज्जनों को डाक से पत्रिका प्राप्त करने में असुविधा हो रही हो, वे कृपया 200 रु. (दो सौ रुपये) वार्षिक शुल्क अलग से प्रेषित कर कोरियर अथवा ***Regd. Post*** *द्वारा पत्रिका मंगवा सकते हैः-*

सम्पादक मण्डल

(कृपया वैवाहिकी सहयोग के लिए अन्तिम पृष्ठ देखें)

अति विनम्र निवेदन

अभिभावकों से यह विनम्र अनुरोध है कि भविष्य में शुभविवाह निश्चित होने अथवा शुभ विवाह सम्पन्न होनें पर जायसवाल जागृति को यथाशीघ्र अवश्य सूचित करें ताकि हम अपनी संस्था की शुभकामना एवं बधाई संदेश वर-वधु के लिए प्रकाशित कर सकें। आप के सहयोग की अपेक्षा में जायसवाल जागृति।

सम्पादक मण्डल

अनिवासी भारतीय (NRI) वर्ग

1. **अभिभावक–**Anil Kumar Jaiswal (Engineer), Prop. Shubham Builders, H.No. 2708, DLF City, Phase-IV, Gurugram, (Near Galaria Market Shopping Complex), M.9811663284, (0124) 2386815

   पुत्र–Abhimanyu Jaiswal, DOB, 27 January 1994, 5'9", MBA Finance (New York USA) Noridian Healthcare Solution, LIC Compensation Consultant, House: West FARGO, North Dakoota, U.S. Phone: (940) 3909979

2. **अभिभावक–डा. देवेन्द्र कुमार जायसवाल (बहरीन के अस्पताल में डॉक्टर) माताजी: प्रीति जायसवाल (बहरीन विश्वविद्यालय में अंग्रेजी की लेक्चरर) फोन न.–91. 9871971380, (+973) 5393228 बहरीन) कोठी C-565 NRI City, Sector Omega-II, Greater Noida, U.P. प्रतिष्ठित परिवार, अधिकांश दिल्ली में प्रतिष्ठित परिवार, अधिकांश दिल्ली में**

   पुत्री–नेहा जायसवाल, जन्मतिथि–23-8-1994, 5'2", साफ रंग गेहुँआ, Doing Master in Computer System in Australia (Final Semester).

3. **अभिभावक :** श्री मनोज कुमार गुप्ता, (Sr. Sec. Officer Afcs) 1240/C-5 प्रीत विहार, चाणक्य अपार्टमेंन्ट के सामने आदर्श नगर, नमोदा रोड, जबलपुर-482001 (मध्यप्रदेश), Ph : 09752418123, 8349231125 **पत्र व्यवहार का पता:** श्री श्रीराम जायसवाल Retd SP/CBI, 10 शांति निकेतन, 89, नर्मदा रोड, जबलपुर (म.प्र.)-482001

   पुत्र : सोमेश कुमार, 22-4-1991, (5:10 AM, जबलपुर) 5'6", सुन्दर स्मार्ट, B.Tech. MS(CS), मोर्गन स्टेनली में Technical Associate, न्यूयार्क (अमेरिका) पैकेज 1 लाख डॉलर +बोनस।

4. **Father-** Dr. K. Kant Jaiswal has his own property with gas station in USA. Contact No. 001-6019544901 (Whatspp)

   Daughter : Unnati Jaiswal, DOB- 16-Oct-2000, Time of Birth-9:50 AM, Birth Place- Sirsa, Qualification-Graducation, now pursuing Master degree in Science education (Biology)

मांगलिक वर्ग

A1. **अभिभावक :** श्री बलजीत कुमार जायसवाल 5/सी, एवन कालोनी, नवीन नगर, सहारनपुर (उ.प्र.)-247001 ड रू 9412453810

   पुत्र : डॉ. कमल जायसवाल (आंशिक मांगलिक), 5'8", 15-9-87, गेहुंआ, B.P.T, MPT (Neuro physiothe rapist नोएडा स्थित Health Care Comp. Pvt में कार्यरत, पैकेज 5 लाख रुपये वार्षिक।

2. **अभिभावक: राजकिशोर जायसवाल,** A-106/1, Fourth Floor, Joshi Colony, I.P. Extension, Delhi-110092, Mob-9717546924, 9810950426

   पुत्री (1)- रीतू जायसवाल (मांगलिक) 11-8-1990, 4'9", colour Normal, B.com (Hons) CA (Inter)

   पुत्री (2)- अल्का जायसवाल (आंशिक मांगलिक) 2-10-1992, 4'9", colour wheatish, B.Com (Hons), CA (Foundation)

3. **अभिभावक- श्रीमती अन्नपूर्णा गुप्ता पत्नी स्व. श्री संतोष कुमार गुप्ता**, म. नं. 1306, गली नं. 23, शहीद भगत सिंह कॉलोनी, वैस्ट करावल नगर, दिल्ली-110094, M.-9818289471, 011-22933951

   पुत्री- सृष्टि (मांगलिक), जन्म 30-9-1989, जन्म समय शाम 6:00 बजे दिल्ली में, 4'10" गोरी, बी.ए., मास्टर डिग्री माँश कमनिकेशन, रेडियो, टी.वी. जनर्लिज्म डिप्लौमा, सर्विस Asst. Managar Marketing, Salary 20,000 P.M.

4. **अभिभावक: विजयकुमार जायसवाल**-टिम्बर मर्चेन्ट, सी-94/1, चन्द्रपुरी, चांदबाग, भजनपुरा रेडलाइट के पास, दिल्ली-110094 फोन नं. 09999285302

   पुत्री-मेघा, (मांगलिक) जन्मतिथि-04 अगस्त 1989, 7 बजे सायं (दिल्ली), साफ रंग, 5 फिट 2 इंच, शिक्षा-**सी.ए., एम. बी.ए.** प्राइवेट कम्पनी ओखला, दिल्ली में कार्यरत, पैकेज 10-12 लाख वार्षिक। स्मार्ट, आकर्षक व्यक्तित्व।

5. **अभिभावक :** अनिल कुमार जायसवाल, 41/1-A/1 गली.14, ईस्ट आजाद नगर, कृष्णा नगर, दिल्ली-110054, M : 9210705572

   पुत्र (1) : हिमांशु जायसवाल **(मांगलिक)**, B.A. 5'8" जन्म 17-2-1993 (9.30 AM, Delhi) गोरा, प्रो. मयंक एंटरप्राइस (Ladies garments & Accessories) तथा Lace के होलसेल व्यवसायी। **आय-2 लाख रुपये मासिक।**

   पुत्री (2) : आकांक्षा **(मांगलिक)**, 5'3" जन्म 17-2-1993 (9.05 AM Delhi) गोरी, MBA (final) from DU.

6. **अभिभावक :** श्री जुगल किशोर जायसवाल (व्यवसायी) मण्डी चौक, विकासनगर, देहरादून (उत्तराखण्ड)

   पुत्री : स्वप्निल जायसवाल, (आंशिक मांगलिक) M.Tech (Comp. Sc), 5'4", 26-10-1989, (8.35AM, देहरादून) MNC नोएडा में कार्यरत, पैकेज 2.50 लाख रुपये।

7. **अभिभावक–**श्री शिव प्रसाद जायसवाल (दिल्ली सरकार में Class-I अधिकारी) पता–391 F, पॉकेट-2, फेज-I, मयूर विहार, दिल्ली-110091(011)-22753484, **फोन न.–** 9599959013

   पुत्र–अप्रतिम जायसवाल (मांगलिक) जन्मतिथि–4-8-1992, (8.03 PM इलाहाबाद) 6'1', गेहुआ B.Tech, fidelity International, नोएडा में कार्यरत, पैकेज 10 लाख।

8. **अभिभावक-**श्री तेज नारायण जायसवाल (प्रतिष्ठित व्यवसायी) 104A/360, रामबाग, कानपुर-208012(उ.प्र.) M.-9839027212, 9657129022 Email : aalekhjaiwswal@yahoo.com

   पुत्र-आलेख (आशिक मागलिक) एकलौता पुत्र, 23-06-1990, 5'8" गेहुआ आकर्षक एवं प्रतिभाशाली व्यक्तित्व प्रशिक्षित B.Tech, Business हेतु प्रोफेशनली क्वालिफाइड या टीचर कन्या को वरीयता।

9. **अभिभावक–**अखिलेश जायसवाल, जायसवाल फार्मा 171ए, ठेठरी बाजार चौक, सुल्तानपुर, उत्तर प्रदेश, फोन न.– 9532252230, 9911515253

पुत्री–सुष्मिता जायसवाल, **(मांगलिक)**, जन्मतिथि–11-11-1992, (सुल्तानपुर) 5'3', fair, M.Tech (E.C.) Gold Medalist, Ph.D Ist Year M.N.N.IT. Allahabad U.P.

10. **अभिभावकः** Rajeev kumar Jaiswal, 35 Swami Vivekananda Marg Prayagraj Uttar Pradesh, Mob. 9336901230, 9415238934
पुत्रः Rajat Jaiswal. (Varun Jaiswal), B.tech, DOB. Age 30, (electrical home appliances) wholesale and retail Firm name-shree electrical & Co Prayagraj

11. **Father-**Shri Dinesh Chandra Jaiswal (Business Man) Address: 113, Lukarganj, Beharikuti, Allahabad (UP) Contact No. 9305094705, 9453993978 Guardian Subhash Jaiswal M.no 9695959000
Daughter-Kr Arpita Shilpi Jaiswal DOB 5th Dec 1985 Birth Time 04:26 AM Place of Birth Allahabad (Uttar Pradesh) Height 5.5" Complexion ' Fair & Charming Nature Religious, Mild, Soft Spoken, Diligent Hobbies 'Reading, Cooking, Listening Music Qualification B.SC, MBA Occupation : Deputy Manager- Operations (Matrix Cellular - Delhi) Language Known ¥ Hindi & English

सामान्य वर्ग

1. **अभिभावक :** श्री अरुण कुमार चौधरी, कोशी एक्सरे क्लिनिक, एम.जी.मार्ग., खगड़िया विहार-851204 M : 9431417963
पुत्री : श्वेता कुमारी, 5'5" जन्म 9-9-1988, (समस्तीपुर) B.C.A, गोरी स्लिम, PNB रायपुर में Probationary Officer.

2. **अभिभावक :** श्री अनिल कु. जायसवाल 160, अनूप नगर रोठा रोड, मेरठ-250001 (उ.प्र.) M : 9219613863
पुत्र : अंकित जायसवाल, 4-11-1993 (9.25 PM मेरठ, 5'6", गेहुँआ, B. Com., ट्रांसपोर्ट व्यवसाय, वार्षिक आय 4 लाख स्मार्ट व्यक्तित्व।

3. **अभिभावक :** श्री ओमप्रकाश जायसवाल (चावल के थोक व्यवसायी) D-II, 397-398, पहली मंजिल, Sector-7 रोहिणी, दिल्ली-110085 M : 9899424368, 8178845541
पुत्र : सुधीर कुमार जायसवाल, 22-2-1988 (7.42 AM सिलीगुड़ी, प. बंगाल), 5'7", IDI MIA, नोएडा में Sr. Software Enginner, B.Tech, साफ, स्मार्ट व्यक्तित्व, Email : Sudhirjustme@gmail.com.

4. **अभिभावक–**श्री अनिल कुमार जायसवाल, (Retd. Supdt. Archeological Survey of India)–74/22, Shipra Path, Mansarovar, Jaipur फोन न.–0759792110, 09929660874
पुत्र–आकाश जायसवाल, जन्मतिथि–5-11-1988, (4.35 AM देहरादून) 5'10', M.Com, MBA (IBS) Credit manager, Barclays Bank) पैकेज 17.5 लाख, शिक्षित परिवार, स्मार्ट, आकर्षक व्यक्तित्व।

5. **अभिभावक :** स्व. श्री बिहारी लाल जायसवाल दिल्ली दरवाजे बाहर,दारू गोदाम के पास, कोठिया पावी मोहल्ला, अलवर (राजस्थान) M : 7014453944, 9667152823, 9309232213 **पुत्र (1) :** रिंकू, 10-12-1994, 12th, ITI, self Business. **पुत्र (2) :** पिंकू 6-6-1996, Diploma in mechanical, self business.

6. **अभिभावक :** श्री सी.पी. गुप्ता (Sr. Advocate), 193, कल्पना नगर, सिविल लाइन्स, इटावा-20600। प्रतिष्ठित परिवार (M) 9410485758, 7417715565
पुत्री : डॉ. निधि गुप्ता, जन्म-24-01-1980, (16.20 P.M. इटावा उ.प्र.), MBBS, DOMS, (GRMC ग्वालियर), Pursing MD in Microbiology (BHU), 5 फुट 1 इंच, स्लिम, सुन्दर, गौरवर्ण, आकर्षक, स्मार्ट व्यक्तित्व। पेंटिंग पठन-पाठन, पाक-कला एवं गृह-सज्जा का शौक। चार वर्ष तक Rural PGI, सैफई इटावा के नेत्र विभाग में Sr. Resident, परिवार में अन्य सदस्य सिविल जज अथवा मेडिकल व्यवसाय में संलग्न।

7. **अभिभावकः श्रीमती चंद्रकांता,** 5 जॉली कॉम्प्लेक्स अभियन्ता नगर, नाशिक (महाराष्ट्र)-422008 M. 9871262622, 8983574660
पुत्र- गौरव, 29-04-1982 (04: 16P.M. दिल्ली), 5'8", B.C.A. Deals in Finance and Share Market, Rs 30,000/-P.M. शिक्षक, बड़ी बहिन कनाडा निवासी।

8. **अभिभावक–**श्री देवेन्द्र जायसवाल, पता–D-219 आनंद विहार, दिल्ली-110092, फोन न.–9212725140, 9555541050
भतीजी–मेघा जायसवाल, जन्मतिथि–16-12-1984, 5'2", MA (ECO), B.Ed, Pursuing Ph.D. स्मार्ट fair, Hobbies : Reading, teaching.

9. **अभिभावक**-श्री फुलेन्द्र चौधरी, सम्पर्क डॉ. सत्यदेव गुप्ता जायसवाल L-1/56, श्री कृष्ण पुरी, बोरिंग रोड, पटना-800001 (बिहार) M-9308741023
पुत्री-प्रियंका चौधरी, B.A., 5'6" 4-9-1988 अति सुन्दर गोरी, स्लिम, दिल्ली पब्लिक स्कूल में टीचर, पति की अल्प बीमारी के कारण मृत्यु दो पुत्र क्रमशः 9-10 वर्ष बच्चों को नाना-नानी रखने को तैयार, योग्य संस्कारी वर अपेक्षित विधुर भी मान्य।

10. **Father's-** Shri G.L. Chouksey, Retd. From Forest dept., M.P. Govt., Bhopal, 43 Prakash Nagar, Ayodhya Bypass road, Piplani, Bhopal-462022 Ph. 7987142364, 9981770414.
Daughter : MEENAL CHOUKSEY, 09-06-1985 (Time 00.10), Prakash Nagar, Bhopal, M.P., Height-5'.3", Fair, B.Sc., MBA (Finance), PGDCA, Manager, F.C.I. (Govt. of India), West Zone, M.P. Region, 10 Lakhs P.A.

11. **अभिभावक-** गंगा राम जायसवाल, **पताः** Station Road, Purani Basti, Near purani Thana Basti, District Basti (UP)-272002 M.-9044015597, 8604262492
पुत्र- विशाल जायसवाल, 5'7" 15-1-1987 Qualification B.A. profession; SBI Life Insurance Advisior + SBI ATM Guard, Income 2.5 Lac.

12. **Fathers:** Girvar Singh Rai- (Railway Contractor) In front of Jamuna bai Temple, 70 Colonypura, Ghasmandi, Gwalior (M.P.) 474003; Mob. 9329092587
Daughter: Neha Rai, DOB: 27.01.1995 (5:00 AM) Place of Birth: Ashok Nagar, Madhya Pradesh, Complexion: Fair Height: 5'7" Qualification: LL.B, B.A. Programme 12th Standard (M.P. Board) Faculty of Law (University of Delhi) Lady Shri Ram College for Women (University of Delhi)

13. **अभिभावक :** श्री हरि प्रकाश जायसवाल म.न. 1292/28 फ्रेन्डस कॉलोनी, सिद्धेश्वर मंदिर के पास, झांसी (उ.प्र.) -282001 M : 07460000268, 09839419372
पुत्र : विकास जायसवाल, 29 वर्ष, कद 5'8" . B.Arch. Master in Architecture (N.I.T. Bhopal) राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत **आय 1 लाख- रु. प्रतिमाह।**

14. **अभिभावक :** श्री इंदकुमार जायसवाल (B.Tech, MBA)] Asian Paints Ltd, Mumbai में वरिष्ठ पद पर कार्यरत 402 धनशिला अहिंसा मार्ग, खार (पश्चिम) मुंबई-400-052 M. 09820215011/09820194569 (मूल निवास-इलाहाबाद)
पुत्री : स्मृति, 8-9-1985 B.M.S. (Bachelor of Management Science), M.Com, CFA (Leve l I & II), MBA (from Mumbai), 5'2", स्लिम सुंदर आकर्षक मुंबई स्थित बैंक ऑफ अमेरिका में कार्यरत, अच्छा वेतन।

15. **अभिभावक-** श्री कृष्णा प्रसाद एवं सविता चौधरी, F124, पॉडव नगर गली न० 6, दिल्ली- 110092, मो० 919560444808 (सुलतानगंज (बिहार) के रहने वाले हैं।)
पुत्री (1) निक्की, उम्र 31 वर्ष, उजली गोरी 5'10" कम्प्यूटर ग्राफिक्स में कैरियर, बी.ए (अर्थशास्त्र) प्राइवेट कंपनी दिल्ली में नौकरी, पाक कला में प्रवीण।
(2) सोनी, उम्र 28 वर्ष, सुन्दर, गोरी 5'5" कम्प्यूटर ग्राफिक्स की जानकारी। बी.ए. (अर्थशास्त्र) दिल्ली में प्राइवेट नौकरी।

16. **अभिभावक-** मुकेश कुमार जायसवाल, स्टेट बैंक वाली गली, मकान नं. 1597, कच्ची मंडी कोसी कलामथुरा-281403 M.-8533800619, 7906018745
पुत्र- रोहित जायसवाल, 6'1" 27-5-1988 (8:25 PM Kosikalan) B.A. Rajasthan University Exam by D.G.C.A. (all cleared) CPL and PPL, Licence Business Lazy Mozo Back Peeker Foreigners Guest House at Civil Line Jaipur (Rajasthan)

17. **अभिभावक : श्रीमती मीना देवी जायसवाल,** D. 14/88, टेढ़ी नीम, दशाश्वमेघ, वाराणसी (उ.प्र.) M 9935470506
पुत्र- सूरज कुमार जायसवाल 15-07-1989 (6.20 P.M. वाराणसी) 5' 5", स्मार्ट, आकर्षक ग्रेज्युएट, B.H.U में Music Teacher तथा सितार और तबला आदि वाद्य उपकरणों के व्यापारी, स्वयं का मकान।

18. **अभिभावक-**श्री मोहनीश जायसवाल, (व्यवसायी), फोन न. -9654778803
भाई-श्री प्रशान्त जायसवाल, 26-6-1990, (10.33 AM) 5'7', B.Com, spectacle frames wholeseller, स्मार्ट, पैकेज 1 लाख प्रति माह।

19. **अभिभावक :** श्री ओम प्रकाश चौकसे (किसान) एवं श्रीमती आभा चौकसे, करेली, नरसिंहपुर (म.प्र.) M : 9826611582
पुत्री : वसुन्धरा चौकसे, 17.8.1988ए (करेली म.प्र. 6.03 AM) 5'7", B.E. (IT) from LNCT Bhopal. Rank Asstt. इंडियन कोस्ट गार्ड में Commandant, Air station चेन्नई में Logistics office के पद पर तैनात 3-5 वर्ष की service seriority.

20. **अभिभावक :** श्री ओम प्रकाश जायसवाल Prop. Navjoyti Enterprises, ब्लॉक UP, प्लाट नं. 55 प्रथम मंजिल पीतमपुरा, दिल्ली-110034, M : 9810562034 Email : rahul.regard@gmail.com.
पुत्र (1) : राहुल, 02-01-1989, (5.35,pm कोलकाता), 5'7" गौरवर्ण, स्मार्ट, MBA, स्वयं का व्यवसाय (Electrical Accessories)
पुत्र (2) : विनय, 26-05-1990, (4.17,pm दिल्ली) MCA, 5'8", MNC में Software Engineer, अच्छा पैकेज, गौरवर्ण, स्मार्ट, आकर्षक।
पुत्री (1) : नमिता, 24-08-1992, (8.15,am कोलकात), 5'2", B.Tech (MDU University), MNC में Software Engineer, अच्छा पैकेज गौरवर्ण, स्मार्ट, आकर्षक।

21. **अभिभावक :** प्रदीप कुमार जायसवाल (Business man), मकान नं. 1076, Ward No. 3 कैनाल रोड, हर्वटपुर (देहरादून)-248142, M : 91-7017792611, 91-9412150835
पुत्री : कनिका जायसवाल, 5'2" जन्म 16-7-1990, M.Com, वर्तमान में Del. Ed. कर रही है तथा विद्यालय में पढ़ा भी रही है। तथा बैंक की तैयारी भी कर रही है। गोरी, इकहरा वदन, सुन्दर।

22. **अभिभावक:** प्रमोद कुमार (सुपुत्र डॉ. सत्यदेव गुप्ता) C/o L-1/56 श्री कृष्णापुरी बोरिंग रोड, पटना-800001 (बिहार) फोन 9430060645, 9308741023, 0612-2541587
पुत्री-मुदिता 15-3-89, 5'4" B.A. (Hons. Eng.) PGDM, सुंदर, गोरी, आत्मनिर्भर संस्कारी वर अपेक्षित।

23. **अभिभावक :** श्री प्यारे लाल जायसवाल, (व्यवसायी), 176, मूनगली, गार्डन, साहुकार लाइन, हलद्वानी (नैनीताल) उत्तर प्रदेश
पौत्र : आकाश कुमार, पारिवारिक कारोबार में सलग्न सुंदर, स्वस्थ, स्मार्ट, आकर्षक, 25 वर्ष, B.Tech, जन्म 15-8-1991, (02:42 pm हलद्वानी)।

24. **अभिभावक :** श्री पी.सी. जायसवाल, 23/47/111 महादेवी भवन, किदवई नगर, अल्लापुर, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश-211006 Mob. : 0532-2500624, 09415702805, Email: abhishekjaiswal128@gamil.com
पुत्र : अन्शुल जायसवाल 10-04-1987, 5'10" Fair, Slim, Handsome, कॉनवेन्ट एजुकेटेड, B.Tech (Electronics Communication) राष्ट्रीयकृत बैंक में असिस्टेन्ट मैनेजर के पद पर कार्यरत, Civil Services के लिए प्रयासरत।

25. **अभिभावक: प्रदीप कुमार जायसवाल,** नियर सागर आर्ट, P.O. Kharmanchak, Bhagalpur (Bihar) Pin-812001 फोन-8709162766, 8252924240
Email=rimajaiswal64@gmail.com

पुत्री- रीमा जायसवाल : 30-3-1991, 5'1", रंग- साफ, M.Com, (ACCT) Diploma in Computer Application. Banking. संगीत व पाकशास्त्र की रूचि।

26. **अभिभावक :** श्री रमेश बाबू जायसवाल (Ex-Air India), गौत्र-सौगारा, सी-7/207, यमुना विहार, दिल्ली-110053 (M) 9818970975
पुत्री : शिल्पा जायसवाल 26-11-1995, (7.00 A.M. Delhi) 5'3", B.A. (History Hon.), Doing D.I.E.T. from Gwalior in 2nd year, सुंदर, आकर्षक, स्मार्ट।

27. **अभिभावक :** श्री राकेश जायसवाल (Own two renowned Hotels at Moga, Real Estate Business, and Rental Income), M : 9316273798, 9888043798
पुत्र : शुभम जायसवाल, B.A, LL.B, Preparing for Judicial, 5'8", 26-1-1991, (3.11PM, मोगा) गोरा, आकर्षक।

28. **अभिभावक :** श्री राजेश कुमार, 56/L-I, कृष्णापुरी, साउथ बोरिंग रोड, पटना-800001, M-9234757531, 8521342371.
पुत्रीः मुदिता जायसवाल 15-3-89 5'4", Fair, B.A, PDGM, Comp. Sc., सम्पन्न परिवार अपेक्षित वर, बिहार पटना के समीप और सर्विस या व्यवसाय हो।

29. **अभिभावक :** श्री सुरेन्द्र कुमार जायसवाल (Engineer), D-3, Rachna Vihar, Borkute Layout, Narendra Nagar, Nagpur-440015 (M) 09595483195, 09372718546,
Email : skjaiswal5@rediffmail.com
पुत्र : अनुराग जायसवाल, जन्म 28.2.1980, (5'9')] रंग-गेहुँआ, B.Com (Computer Application), Nagpur University, Working as Accountant with M/s GAMON India Ltd., Posted at Mumbai.

30. **अभिभावक :** श्री संतोष कुमार जायसवाल (प्रसिद्ध व्यवसायी) जायसवाल निवास, सोना बाबू का गैरेज, हाजीगंज, पटना सिटी पटना (बिहार) M : 8252518584, (0612)-2616236, Whatsapp : 9835298796
पुत्र : हितेष जायसवाल, 5'8", जन्म 19-9-1989 (पटना), LL.B., B.Com., NSSL लिमिटेड, नागपुर में Asstt. G.M. पैकेज 12 लाख रुपये; वर्तमान पता : 101F, Block 5, रिंग रोड त्रिमूर्ति नगर, नागपुर (महाराष्ट्र), सुंदर, अत्यंत स्मार्ट, आकर्षक व्यक्तित्व।

31. **अभिभावकः श्री सुरेशचंद जायसवाल,** प्रो. रामचंद्र शिव रेवडध अलवर, मकान नं. 710, आबकारी गोदाम के सामने, ईव्ज चौराहा, मेरठ शहर M. 9837426871, 9808114635
पुत्र- अनुज कुमार जा., (ऐडवोकेट) आयु 32 वर्ष, 5'8", B.Com., LL.B. मेरठ कोर्ट में वकालत कर रहे हैं।

32. **अभिभावक-** राजकुमार वालिया, (Rd. JE) H.No. 473 Dalima Vihar, Rajpura, Dist. Patiala (Pb.)-140401 M.-9888027110
पुत्र- अमित कुमार वालिया, 5'7", 12-8-1975 (05:45am S Nabha Pb) Australia Citizen, Fiar Taxi operator, 40 lac package

33. **अभि०–** डा. एस.डी. घनेटवाल (जायसवाल), B-1/8 गांधी पथ चित्रकूट योजना वैशाली नगर जयपुर (राज.) -302021, M 09413900991, 0141-4020789
पुत्र– सिद्धार्थ घनेटवाल (जायसवाल) (15-2-1992 जयपुर, राजस्थान), B.Tech. com. Science Software Engineer in HPE Bangalore 6', अच्छा पैकेज बी.टेक. तथा कार्यरत कन्या अपेक्षित।

34. **अभिभावक–**श्री सुरेश कुमार जायसवाल (सरकारी सेवा) वार्ड नं. 4, लक्ष्मीबाई मार्ग, खाटी कुंडी चौक, खिलचीपुर जिला-रायगढ़ (म.प्र.) फोन न.–7879161099, 9669401914
पुत्री–आस्था जायसवाल, जन्म–6-12-1992, 26 वर्ष (19.55 खिलचीपुर) 5'6', M.Tech (IT), T.C.S. इंदौर में सेवारत पैकेज 5.6 लाख

35. **अभिभावक–** प्रोफेसर डा० टी० एन० चौधरी (रिटायर्ड प्रोफेसर ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट) जवाहर लाल रोड (चैम्बर ऑफ कामर्स के पास) सरैयांगज, मुजफ्फरपुर (बिहार) 842001 मोबाइल नं०. 9835229883, (0621)-2246105
पुत्र– यशस्वी आलोक 38 वर्ष गोरा 5'7", MBA, MCA एवं M.Tech निदेशक कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट एंड टेकनोलाजी। आय 15 लाख प्रतिवर्ष गोरी टेक ग्रेजुएट कन्या अपेक्षित।
पुत्री– डा० रजनी जायसवाल BHMS, MBA गोरी 5'2" HR Manager in MNC नई दिल्ली, 36 वर्ष, पैकेज 10 लाख।
नातिन– मुदिता जायसवाल (पटना निवासी) अत्यंत गोरी सुन्दर 5'5" बी.ए. (इंगलिश) एम.बी.ए. की छात्रा पिता रि० शिक्षक श्री प्रमोद कुमार निवासी L1/56 श्रीकृष्णापुरी, पटना-8001

36. **अभिभावकः वीरेन्द्र कुमार जायसवाल (बिजनेसमैन),** Sumrit Mandal Campus, Jail Road, Tikamanhji, Bhagalpur M.: 943121533, 8969255995
पुत्र- आदित्य जायसवाल, 27-5-1988, (5.15 pm) 5'2", milky white, MBA, Asst. Manager, Canara Bank.

37. **अभिभावक–**श्रीमती विभा देवी (पत्नी स्व. ध्रुव नारायण प्रसाद गुप्ता) फोन न.–7488196750, 9560290732, 9911515253 (श्री सुनील, मामाजी)
पुत्री–राधा, जन्मतिथि–17-2-1989, (वेतिया पश्चिम चम्पारण) 5'4', fair, B.Sc. (Hons) in Zology.

38. **अभिभावक–**श्री किशन लाल राय, फोन न.–925056773, 9990252526 Redt. from DDA, Sultan puri, Delhi
पुत्र–संदीप राय, जन्मतिथि–12-7-1990, (दिल्ली) 5'8", B.A. दिल्ली सिविल डिफेंस में जाब, 25,000/- मासिक स्मार्ट, साफ रंग।

39. **अभिभावक :** Om Praksah Jaiswal, A cropolis flat no. 206, J-block Gothapatna, Odisha. Pincode-751003; Mob : 7750982025; E-mail : ajoytce@gmail.com, ssuniti1286@gmail.com
पुत्रीः Omrita Jaiswal : DOB : 26/10/1990, Time : 7:30 pm, place : Pallahara (Odisha) Height : 5'5", complexion : fair, Education : MSc agriculture (Agronomy) BSc agriculture, Professional details : Working in Odisha govt. in Horticulture department as a Gazetted rank officer posted near Bhubaneshwar.

40. **अभिभावक :** Chanderkanta 5, Jooly Complex Abhiyanta Nagar, Nashik (Maharastra)-422008, Mob : 9871262622, 8983574660
पुत्रः Gaurav, DOB : 29/4/1982, Time 4:16 PM Delhi,

Height : 5'8", Qualification : BCA, professtion ; Deals in finance and share market, Income : Rs 30,000/-pm, Mother Teacher, Elder sister settled in Canada.

41. **अभिभावक :** Rakesh Prasad Jaiswal () (Retired from Air Force, Maternal Grand Parent - Rajendra Nagar, Patna, Bihar, Mobile No. 9818780624, 9910174532; Email ID - rakesh@basawatech.com

पुत्री: Sakshi Jaiswal: DOB - 18th Sep 1993, Qualification - MA in English, B. Ed, CTET (Part I & II) Cleared. Advanced Diploma in Italian Language. schooling from Air Force Bal Bharati School, Lodhi Road, New Delhi. BA English (Hons) from Delhi University, B. Ed from IP University, Advanced Diploma in Italian Language from Daulat Ram College, DU, MA in English.

42. **Father:** Santosh Jaiswal (Dy. Director, ECS), (Home Town Gorakhpur, U.P.) D-2/10, Phase-I DRDO Township, CV Raman Nagar, Banglore, Karnataka Mob- 9958014369, 9873341668

Son: Rishabh Jaiswal, DOB 16-10-1997, B. Tech. from (BHU) Varanasi, Software Development Salary Package - 12 Lacs /p.a

43. **Father:** Ramesh Chandra Jaiswal, Rupani Sarees, Ambedkar Chowk Waidhan, Dist. Singrauli (MP) - 486886 Phone:- 9425389974

Daughter: Mansi Jaiswal, DOB 1-1-1994, 5ft 4-Inch, Complexion Fair, B. Tech. from IIT Allahabad, Working as Software Engineer in Microsoft. Salary Package - 18 Lacs /p.a

44. **अभिभावक–**श्री शैलेश राज मेवाड़ा, ACB, Office Street, आदिनाथ नगर, टैगोर नगर पाली, राजस्थान मो. न.– 9462998760

पुत्र–मुकेश मेवाडा, जन्मतिथि–28-4-1989, 5'8", सायं 4. 15 बजे, पावी, B.. LLB. साफ रंग।

45. **अभिभावक :** श्री के.के. जायसवाल व्यवसायी म.न. 2838, सै-15, सोनीपत, हरियाणा M : 9354824454

पुत्र : सिद्धार्थ जायसवाल, 10-9-1990 New Delhi, 6", 10 to 15 वार्षिक आय sale, purchases and aMC's of industries Genset, सुन्दर, पढ़ी लिखी, गृहकार्य में दक्ष कन्या चाहिए।

46. **अभिभावक:** श्री दिनेश कुमार जयसवाल Geology Dept. University of Allahabad, **Mob.** 9452695293, Address- 21 A/1 केसरिया रोड़ चकिया इलाहाबाद,

पूत्री: आयुशी जायसवाल, DOB-24-02-1997, 7:45AM इलाहाबाद, 5'1", B.Com, MBA GB bykgkckn Working as a Enquiry officer, cahspor Microcredit Ltd, Varanasi, Package 5 Lakh/P.A.

47. **अभिभावक:** श्री राधेश्याम जायसवाल, सोती चौराहा, बड़हलगंज, जिला गोरखपुर पिन 273402, **मो.** 9935572972, 8527394426

पुत्र: अतुल कुमार जायसवाल, रंग साफ़, 5'7", जन्म वर्ष 1990, B.Com, M.Com, CA Final, M P में फाइनेंस मैनेजर.

48. **अभिभावक:** Sunil Kumar Gupta-ASC/RPSF; 204/148, Allen Ganj Prayagraj (U.P.) 211002; **Mob.** 7376484177, 8887842502, 9450181498

पुत्र: Siddharth Gupta, B. Tech. C.S., Age: 26 years; Hight:5'4"; Working in NMC, Required Graduate Virgo. Working/ Nonworking.

49. **अभिभावक:** Awadhendra Kumar (Retired from GAIL India Ltd as Dy. Gen. Manager.) Mob. 8826700440, 7081907573 Email ID: anujjaisal.101455@gmail.com Address: A-40, GAIL apartment, sector-62, NOIDA Distt: Gautam Budh Nagar, Uttar Pradesh- 201309

पुत्र: Anuj Jaiswal 29 Years, DOB:15 July 1992, Time:07:30 AM, Place: Allahabad, Uttar Pradesh, Gotra: Kashyap, Height: 5'5" Complexion: Medium, Body Structure: Normal, Educations B. Tech Chemical Engineering. Professions Manager (E3) Brahmaputra cracker and polymer Ltd. Income: INR 1700000 / Year

50. **अभिभावक : श्री आनन्द कुमार जायसवाल, 28/A, 40 फीट रोड, पटेल नगर, मुगलसराय, चन्दौली, पिन 232101. मोबाइल न.–7376552127, 7007097405**

पुत्र : कौशल जायसवाल 5'10", 29 वर्ष, सुन्दर, स्मार्ट, आकर्षक, ग्रेजुएट, एम.बी.ए. नरसीमुंजी से पत्राचार माध्यम, पैकेज 6 रु. लाख

51. **अभिभावक–**सुरेश शाह Businessman (Proprietor at Shah Electronics, Lajpat Rai Market, Delhi)

मोबाइल न.–9818625007

पुत्र–सिद्धार्थ शाह

जन्मतिथि–04-April-1992, 5'7', Pursuing CFA (Chartered Fianancial Analyst) Graduation : B.Com(Hons.) from B.R. Ambedkar College,University of Delhi, Occupation : Propriator at Fans Manufacturing Business in Moti Nagar, Delhi (Also works in family owned business)

52. **अभिभावक :** C.P. Antal (रिटार्यड Escutive Engg. (PWD) President Esstt. New Delhi, B-3/728 एकता गार्डन, पटपड गंज, दिल्ली

मोबाइल न.–9760666029

भतीजे : लव कर्णवाल, कुश कर्णवाल जन्मतिथि 10/12/93 AM, 5'7", B.Com.+Diploma in Engineering, Working Service Engineering ICU Ventilater

53. **अभिभावक:** Anil Kumar Jaiswal- Electronic Engineer, 122A/11, Gautam Nagar, New Delhi-110049, Mob. 98106 01579;E-Mail:jkanil@hotmail.com

पुत्री: Mayuri Jaiswal, B. Tech. Bio-Technology, DOB. 13-06-1993, Time: 01:47 AM; Place: Bareilly; Height: 5' 6"; Deputy Manager in reputed company of Noida.

54. **अभिभावक :** श्री कृष्ण कुमार जायसवाल, (Retd Delhi Govt.) 1/11445, Subhash Park Shahadara Delhi-32 Ph : 9818655927, 9250134627

पुत्र : तुषार जायसवाल, 13-5-1992, Delhi, 5'10", सुन्दर स्मार्ट, MBA (IT) B.Tech Engineer Noida vegetarian family, 5 Lac P/A

55. **अभिभावक :** श्री सुरेश कुमार जायसवाल, (Business man) R-5/114 Raj Nagar Gzb.-201002 UP Ph : 9313546502, 9927752659
पुत्री : रिचा जायसवाल, 15-1-1998, (7:12 PM, दिल्ली) 5'4", BBA (GGSIPU Delhi) Advance Diploma in culinary Arts, APCA Bangalore.

56. **दिल्ली स्थित प्रसिद्ध NIFT (National Institute of Fashion Technology) से 4 वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम के माध्यम से Leather Fashion Technology में दक्षता प्राप्त 24 वर्षीय (13-2-1997) ग्रेज्युएट सुन्दर गौरवर्ण, सुशील सुयोग्य स्मार्ट कन्या के लिये प्रतिष्ठित परिवार के सुशिक्षित, सुस्थापित योग्य वर की आवश्यकता है। कृपया सम्पर्क करें: दिल्ली M-9013262811**

57. **अभिभावक:** Mr Ranjit Choudhary, Surya Nagar, Ramprastha Colony, Delhi, India Phone no: +91 9717405875
पुत्र: Rishabh Choudhary, Philadelphia/ New York DOB & Place of Birth: 04/11/1993: 21.45, Alwar, Rajasthan Height: 5.7" Education: MS in Business Analytics from Drexel University, Philadelphia, USA - 2021 B.Tech in Electronics & Electrical Engineering from Rajasthan Technical University, India - 2017.

58. **अभिभावक :** भोला नाथ जायसवाल (सरकारी नौकरी), F-83 कुंवर सिंह नगर, दिल्ली-41
मोबाइल न.–9968936545
पुत्री : सुनीता जायसवाल 5'2", 04 -01- 1995, सुन्दर, गोरा, 12वी पास / दिल्ली डिप्लोमा - नर्स (G N M) पश्चिम विहार प्राइवेट हॉस्पिटल मे कार्यरत ।

59. **Father-** Late Mr Devesh Kumar Jaiswal Mother's Meenu Jaiswal (Rtd School Principal) Contact - 9899289937
Son : Harsh Vardhan Jaiswal, DOB: 18th April 1994 Birth Time: 5:30 AM, Height: 5'8" Qualification- B.Tech from IIIT-Delhi Working in a MNC in Delhi, Package: 37 lacs

60. **Father-**Madan Lal Jaiswal S/O late Murli Chand Jaiswal from Lodha Mandi Peeth Bazar Jwalapur Haridwar (Uttrakhand) 249407 Ph. No.- 9012654987
Daughter-Khushboo Jaiswal, Date of birth-1 July 1993, Birth place-Jwalapur Hridwar, Height- 5'2'' Colour complextion- fair yellowish Qualification- graduate with B.A, knowledge of basic computer with tally Work experience- teaching and accounting work.

61. **Father-**Shri Jai Prakash Jaiswal, Retired, 163, Panchwati enclave, Sector 4A , Shatabdi Nagar, Delhi road, Meerut. Contact Number : 9759913561.
Son. Sanchit Jaiswal, Date of Birth : 22 April 1993 Time of Birth : 7:18 AM Place of Birth : Modinagar, Uttar Pradesh Rashi : Varishabha (Taurus) Complexion : Wheatish Height : 5 feet 9 inches Education : Master of Business Administration from Arunachal University. Bachelors of Hotel Management & Technology from AKTU, Lucknow. Job/Occupation : Brand Ambassador for Brown Forman at T-3 IGI Itnl Airport, New Delhi. Salary : 7-8 lacs.

62. **Father-**Mr. Alok Kumar Gupta, Retired (Indian Air Force) Delhi Contact : 9711289365, 9654122623
Son-Ragesh Jaiswal, D.O.B : Sep,1995, Height : 6'0" Graduation : BTech from IP University (2015-2019) Designation : Currently working as Senior Business Analyst in Polestar Solution, Noida (It's been 3 Years) Salary : 30 L.P.A.

63. **Father-**Sh. Kishan Lal Rai, Retired From (DDA), Sultan Puri New Delhi, Contact No : 9990252526, 7015301485, 7027064031
Son-Sandeep Rai (Sonu) Dob :12/07/1990 (12:12PM) Birth Place : Delhi Height :5'8 Manglik :Yes Education : B.A (Delhi University) Delhi Transport Corporation (Govt) Salary : 30000/-

64. **Father-**Piyush Singh Jaiswal, Service, now started his own business Indirapuram, Delhi/NCR
Son-Kshitij Singh, Dob : 08/11/1994(non-maglik) Time: 5:54 am (Rourkela) Height: 5°10" Phone: 8376915924 Qualification- B.E. (IIT Gandhinagar- Electrical) MBA (IIM Lucknow) Job: Searce, Pune, 27 Lakhs(present), RELIANCE JIO (R&D), MUMBAI (previous)

65. **Father-**Dr Avneesh Jaiswal, MD in Pediatric private practitioner, 759 Civil Lines, Opposite distt Judge, Sitapur Phone no: 9335156018(Mama) 9236036557(Mother)
Son-Dr. Satvik Jaiswal. Age:29years Height: 6 feet Weight: 80 kg Education: MBBS, MD in Pediatrics English, Hindi Birthdate: September 21,1993 non medico will be also considered.

66. **Fathers:** Dr Ram kumar Jaiswal MBBS MS (Optha) HOD BRD Medical college Gorakhpur. Mobile no 9452450502(mother)
Daughter: Dr Nikita jaiswal MBBS Currently Preparing For Neet Pg And Non PG JR 28years medium built and fair. Preferably looking for doctor only (postgraduate) pursuing or completed.
Son: Dr Nikhar jaiswal MBBS preparing for NEET PG 29 years medium built and fair. Mobile:- 9452450502 (mother).
Preference Medico girl pursuing or completed post graduation

67. **Fathers:** Anil Jaiswal (BusinessMan), Buxar, Bihar
Daughter: Ekta Jaiswal, D.O.B - 21/01/1999, Height:- 5.2, Complexion:- Fair

Education: Post Graduate (MBA), Working as HR in MNC (Birlasoft Ltd.) M:- 7761962755

68. Fathers: Ram Swaroop Prasad Jaiswal, Obra, Aurangabad, Bihar
Son: Krishna Jaiswal, D.O.B-22/05/1993, Height:- 5.9, Complexion Fair, Education: Graduate History Hons. from Delhi University, Persuing M.C.A from (IGNOU) Occupation: Family Business, Brother :- Ajay Jaiswal (Dwarka, Delhi) Mobile:- 9990372173, 9798498982

69. Fathers: Virender Chaudhary Business Man in Trading of electrical and electronics industry (Manufacturing /Import/Export) Own Company: - M/s Chaudhary enterprises, Delhi
Son: Shravan Kumar Chaudhary, D.O.B - 19.08.1991, Gotar- Kashyap Height:- 5.8
Education: B.Tech. Electrical and Electronics from Guru gobind singh university, Delhi (Regular) Occupation: Business Man in Trading of electrical and electronics industry (Manufacturing /Import/Export) Own Company: M/s Daksh Enterprises, Delhi
Mobile:- 9811243318/ 9899955473

70. Fathers: Arun Jaiswal, Post AGM in Yamaha moter cycle Live in Faridabad, Haryana, Mobile No 9971240907, 9999450614
Son: Kshitij Jaiswal, Date of birth 9-3-1995 3:10 P.M. Height 6' feet Complexion. Wheatish B. Tech in Computer Science, Jaypee institute of Technology Noida, Job Nice Technology pune, Package 25 lac +

71. Mama : Sunil Kumar Jaiswal B-749, New Ashok Nagar, Gali No. 22 East Delhi-96 M. 9911515253
Daughter: RADHA SONI, Height: 5' 3" Complexion: Fair Birth Details: 17 February 1989 Bettiah (West Champaran, Bihar) B.Sc. (Honors) in Zoology from Delhi University.

तलाक शुदा (Divorces'sr), विधवा (Widow)

1. **अभिभावक-** श्री आनन्द स्वरूप जायसवाल, 10/26, सेक्टर-3, राजेन्द्र नगर साहिबाबाद 201005 (गाजियाबाद) उ.प्र., M.- 9871262622
पुत्र- उत्तम कुमार, 35 वर्ष, **तलाकशुदा,** कोई संतान नहीं है, जन्म 23-07-1977 (मथुरा, 10.10 P.M)

2. **अभिभावक :** श्री श्यामसुंदर जायसवाल, ठाकुर विलेज, कांदिवली (East) Ph 400101
पुत्र : Divorcee 38 वर्ष, 5'8" सुन्दर, स्लिम, स्मार्ट, आकर्षक, प्रतिभाशाली, कांवेंट प्रशिक्षित, B.Com, LL.B. व्यवसाय में सुस्थापित, **विवाह के बहुत थोड़े समय पश्चात ठोस कारणों से अलगाव हो गया।** सुन्दर, शिक्षित अच्छे परिवार की कन्या अपेक्षित। विवरण प्रेषित करें E-mail : vivah6@hotmail.com

3. **अभिभावक :** स्व0 रमेश सिंह वर्मा, H.No. 12, आनंद गार्डन, राजेन्द्र पार्क पुलिस स्टेशन के पास, रेलवे स्टेशन के पास गुड़गांव-122001, M : 9136760393
पुत्र : राकेश सिंह **(तलाकशुदा)**, 34 वर्ष, मैट्रिक पास, 5'5", स्वस्थ, गेहुआ रंग, अपना मकान, अपनी किराने की दुकान।

4. **अभिभावक :** श्री अजय कुमार जायसवाल H.No. 485 मेसर्स आयुष फ्लोर मिल्स पोस्ट घोड़ासहन जिला पूर्वी चम्पारण (बिहार)-845303
पुत्री : अर्पिता जायसवाल (तलाकशुदा), 32, वर्ष 5'5", रंग गोरा सुंदर सुशील ग्रेजुएट मानसिक तनाव के कारण संबंध विच्छेद सुंदर शिक्षित परिवार, संतान रहित वर अपेक्षित।
Email: Subu4u87@gmail.com, Mob. No. 9560356897

5. **अभिभावक :** श्री रामचन्द्र चौधरी, (Acctt, Hotel Midway), A-1/231, सेक्टर-4, रोहिणी, दिल्ली-110085, M-9211098672, Email : dchoudhary90@gmail.com
पुत्री : ज्योति चौधरी **(तलाकशुदा)**, PGDFT, M.Com (Du), Adriel High School, Delhi में शिक्षिका, जन्म 12-1-1988, 5'4" वेतन 15000/- प्रतिमाह, अन्य शिक्षेतर गतिविधियों में सक्रिय भाग।

6. **अभिभावक: श्रीमती मीना जायसवाल,** (W/o स्व. राजेन्द्र जायसवाल) संस्कृति अपार्टमेंट Upper Ground Floor, 4, Plot No. 225, Niti Khand-I, Indirapuram संस्कृति रेंजीडेंसी गाजियाबाद-201010 (यू.पी.) फोन-8448219160, 9415132661
पुत्री- सुमन (तलाकशुदा) 27-08-1988 (वाराणसी, 3 AM), 29 वर्ष, 5'3", साफ रंग, एम.ए. (इग्लिश)।

7. **अभिभावक:** Sh. Y.P. Ahluwalia, 109 Nimri Colony Ashok Vihar Phase-IV Delhi-110052, M : 9868704809
पुत्र- Aman Walia, (7th Ocober 1974,) Govt Service in M.C.D. as Astt Sanitary Inspector (Pure Vegitarian) **तलाकशुदा,** Height 5'8", fair, salary 50,000 + स्मार्ट।

8. **अभिभावक: श्रीमती सम्पूरन जायसवाल,** (W/o स्व. सुरेश कुमार जायसवाल) G-194-195, जहांगीर पुरी, दिल्ली-33 फोन-9873809288, 9684750486
पुत्री- अंजू जा. (तलाकशुदा कोई बच्चा नहीं) 28-07-1979 (दिल्ली, 7 AM), 5'3", M.B.A., गेहूंआ रंग, प्राइवेट सर्विस 15,000/- मासिक।

9. **अभिभावक: रिटायर्ड इंजीनियर वेस्टर्न रेलवे, Pelican-15, Aakriti Eco city, Bhopal-462039 7666933311; sjaiswal69@yahoo.co.in**
सुनील जायसवाल (तलाकशुदा), 23-7-1969, 6'1", complexion very fair, MBA (Finance) from Institute for Technology and Management, Mumbai, BE(CS) from Nagpur University. Annual Income 25 lacs to Rs. 30 lacks per annum.

10. **अभिभावक: डा. शीतल पी. जायसवाल,** (Chief Excutive & President Mehta Group of Campanies, 2/92, Liberty Grandionagar, Ghatkopar (E) Mumbai-400077, M.- 7758970403, 9869461650, Email: krs3ram@gmail.com
पुत्र- संदीप जायसवाल (तलाकशुदा) 2-08-1972 (वाराणसी, यूपी, 5'11", B.E. (Production), MS(USA) Fair & Handsome, AS (Applied Science, USA) presently working at US Multinational in Mumbai, package 48 Lac p/a.

जायसवाल जागृति के संस्थापक

श्रद्धेय स्वर्गीय श्री पन्ना लाल जायसवाल, श्रद्धेय स्वर्गीय श्री बाल्मिकी चौधरी, श्रद्धेय स्वर्गीय श्री राजा राम जायसवाल

जायसवाल जागृति के पदाधिकारी (2021-2023)

डॉ अशोक चौधरी (अध्यक्ष): 9810056923
श्री बृजमोहन जायसवाल (महासचिव) : 9868241044
श्री माखन चौधरी (वित्त व्यवस्था) : 9911213033
श्री पंकज जायसवाल (कोषाध्यक्ष) : 9818426123
श्री अशोक कुमार जायसवाल : 9818581776
श्री नर्बदेश्वर प्रसाद जायसवाल 9582793033

जायसवाल जागृति संस्था नीति निर्धारण/प्रबन्ध समिति

श्री कृष्णदास चौधरी : 9868801751
श्री कैलाशनाथ गुप्त : 8882019312

व्यवस्था एवं सहयोग

श्री बृजमोहन जायसवाल (प्रत्रिका प्रेषण प्रभारी) 9868241044
श्री हरिशंकर जायसवाल (छायाकार) : 9811131914
श्री शीतल प्रसाद जायसवाल (वैवाहिकी व कार्यक्रम व्यवस्था): 7827621475
श्री अजय जायसवाल (Website + संयोजक युवा मंच):
9990372173, 9818389050

महत्त्वपूर्ण सूचना (1)
'जायसवाल जागृति' सदस्यता-शुल्क

सदस्यता शुल्क की दरें इस प्रकार हैं:

संरक्षक सदस्य : **11,000/-** रु. (परिचय रंगीन फोटो सहित)
अधिष्ठाता सदस्य : **5,100/-** रु. (विस्तृत परिचय फोटो सहित)
सम्मानित सदस्य : **2,500/-**रु. (संक्षिप्त परिचय फोटो सहित)
आजीवन सदस्य : **1500/-** रु. (7 वर्ष के लिए)

विज्ञापन-दरें

आवरण (कवर) चौथा पृष्ठ	: **5,100/-** रु.
आवरण (कवर) द्वितीय पृष्ठ (संरक्षक)	: **11,000/-** रु.
आवरण (कवर) तृतीय पृष्ठ	: **3,000/-** रु.
विशेष रंगीन पृष्ठ	: **2,500/-** रु.
साधारण पृष्ठ	: **1,500/-** रु.
साधारण आधा पृष्ठ	: **750/-** रु.
साधारण चौथाई पृष्ठ	: **400/-** रु.

ध्यानाकर्षण : जिन माननीय सदस्यों की वार्षिक सदस्यता पूर्णतः समाप्त हो गई है, सदस्यगण कृपया **1500/-** रु. का शुल्क पत्र प्रेषित करके आजीवन सदस्य बन जाएं, अन्यथा उनकी सदस्यता स्वयमेव समाप्त हो गई है। नए पोस्टल नियमों के अनुसार पते पर पिनकोड लिखना अनिवार्य कर दिया गया हैं। ध्यान रखें। जिन सदस्यों को हमारे प्रामाणिक प्रयासों के बावजूद डाक से पत्रिका नहीं मिल पाती है, वे कृपया एक वर्ष का 200 रुपये का अग्रिम कोरियर-शुल्क प्रेषित करके कोरियर से पत्रिका मंगा सकते है। राशि हमारे कोषाध्यक्ष के निम्नलिखित पते पर प्रेषित की जा सकती है।

महत्वपूर्ण सूचना (2)
जायसवाल जागृति वेबसाइट

Jaiswal Jagriti Has Launched It's Own Website

कम्प्यूटर क्रान्ति एवं सूचना-विस्फोट **Computer Revolution & Information Explosion** के इस युग के साथ कदम से कदम मिलाकर चलना किसी भी जीवन्त संस्था के लिए अनिवार्य हो गया है। फलतः स्वजाति बंधुओं के लाभार्थ **www.jaiswaljagriti.com** नामक वेबसाइट का शुभारंभ किया गया है। हमारा **Email; jaiswaljagrity@gmail.com** है। आप इससे सम्बन्धित किसी भी जानकारी के लिए हमारे युवा मंच के सचिव, तथा वेबसाइट प्रबंधक श्री अजय कुमार जायसवाल *(Sr. Software Engineer)* से उनके **Email:ajayjaiswal.india@gmail.com** तथा मो. न. 9990372173 पर भी सम्पर्क कर सकते हैं।

बन्धुवर, समाज के हर तबके के लोगों को अपने लड़के-लड़कियों के लिए योग्य सम्बन्धों के चयन में कुछ न कुछ कठिनाइयाँ तो अवश्य पेश आती हैं, चाहे उसका सामाजिक अथवा आर्थिक स्तर कुछ भी हो। अतः अब आपकी सुविधा के लिए आप हमारे वेबसाइट में आपके विवाह योग्य लड़के-लड़कियों का फोटो सहित विवरण प्रकाशित करा सकते हैं। इसके लिए फिलहाल मात्र 500 रु (पांच सौ रुपये) का शुल्क रखा गया है। आप शुल्क की यह राशि निम्नलिखित दो में से किसी भी एक पते पर डिमांड ड्राफट / चेक या मनीआर्डर द्वारा प्रेषित कर सकते है।

आप अपनी राशि हमारे **AXIS Bank** के **A/C no. 015010100247337, IFSC-UTIB-0000015** में भी सीधे जमा करा सकते हैं। किंतु इसकी रसीद अथवा इसकी फोटोप्रति हमारे पास निम्नलिखित में से किसी एक पते पर अवश्य भेंजें, अन्यथा यह पता लगाना मुश्किल होगा कि यह राशि किसने प्रेषित की है।

टाइपसेटिंग : शुभम् ग्राफिक्स : 9811021617 प्रभास गुप्ता
Email : shubhamprabhas@gmail.com

सम्पादकीय पत्र व्यवहार
नर्बदेश्वर प्रसाद जायसवाल
विश्वनाथ भवन, बी-36, सैक्टर 23, नौएडा-201301
मोबाइल नं. 9582793033

कोषाध्यक्ष, जायसवाल जागृति
पंकज जायसवाल
17-डी, एम आई जी, डी.डी.ए. फ्लैटस्,
गुलाबी बाग, नई दिल्ली-110007
दूरभाष: 011-41687487 मोबाइल : 9818426123